

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182354

UNIVERSAL
LIBRARY

॥ भूमिका ॥



कोई इसको लावनी कहते हैं और कोई मरहटी वा खयाल कहते हैं चमल में इसका बनाना और गाना दक्षिण से उत्पन्न हुआ है और इसके दो कर्त्ता हुये एकका नाम तुकन गिर और दूसरे का नाम शाहअली था उन्होंने ने दो मत खड़े किये तुरा और कलंगी तुकनगिर तुरे को बड़ा कहते थे और शाहअली कलंगी को बड़ा रखते थे आपस में विवाद किया करते थे और अपना अपना पन्थ उन्होंने ने चलाया यहां तक कि आज ताई उनके मत वाले बहुत से लोग इस देश में भी बनाते गाते हैं उनमें पढे लिखे भी हैं परन्तु बड़ा अफमोस है कि गाली ही गुफ्ता बकते हैं इस कदर से कि आपस में लड़भी पड़ते हैं इसी सबब से इसको कोई भला आदमी पसन्द नहीं करता है और मैं भी इसी विषय में बाल अवस्था से मशगूल था जब ईश्वर ने मेरे ऊपर अपनी कृपा करी तो इस पाप से मुझको छुड़ाया और फकीर बनाया अपना जलबा मुझको दिखलाया उसको देखते ही वह मस्ती का आलम हुआ कि आली आली मजूमन नज़र आने लगे तो मैंने अपने दिल में यह विचारा कि तू इसी लावनी से भगवत आराधना कर तो उर्दू बोली में मैंने इश्कमारफन मतलबतौहीद और हिन्दी में उपासना ब्रह्मज्ञान को कहा इस बास्ते कि जो कोई इसके असल मतालिब को पायेगा वह जीते

ही जी उस में मिल जायगा और वही ईश्वर मेरे दिल में बैठके ये सब बात बनाता है मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं परन्तु जो कोई इसके मजमून को सुनते हैं वह तश्चस्ब समझते हैं और पसन्द करते हैं इसी सबब से मैंने थोड़ीसी लावनी छपवाई है कि जिसमें सब अमीर व गरीब पढ़ें और इसको समझें और जो कोई इसको अपनी तबीअत लगा के पढ़ेंगे तो उनका भला होगा ॥

❀ दो पदी ❀

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है ।

जो करता जग के कार वही करता है ॥

श्रीमत्काशीगिरि बनारसी परमहंस आशकेहकानी ।





॥ श्रीगणेशायनमः ॥

❧ लावनी ❧

हृदय में है हिंगलाज कर काज लाज रखने वाली ।
 नयना देवी नयन में बसें हँसे देदेताली ॥ शीशमें सीता सती
 बिराजें सावित्री सङ्कटारानी । मस्तक में रहें आय श्री म-
 हाविद्या ओ महारानी ॥ शृङ्गुटी में कर बास भैरवी भयमानें
 सब अभिमानी । ब्रह्म में अपने विराजें विन्ध्याचल और ब्र-
 ह्मानी ॥ बसें नासिका में नवदुर्गे नगरकोट लाटों वाली ।
 नयनादेवी नयन में बसें हँसे देदेताली ॥ १ ॥ मुखमें बसें मंगला
 देवी सब कारज करदे मंगल । होठ में हेमावती रहें क्षण में
 काटिदेवें कलिमल ॥ जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती
 सब से निर्मल । गले में गोरी और गायत्री का जपनाम
 अटल ॥ कण्ठ में बसें कालिका देवी कंकाली और महाका-
 ली । नयना देवी नयन में बसें हँसे देदेताली ॥ २ ॥ कानमें क-
 मला और कृत्यायिनी किर्यारूप अद्भुत माया । दोनों
 भुजा में बसें भवानी बड़ा मुख दिखलाया ॥ उर में बसें उमा
 उत्रानी उग्रतेज उनका छाया । कहाँ लों वणों लखी नहीं
 जाती है अपनी काया ॥ बुद्धि में बसें बिधाता माताबड़ी

बुद्धि देने वाली । नयना देवी नयन में बसें हँसे देदे
ताली ॥ ३ ॥ रोम रोम में रमी रम्भा और नाभि कमल में
निरवानी । कहें देवीसिंह इसे कोई पहिचाने चातुरज्ञानी ॥
श्वास में शक्ती बोले ध्यानघरेपूरे ध्यानी । बनारसीयह कहें भ-
गवतीकी भक्ती मनमानी ॥ येवा और मिथान द्वारफूलोंकीनित
चढतीडाली । नयना देवी नयन में बसें हँसे देदे ताली ॥ ५ ॥

सर्व धर्म से परे वेद में लिखाहै सुन सन्यासी का धर्म ।
क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥
ग्रहणकरें तो बनै नहीं और त्याग करें तो क्या त्यागें ।
सोवें तो निद्रा नहिं आवै जागें तो सोवत जागें ॥ युद्ध करै
तो धर्म घटे और पाप लगे रण से भागें । त्रैलोक्यके दाताहैं
फिर क्यों भिक्षा घरघर मांगें ॥ उनकी गती बोही जाने
नहीं मिलै किसीको जिनका धर्म । क्या कोई जाने पण्डित
के सन्यासी का कौनहै कर्म ॥ १ ॥ मौन रहैं पर बोलें सबसे
बरततहैं और सब खावें । आसन दृढ हैं बाट चलै जित
चाहैं वह उतही जावें ॥ पढ़े नहीं एको अक्षर और वेद शास्त्र
निशि दिन गावें । आंख भुंद देखें सबको पर आप दृष्टि में
नहिं आवैं ॥ वह क्या देखेंगे उनको जिनकी दृष्टि में लगा
है धर्म । क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है
कर्म ॥ २ ॥ योग विषे वह भोग करै और भोग विषे साथै
वह योग । शोक विषे वह दुर्ष करै और रोग विषे रहैं सदानि-
रोग ॥ वियोग में संयोग करै संयोग विषे रहैं बिना वि-
योग । लोक विषे परलोक सुधारै इसको समझे ज्ञानी लोग ॥
जिनकी माया से सृष्टी में व्याप रहा है सबको भर्म ।

क्या कोई जाने पण्डितके सन्यासीका कौन है कर्म ॥१॥ देहाविषे वह रहै विदेही माया में रह निर्माया । देवीसिंह ये कहैकि उन का पार किसीने नहिं पाया ॥ चारवेद षट् शास्त्र अठारों पुराण ने योंही गाया । सब धर्मसे बड़ा धर्म सन्यास मेरे मनमें भाया ॥ बनारसी तानों गुण से हे रहित न समझ धर्म अधर्म ॥ क्या कोई जाने पाण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥ ४ ॥

मन मुरशद से मिलके अब तू चितको अपने चेला कर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पदमें खेला कर ॥ देख तो अपने आपकोतू है कौन कहाँसे आया है । किसने पैदा किया और किसने तुझे बनाया है ॥ जो तू कहै हूं बाप से पैदा मानै मुझको जाया है । यह तो गलत है तूरे तू आपी में ताप समाया है ॥ दुविधा को कर अलग और सब दिल का दूर झेलाकर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पदमें खेला कर ॥ १ ॥ जबतकहै ज्ञान तभीतक कुटुम्ब कबीला भाई है । ज्ञान हुआ तो आत्मा आप में आप समाई है ॥ कोई बना ब्राह्मण क्षत्री कोई वैश्य शूद्र कहनाई है । हम ने देखा तो सब के बीचमें कुँवर कहाई है ॥ समदर्शी हो विवर पड़े जो दुख सुख तन पर झेलाकर । दुई दूर कर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥ भात उसको पहिचान तेरे इस शरीर में बसता है जो । किस गफलतमें पड़ा ओ कौन नींद भर रहा है सो ॥ खोलके अपनी आंख देख वह एकहै उसको समुझ न दो । कौन है तेरा और तू किसका है इसे तुम समझो तो ॥ आत्ममें परमात्मको अब देख के दर्शन मेला कर । दुई दूर कर हमेशा निर्भय पदमें खेलाकर ॥ ३ ॥ एक ब्रह्म और दि-

तीयोनास्ति यही वेदनकी बानी है। इसको समझें वही नरजो पुरा विज्ञानी है ॥ जैसे जलकी तरंग फिर जलही के बीच समानी हैं। कहें देवीसिंह बात यह बनारसी ने जानी है ॥ छोड़ तुरें कलंगी का गाना निर्गुण के डंड पेलाकर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥ ४ ॥

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे। गुणी जनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे ॥ ज्ञानगुलाल के बादल छाये प्रेमरंगनित बँपावें। बड़ाबादसों लडें और भर्मधूल कोउड़ावें ॥ धीरज का डफबाजेसंग में नाम नारायणका गावें। क्रोध कुम्कुमा मार के काम शत्रुको टट्टावें ॥ दयाकी दौलत देते सबको साथ में सच्ची समाज रहे। गुणी जनों के अगाड़ी अनहदबाजे बाजरहे ॥ १ ॥ अमर अबीरको साधुलगाये मुक्तरूप पहिने माला। भस्मके भूषण झलकते तनपर मन में उजियाला ॥ मंत्र मिटाई संत पावते बहुत खूब सब से आला। अमृतरसको पियें और खोलदेई घट का ताला। नेह नाचको देखें हरिजन सत्य साजको साज रहे ॥ गुणी जनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे ॥ २ ॥ लौकी लकड़ी लुटले आप आतम की अगनीकरते। हरहर होली जगावें वही नहीं जनमें मरते ॥ विज्ञान की गाली देते हैं सन्तकिसीसे नहीं डरते। कष्टके कपड़े पहिनके काया को निर्मल करते ॥ शील सितार सुनावें साधु नाम नक्कारे गाजरहे। गुणीजनोंके अगाड़ी अनहदबाजे बाजरहे ॥ ३ ॥ रामनाम का शोर चलावें परस्वारथकी पिचकारी जिसको मारें उसी के मुख पर लगती है प्यारी ॥ भिलें गले गोविन्द से चल के जाप जपें गिरिवरधारी। भावभोग को

करै हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥ शुद्ध सिंहासनपर चढ़वैठे
तीनलोक में राजरहे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे
बाजरहे ॥ ४ ॥ तीरथकी फेरी फिरतेहैं सुमत समग्री लेजाते ।
पूजैहोली गुणीजन ब्रह्मज्ञान में मदमाते । देवीसिंह यों कहैं
कि ऐसी होली जो कोई गाते । भवसागर के पारहो परम
धाम पदवी पाते । बनारसी में हरिको पाया किसीके नहिं
मुहताजरहे। गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे ॥ ५ ॥

इस तनमें आत्माकृष्ण हैं और गोपी ग्वालो का दल ।
सुनो कानदे बनाहै तन में मेरे रहसमंडल ॥ विश्वकर्मा
ने आज्ञाफके शीश महल तयार किया । अनहद बाजों
का उसमें संपूरण विस्तार किया ॥ चारों खम्भे लगाब उस
में ऐसा सुन्दर कार किया ॥ खुशी हुये हम तो अपने रहस
का वहीं विचार किया ॥ सबको लाथले आया मैं दिखलाया
उन्हें भवनउज्ज्वल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस
मंडल ॥ १ ॥ मन ऊधवजी मित्र हमारे सदासे हैं आज्ञा कारी ।
बुद्धि राधिका सो मेरे प्राणोंको है अति प्यारी । नेत्र करण
मुख दन्त कण्ठ सब सखा हमारे हितकारी । लगन है ल
लित्ता बहुत सुन्दर शोभाहै सबसे न्यारी ॥ बलहै सो बल
भद्रहमारे भ्राता जिनका अट्टबल । सुनो कानदे बनाहै
तनमें मेरे रहसमंडल ॥ २ ॥ हज्जार इक्कीस ब्रह्मै श्वासा सो
सबसखियां संग आई । वोतो समझो हमीये कृष्ण हमारे
है साई । गलसेमेरे लपट लपट क्याक्याही तान सुन्दर
गाई । बजाईबंशी जो मैंने अनहद तोसब विलमाई ॥ ॥ प्रेम
में मगन भई ब्रजबनिता कामने किया बहुत बेकल । सुनों

कानदे बनाहै मेरे तनमें रहसमंडल ॥ ३ ॥ नौनारी की पातिव्रता
 सोभी तब आई पासमेरे । रोम रोमकी सखासमझो या स-
 मझो दासमेरे ॥ मेरी लीला देखदेख नहीं होते मित्र उदास
 मेरे । वर्णन करते हैं गुणको जगतमें वेदव्यास मेरे ॥ भैतो हूं
 आत्माकृष्ण यह शरीर भेराहै मंडल । सुनो कानदे बनाहै
 तनमें मेरे रहस मंडल ॥ ४ ॥ आये वहां गोपिका बनके ज्ञानरू-
 पधर गोपेश्वर । हमने उनको लखाये गोपी नहींहैं शिवशं-
 कर । पूजन करके पास बिठाया रहस दिखाया अतिसुन्दर ।
 कहाँलग बरणनकरूं इस काया में है चराचर । बनारसी
 साविदानन्द चैतन्यरूप निर्गुणनिर्मल । सुनो कानदे बना
 है तनमें मेरे रहस मंडल ॥ ५ ॥

पूरेजौहरी संत परखते मनमेंमाणि और लालरतन । हित
 काहीरा खरीदें जिसका नहीं कुछमोल वजन । ब्रह्मबजार ल.
 गाया घटमें कृपाकमरबांधी कसके । सांचे जौहरी साधुसंत
 गुरु सबजा सांचे हँस हँसके ॥ ज्ञान की गठरी लगी पेट मंज
 रानहीं नीचे खसके । करते मौदा सदा वो दया दुकानों पर
 बसके ॥ लगनकी लडियां लटकें जिसमें सुक्तरूप मोती लट
 कन् । हितकाहीरा खरीदें जिसका कुछ नहीं मोल वजन ॥ १ ॥
 चतुराईकीचुन्नी ले आपसमें सबको दिखलाते। मेलका मूंगा
 खरीदें हर भक्तोंसे मिलजाते ॥ दिनपर दिनहो मोल सवाया
 कभी नहीं घाटा खाते । सांचे जौहरीके आगे सभीजबाहिर
 शर्माते ॥ तप करने का लिया तामडा पास में रक्खाकरके
 यतन् । हितकाहीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन
 ॥ २ ॥ यश करने का जामा पहना घर से निकल बाहर

आये । बड़ीदरपर जायकर अकीक हिकमतका लाये । पुण्य पापसे न्यारेहोकर लाखों पारस बनाये । फतेनाम के फिराजे हरभक्तों के मनभाये । मनका मनका फेरें मनमें श्याम श्याम करके सुमिरन् । हितका हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन ॥ ३ ॥ हमने अब इस दिल को जौहर किया है यह सच्चादाना । वही जौहरी कि जिसने अपने दिलको पहिचाना । इसके बीचमें सबकी खानि है मुल्क मुल्कका खजाना॥ कहेदेवीसिंहवोही मालिक जिसका कुलजम्माना॥ बनारसीने दिल परखा कई लाख वज्रके लगायेचन् । हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुल मोल वजन् ॥ ४ ॥

योगी होय जो सकल में बैठे देखै दशवें द्वारको वो । कारज करै जगतके सब और लखै अलख कर्त्तारको वो । नावै गावै गाल बजावै ध्यान आत्मा में धरके । सबमें रहै और सब में न्यारा पूरणहोय योग करके । निर्भय होके बिचरे निशादिन कबहु नहीं चले डरके । अपने आपमें आपको देखा धन्यभाग है वो नरक । जब वह काया त्यागे तब फेर पहुँचे परले पारको वो । कारज करे जगतके सब और लखे अलख कर्त्तार को वो ॥ १ ॥ प्रसन्न चित ओ बुद्धी निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने । द्वैत भातसे अलग रहे अद्वैतज्ञान की बखाने । समदर्शी और सुद्धसमाधा अपने को आपीमाने । जीव ब्रह्ममें एक भावकर अपने मनमें पहिचाने । भूमीभार उतारन कारन धरे आप अवतार को वो । कारजकरे जगतके सब और लखे अलख कर्त्तार को वो॥२॥ त्रैगुणकोजीते औ चौथे पदस्थपर अपनी करेमती । सं

पूर्णसृष्टिको भोगजो करै बोहीहो बालयती । चराचर में अपने आपको देखे सबमे उसकी होयगती । आपी पिता और आपी पुत्रहै आपासी आपपती । चाहैकरे वह प्रलय और चाहेरचे सकल संसारको वह । कारज करै जगत् के सब और लखे अलख कर्तार को वह ॥३॥ पुण्य पापसे अलग रहे दुख सुखका नहीं बिचार करै ॥ ब्रह्मज्ञानकी चर्चा अपने मुखबो सेरंवारकरै । आत्मदर्शीहोय तो अपने सब कुलका उद्धार करै । बनारसी ये कह वह जो चाहै सो आप कर्तार करै । चाहैकरे वह नरपैदा और चाहे बनाये नारिको वह । कारजकरै जगत् मे सब और लखे अलख कर्तारको वह ॥४॥

कालबलीसे लडके कुश्ती जीते जगतमें साधूसन्त । उनका दांवका किसीने आज तलक नहिंपाया अन्त । बांध लँगोटा बने जितेन्द्रिय कभी न देखे परनारी । गमके भोजन करे जब चढ़ैवदनपर तैयारी । कामक्रोध मद लोभ मोह इन इन पांचोंकी कुश्ती भारी । कालके ऊपर जायके बांधी अपनी असवारी । मनको किया मुराद पेंच बतलाये उसके तई अनन्त । उनमें दांवका किसीने आजतलक नहिंपाया अन्त ॥ १ ॥ रामनामकी कसरतसे जबहुआ वदनमें जोर बड़ा । उदय अस्ततक हुआ उनकी कुश्ती का जोर बड़ा ॥ पहल वान है वही जगतमें जोकोइहै गमखार बड़ा । उसके सानी कोई नहीं हुआ कहीं शहजोर बड़ा । लोग लडें दुनियां में कुश्ती कालको जीतें सन्त तुरन्त । उनके दांवका किसी ने आज तलक नहिंपाया अन्त ॥ २ ॥ जो कोई उनसे दस्त मिलावै उसके हाथमें यश होजाय । कभी पछाडें जगत में मौतभी उसके बश होजाय । काल फांससे बचे वह

जिसकी रसनामें हरिरस होजाय । कपट की कैवी तजै तो
पहलवान चौरसहोजाय । वह नहिं गिरे किसीके गिराये जो
सद्गुरुकी पदपङ्क्त । उनके दांवका किसीने आज तलक
नहिं पाया अन्त । ॥ हातकोडा गल लपेट कुश्ती और पैव सब
झूठे खेल । इन्हें छोड़के तू भज हरनाम और दंड निर्गुण
कपेल । शीलसत्यका बांधसीगडा जो गुजरे वह दिल पर
खेल ॥ कहें देवीसिंह अरे नरमूढ़ तू करसद्गुरु से मेल ॥ बनारसी
सन्तोंका सेवक कहे बातजो होवै तन्त । उनके दांवका
किसीने आजतलक नहिं पाया अन्त ॥ ४ ॥

हिरदय में हरिहर हीरामन परखें जौहरी संतरतना
प्रीतिका पारस पासमें अलख लाल का करें भजन । बोध के
वस्तर पहनें तनपर नयेनये सजकें भूषन । यशका जामा
पहरके कुंजकुंजमें फिरें भगन् । पुण्यपोटकी फेंट लगाई
बासा रखते तेरी पवन् । तेज सत्वका तामडा झलके जैसे
दिव्यजगन् । मत्तकी माला अमोलदाने परम हंस पहिरे
सज्जन । प्रीतिका पारस पासमें अलख लाल का करें
भजन् ॥ १ ॥ जपताहूँ मैं नाम उसी का सत्य शब्दका गहि सु
मिरन् । सादा दिल था खरीदा सद्गुरु सबजा शुद्धवरन् ।
तुरियापदकी पाय तुरमुली श्यामा श्याम के महे चरन् ॥
लगन लाडिली मिलिगये मोर मुकट वाले का शरन् ।
लोकालाल लसुनियां पाया कहाये हमने सत्य वचन् ।
प्रीतिका पारस पासमें अलख लाल का करें भजन ॥
हरिनामका अकीक इसका बयान करना बहुत कठिन ।
बुरे कामसे बाज आगमन रूपे मूंगेका पहिन वरन ॥ ऐसा रस
मतछोडो साधो राधावर हैं शिरे रतन ॥ मती विसारो

नाम सुलभ लक्षण का पहिरो लटकन । जुम्बिश नहीं खाते हैं संतचित्त चुन्नीको करके धारन । प्रीति का पारस पास में अलख लालका करें भजन ॥३॥ परमारथ का पहिन के पन्ना जीतिलिये अबतीनोंपन । कोई कहै कुछ भी अपना मेरातो है वहीवतन । कहै मार अपने मनको अब पहिन जमुरद जस जीवन । देवीसिंह ये कहै कहूं खयाल दुमानी नयाचलन ॥ मैंने तो अब लखाहैमनमें मुक्तरूप मोती भग-वन । प्रीतिका पारस पासमें अलख लालका करेंभजन ॥ ४ ॥

त्रैलोकी है जिह्वा पर अब और किसी से काम नहीं । कोटिजन्मतक कभीजोभूलै शिवका नाम नहीं ॥ इसीजिह्वा पर गंग यमुना सरस्वतीकी है धारा । इसी जिह्वा पर र-चाया तीनलोके का पंसारा ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश ने अब जिह्वापर आसन मारा । चांद और सूरज रहैं इस जिह्वा पर नवलख तारा ॥ नारायण गोविन्द शब्द जिसने जिह्वासे उच्चार । उसीके ताई हुआ माळूम दाल घटकासारा ॥ चारधामहै इस जिह्वापर जिह्वा सा कोई धाम नहीं । कोटि जन्मतक कभी जो भूलै शिवका नामनहीं ॥ ५ ॥ हीरे मोती लाल औ पारस जिह्वापर अकसीर बसे । दई देवते इसी जिह्वापर पांचों पीरबसे । नौनाथ चौरासी सिद्ध जिह्वा पर इसमें बामन बीरबसे ॥ ऋषी मुनी सब इस जिह्वा में साधु फकीर बसे ॥ शत्रुहन हनुमान जो जिह्वा में रघुबीरबसे । समुद्र सातों इसी जिह्वापर अमृत नीर बसे । रामचन्द्र हैं जिह्वापर और कहीं आराम नहीं । कोटि जन्मतक कभी जो भूलै शिवका नाम नहीं ॥ ६ ॥ चार वेदपट शास्त्र अठारह पुराण जिह्वा के भीतर । सातद्वीप हैं औ

चौदह भुवन रतन चौदह सुन्दर । जब जिह्वासे कहा तो आई
श्रीगंगारहदासके घर । अजामीलने कहा नारायण मुखसे
गया वो तर । और कहा कुछ नहीं है प्यारे जो कुछ है सो जिह्वा
पर । इस जिह्वापर गायत्री पावेती शङ्कर हरहर । आठयामहैं
इस जिह्वापर जिह्वासा कोई याम नहीं । कोटि जन्म तक कभी
जो भूले हरकानाम नहीं ॥३॥ श्रीकृष्ण ने इस जिह्वापर तीन लोक
को दिखलाया । देखके अर्जुन रूपको अपने मनमें घबराया
हाथ बांधिके अस्तुति करता सब कुछ है तेरी माया । अभेद है तू
तेरा तो भेद किसीने नहीं पाया । जो कोई पूछे भेद किसी का
उसे भेद कुछ नहीं आया । कहैं देवांसिंह ज्ञानविज्ञान मेरे मनमें
भाया । बनारसी कहैं राम राम रट भूलैं सुबह और शाम
नहीं । कोटि जन्म तक कभी जो भूलैं शिवकानाम नहीं ॥४॥

श्रीकृष्ण गोपाल गोकुलानन्दन गुरुगिरिवरधारी । गोधी
गोवर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ पूरणब्रह्म अखण्ड सच्चि-
दानन्द सदा आनन्दकरें । कालको जीतें और जंजालपाप
सब बन्दकरें ॥ दुष्टोंको हनहनके मारें राक्षसकी मतिमन्दकरें
भावभक्तको दें और सन्तोंको निर्द्वन्दकरें ॥ वेदशास्त्रगीता
को गावें और नये नये छन्द करें । मुखधर मुरली बजावें अ-
स्तुतिउनकी नन्दकरें ॥ मातु यशोदा करें आरती ध्यानधरें
नित त्रिपुरारी । गोधीगोवर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ।
मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल कण्ठ कौस्तुभ मणी लसे । उरमें
मुक्कमाल और कटिर्पाताम्बर पीतकसे । श्यामगात छवि स्व-
रूप सुन्दर सन्तोंके हिरदयमें बसे । चरणमें झलके व सुन्दर
पद्मपद्मिनी देखहैंसे । सब दुखदूर होंय उनके जो हरिकी

भक्ती माहिँसे । गोविन्द गोविन्द कहै जो उन्हें न काला
 कालडसे ॥ परमहंस सब करें अस्तुती ब्रह्मब्रह्म कहै ब्रह्म
 चारी । गोधी गोवर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ २ ॥
 नारायण वोही सत्य नारायण अनेक रूप अनन्त नयन् ।
 मोहनीमुराति मोहमेनको हँसबोले मधुर बयन् । शेष नाग
 की शय्यापर करें क्षीर सिंधुमें हरी शयन् । ब्रज में प्रकटे
 नराई नदवावा की कामधयन् । वृन्दावनमें रहस रचाया
 उजयाली खिलरही रयन् । सब मखियनको साथ ले उनके
 संग में करें चियन् ॥ जितनी ग्वालिन खड़ीरहसमें उतनेहि बन
 गये बनवारी । गोधी गोवर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥
 ॥ ३ ॥ मीन कूर्म बाराहकहीं नरसिंहरूप हरने धारा । कामन
 बन के छला बलि इन्द्र को राख्य दिया सारा ॥ परशु-
 राम हो क्षत्रिय जीते सहस्र बाहु को संहारा । राम
 रूप धरि छेद रावण को एक पल में मारा ॥ कृष्ण रूप
 सोलहों कला बल पण्डोंका किया निस्तारा । बनाई गीता
 इसी से दुर्योधन का दलहारा ॥ बोधरूपधर बने हैं बोद्धा
 निष्कलंककीतैयारी । गोधी गोवर ज्ञानविज्ञान आत्मा
 अवतारी ॥ ४ ॥ अपारमाया अलखलखी नहीं जाय कृष्ण अ-
 वतारी की । कवीश्यावर्णनकरे जो महिमाननी मुरारी की ॥
 सहस्रमुख से स्टें शेष नहीं पावै थाह बिहारी की । बाल रूप
 धरि कामना बसुदेवकी सारीकी ॥ रखी देवकीकी लज्जा
 कंसाको मार बहुभारी की । कहैं देवीसिंहप्रभु अब हमने
 शरणतुम्हारीकी ॥ बनारसी जै जै करता ब्रह्माने अस्तुति
 उचारी । गोधी गोवर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ५ ॥

विश्वरूप लिखरहा बाग में जिसमें आदमी की गुल-
जारी । रंग रंगके फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ पूरव
पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी । हर एक तरफ
से नदियों की छटी है जो नहर बनी । सात सिन्धु सोई
तालाब सातों सबका मालिक वही धनी । चाहै बनावै
चाहै एक पलमें करदे फनाफनी । विश्व बागका मालिक
है वही श्री कृष्ण गिस्वरधारी । रंगरंग के फूल हैं तरह
तरहकी फुलवारी ॥ १ ॥ नव खण्डों के महल बनाये दशोंदिरा
के दशद्वारे । तयार किये हैं बाग में चौदह भुवनन्यारे न्यारे ॥
आसमानकी छत लगाई जिसमें जड़ दिये हैं वारे । गरज
गरज घनकरै छिडकाव छोड़ते फव्वारे ॥ चांद और
सूरज चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी । रंग रंग के फूल
हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ २ ॥ चमत्कार का चमत्तलगाया पर
ब्रह्मने आपदि आप । हरजूर में झलकता हरशय में वही र
हा है व्याप । इसी बागके भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते
जाप । कोई गावते भजन और कोई रहे पंचगनी ताप । सा
धुसन्त करै सैर बागमें परमहंस और ब्रह्मवारी । रंग रंगके
फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ ३ ॥ तोते मैना लालहंस सब
सैर बाग की करते हैं । जो नर हरहर रटै वह नहिं जन्में नहिं
मरते हैं ॥ देवीसिंह ये कहै ध्यान जो उस मालिकका धर-
ते हैं । भवसागर के पार वह सहजहिं जाय उतरते हैं
बाग जहां के बीच में उसके कुदरत की फैली क्यारी ।
रंगरंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥ ४ ॥

यह कायाहै कल्पवृक्ष तीनों गुणकी तीनों डाली । हर

एकफल है इसी में हरीनामकी हरियाली ॥ प्रेमप्रीति के
 पत्र लगे और परस्वारथके फूले फूल । उन फूलों में कोई
 नहीं कांटा है और सोई न शूल । शील सत्यकी शाखा है
 आनन्दरूप कहैं जिसका मूल । मोर हंस सब और तोते
 मैना उसमें रहे हैं झूल । कल्पवृक्ष काया को सींचे निरा-
 कार निर्गुणमाली । हर एक फल है इसी में हरीनाम की ह-
 रियाली ॥ १ ॥ समष्टीकी सुगन्ध सुन्दर परम तत्वकी चले
 पवन । छमाकी छाया में बैठे सन्त हरी का करें भजन ॥
 आविरूपी है छालवृक्ष में बैठे बोले हीरामन । ब्रह्मवीर्य से
 हुआ उत्पत्ति किया यह सत्यमथनास्यशाखा है भरी फूलसे कोई
 डाल नहीं है खाली । हर एक फल है इसी में हरीनामकी हरि-
 याली ॥ २ ॥ सरजीवन जलभरा वृक्ष में हरीहरीकर हुआ हरा ।
 नखसे शिखलों वृक्ष यह भावभक्ति से रहे भरा ॥ कल्पवृक्ष
 काया में बैठ के जिसने जिसका भजन करा । अजर अमर
 वह हुआ और भवसागर में सहज तरा । रंग रंगके बने
 जाल और तरह तरह की है जाली । हर एक फल है इसी में
 हरीनामकी हरियाली ॥ ३ ॥ मुक्तरूप फल लगे वृक्ष में भजन
 करें सोई पावै । जन्म मरण से होवै वह रहित नहीं आवे
 जावै । राम राम रस भरा फलों में जो कि राम सों लव
 लावे ॥ कहैं देवीसिंह होय वह अमर नहीं मरने पावै ॥
 कल्पवृक्ष काया का है वह निराकार निर्गुणमाली । हर एक
 फल है इसी में हरी नाम की हरियाली ॥ ४ ॥

अमरनाथ ने अमर कथा जबकही सुनै थी पार्वती ।
 उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलासपती ॥ अविनाशी

कैलासी काशी उत्तराखण्डमें बसाई । बैठे गुफामें गौर को अ
मरकथा जब सुनाई । अमृतवाणी सुनी उमाके नेत्रमें निद्रा
भरि आई । वही कथा फिर एक तोतेके बच्चे ने सुनिपाई ।
दिया हुंकारा शिवजी को शिवकहैं अर्थ कर समुझाई । सु-
आ सुनताथा औ वहीं सोती थी गौरा माई । परब्रह्म का खे
लहुआ पर उस तोते की बड़ी रती । उत्तराखण्डमें लगाआ
सन बैठे कैलाशपती॥१॥हुई कथा सम्पूरण शिवके पार्वती को
बोलाया । उठी गौरजा कहाशिव मैंने कुछ नहीं सुनिपाया ।
फिर शिवजी ने कहा हुंकारा किसने मुझको सुनाया । और
तीसरा यहां पर कौन बिधी करके आया ॥ चढ़ा क्रोधशिव
शंकरको करसे त्रिशूलको उठाया । उमीवक्त फिरवहतोतेका
बच्चा उठके धाया॥दौड़ेशिव उसके पीछे वह निकल गया कर
समुत मती । उत्तराखण्ड में लगाआन बैठेकैलाशपती॥२॥ती-
नलोकमें उड़ा वह तोता कही भिला नहीं ठिकाना । उड़ते
उड़ते बहुतही अपने मनमें ववड़ाना । पतिव्रता थी
खर्चा करै स्नान उसी को पहिचाना । दौड़के तोता जाय
फिर उसके मुखमें सामाना । वहां किसी का जोर चले
नहीं क्योंकर हो उसका पाना । फिर शिवजी ने दिया
वरदान कहा यह है स्याना ॥ वही हुये शुकदेव व्यास के
पुत्र बड़े भये यती सती । उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे
कैलासपती॥३॥अमर कथा का बड़ा महातम है जो कोई
सुनने जावे । श्रवण कियेसे होय वह अमर नहीं मरने
पावे ॥ चारवेद षटशास्त्र अठारहपुराण सब इनमें आवें ।
अमरकथा को आप शुकदेव सदा मुखसे गावें । वह प-

ण्डित हैं बड़े कि जो कोई अमरकथा को सुनावें । और
दूसरे बोल नहीं कछु मेरे मनमें भावें ॥ जिस दिन शिवने
कही कथा कौन बार तिथि कौन हती । उत्तराखण्ड में
लगा आसन बैठे कैलासपती ॥ ४ ॥

योगी साधें योग योगमें कायाकाहै खेद बढ़ा । हमने जा
ना योगसे वियोगकाहै भेद बढ़ा । योग किया रावणने यो-
गीवन सीतामाता हरलाया । रामचन्द्रने किया वियोगबड़ा
एक यशपाया । योगकिया हिरण्यकाशिपुने प्रह्लाद भक्तको
डरपाया । वियोग करके बने नरसिंह दुष्टको गिराया । योग
किया भस्मासुरने शिवशंकरको अतिरक्ताया । वियोगकर
के विष्णुने उसेभस्म कर जलाया । योगी पढ़ते योग शास्त्र
वियोगी का है वेद बढ़ा । हमने जाना योगसे वियोगकाहै
भेद बढ़ा ॥ ५ ॥ योगीवन के चला जलन्धर हरमे युद्ध कीना
भारा । वियोग करके हरी ने छली जलन्धर की दारा । उ
सका योगघटगया पकड़के शिवने दुष्ट कोसंहारा । इसीसे क

ह उसको मारा ॥ योगी करते योग विधी से वियोगी का है
निषेध बढ़ा । हमने जाना योगसे वियोग काहै भेदबढ़ा ॥ ६ ॥
योगकरनकी श्रीकृष्णने सखियों को भेजी पाती । क
हती सखियां ऊधो यह बात नहीं मनमें भाती ॥ योगी
घरें भस्म हमने वियोगमें जाली छाती । योगी मदको
पीवें हम वियोगमें हैं मदमाती ॥ योगी बाधें सेहली ह
मने वियोगकी बांधी गाती । जायके ऊधो कृष्णसे कहा

यह सखियां समझाती । वियोगी वेधे हीया योगी तो काम
में करते बड़ा । हमने जाना योग से वियोग का है भेद
बड़ा ॥ शायोगी कहते ज्ञानवियोगी फिरे इशकमें दीवाने । वि-
योग जिसको नहीं बड़ योगके रस्ता क्या जाने । योगी तो
जंगल में बैठे चढ़ावते अपना प्राने । वियोग करके वियोगी
घटमें आनम पहिचाने ॥ योगीके शिर जटा-वियोगी शिर
से पर है मस्ताने । कहें देसीमिह योगी से वियोगी होंगे स
गाने । बनारसी ने वियोग साधा योगमें देखा खेद बड़ा ।
हमने जाना योगसे वियोग का है भेद बड़ा ॥ ४ ॥

ब्रह्मचर्यते सृष्टि पाठना विष्णूकरें शिव संहारें । धन्य धन्य
श्रीगंगाजी जो अधमपापियों को तारें । गणेशजी विद्या का
वरदें बुद्धिबुद्धिका दान करें । सूर्य तेज देवे शरीरमें जगमें
सब सन्मान करें ॥ शतिलताई देवे चन्द्रमा सतगुण का पर
धानकरें । हनुमानजी चाहे तो एक पलभरमें बलवान करें ॥
सैरोंजी भयहरे डरें नहिं दुर्जनको पलमें मारें । धन्य धन्य
श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥ १ ॥ इन्द्रका
सुमिरन करे तो पावे सुन्दरसी अवलानारी । दुर्वासाजीपवन
अहारी कामी को करे ब्रह्मचारी ॥ कुबेरके हैं भक्त जो वह तो
बड़े बड़े मायाधारी । धर्मराजजी धर्मवतावे जो हैं उनके
हितकारी ॥ शेषजी अपने सहस्रमुखसे नये नाम नित उच्चारें ।
धन्यधन्य श्रीगंगाजी जो अधमपापियोंको तारें ॥ २ ॥ तनुका
रोगदूर करदेते बड़े वैद्य अश्विनीकुमार । वेदव्यास पुराणके
मुनिहैं वेदका निशि दिनकरें विचार । बालपन से त्याग
बचावें सनकसनन्दन सनतकुमार । करो शनैश्चर का

पूजन तो सकल बिपदको देवेंतार । जितने देवते होंगे सो
तो गुरुबृहस्पति को धारें । धन्य धन्य श्री गंगाजी जो
अधम पापियों को तारें ॥ ३ ॥ तेतीस कोट देवते सब अ
पना अपना देत हैं फल । अतिप्रसन्न होते हैं उनपै जब
चढ़ता है गंगाजल ॥ देवीसिंह यह कठ न भूलें मैं श्री
गंगाको यकपल । सब से ऊँचे शिवजी उनके शीश के
ऊपरगंग अवल ॥ बनारसीके अधम पापको धोवें गंगा की
धारें । धन्यधन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारे ॥ ४ ॥

पापी एक भरा गंगापर हुई वहाँ उसकी तय्यारी ।
महिमासुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी । आ
या कंचन का विमान सुन्दर और वामें रत्न जड़े । ब्रह्मा
विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेने को खड़े । उधर से
आये यम के दूत वह ले ले हाथमें शस्त्र बड़े । देखतेही दल
श्रीगंगाका भागे यमके पांवपड़े । वह जो पापीथा सो तो
तनुत्याग के बन गया त्रिपुरारी । महमा सुनो कान दे
जैसी निकली वाकी असवारी ॥ १ ॥ अद्भुत भूषण कुबेरजी
झटपट से आपी ले आये । पीत वस्त्र नख शिखलों उत्तम
उसके तनुमें पहिराये ॥ चोवा चन्दन इतर अगरजा सभी
देवते ले धाये । पत्र पुष्प से पूजनकर कर मग्नभये मंगल
गाये ॥ तीन लोक चाँदेहों भुवनकी पाई उसने सरदारी ।
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ २ ॥
मोरमुकुट मकरा कृत कुण्डल गले में वैजन्ती माला ।
शीशब्रत्र सुवर्ण का झूमे जयजय शब्दकी ध्वनि आला ॥
कंठ कौस्तुभमणी हार गजमुक्तोंका उरमें डाला । बाजूबन्द

नौस्तन और करमें कंगनका उजियाला । भरे अटल भंडार
उसे गंगा ने मायादी सारी । महिमा सुनो कानदे जैसी निकली
वाकी असवारी ॥ ३ ॥ जबवो बैठा विमान में तो ब्रह्माजी मुखल
लाये । इन्द्र दुलावे पंखा सब देवतोंने पुष्प अति बरसाये ॥ शि-
व और विष्णुने करी शङ्खध्वनि ऐसे फल उसने पाये । धन्य
भाग्य है उनके जो कलिकालमें गंगाजी न्हाये । करे नृत्य गंध
र्व सकल मिलिबाजे बजन लगे भारी । महिमा सुनो कानदे जैसी
निकली वाकी असवारी ॥ ४ ॥ अष्टासिद्धि नौनिद्ध सभी करजो
रिजोरि आई आगे । जिन त्यागे गंगाके तीर तनु उनके भाग्य
ऐसे जागे । जबवह बैठा विमान तो गोले अनहदके दगने लागे
नन्दीगण अरु गरुडसिंह गज विमानके नीचे लागे ॥ और स-
कल बाहन कांधा देने लागे वारीवारी । महिमा सुनो कानदे
जैसी निकली वाकी असवारी ॥ ५ ॥ हनुमान जी खास
बनगये भैरव बनगये अगवानी । गणेशजी डका ले आगे
चले महायोगी ध्यानी ॥ छप्पन कोटि भेषने मिलके रस्ते
में छिड़का पानी । इन्द्र सूर्य ने करी रोशनी सब देवतों
के मनमानी ॥ तेतीसकोटि फौजसब संगमें चली औ छवि
न्यारी न्यारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी
असवारी ॥ ६ ॥ जब वह पहुँचा अमरलोकपुर सब फिर आये
अपने धाम । मिली ज्योति में ज्योति रूप है श्रीगंगा को
करो प्रणाम ॥ याहीते मैं कहत जात हों जपो सकल गंगा
का नाम । और कोऊ नहीं अन्त समय में आयगो अब
तुम्हरे काम । बनारसी यह कहैं कभी तो आवैगी मेरी वारी ।
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ ७ ॥

आजु युद्ध की करो तय्यारी श्रीगंगाजी तुम गनसे । मैं पापी तुम
 तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥ मेरो पापहैं पहाडके सम
 समर करन मैं वीर बड़ो । देखो मैं अब आपके कैमेहोंगो तु
 म्हारी तारबड़ो । रणमे लडै हटै नहिं कबहु मेरो पाप रणवीर
 बड़ो । तुमतो यही कहनहो मुखसे मेरीरेणुका नारबड़ो । देखो
 उनको पुरपारथ जोलाडिँ आय मेरे तनसे । मैं पापी तुम ता
 रणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥ ७ ॥ जवमे जन्म भयो पृथ्वी
 पर कभी न हरको नामालियो । सेवाकी नहिं मातु पिताकी
 माधुनको नहिं कामकियो । हरी बहुत धन ठग ठगके नहीं
 हाथसे एकहु दामदियो । कियो बहुत विपान अमृत को भी
 एवहु यामपियो । कैसे बचिहों कालमे मैं अब कौन छुटइहैं
 म्हिं यमसे । मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत
 हमसे ॥ २ ॥ वेद पुराण बखानन भिरादिन अयम पापियोंको
 तारा । किया बहुत संग्राम कालमे और यमदूतों को मा
 रा । सुनीवात यह श्रवणसे मैने कियेपाप अपरम्पारा । करि
 हों और बहुतसे अवदेखों कैमेहो निस्तारा । अबतो यही
 लडाई ठानीहैं गंगाजी मैं तुमसे । मैं पापी तुम तारणहारी ब
 निहैं पाप बहुत हमसे ॥ ६ ॥ अइहैं जवयमदूतलैनको बड़ेखोड़ा
 भारी । तब तुम मोहिं बचैहों तौ मैं जइहों तुम्हरी बलिहारी ।
 तुम्हरे गणहैं पुष्पलिये और यमके दूत शस्तर धारी ॥
 इसका उत्तरदेव कि सैना किसविधि से यमकी हारी ।
 कहों मुखे समुझायके झटपट छूटजाऊँ मैं इस भूमसे ।
 मैं पापी तुम तारण हारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥ ४ ॥
 भगिहैं सब यमदूत बुलैहा मैं तुमको भेजके विमान ।

एक बिन्दु गंगाजलसे जलजाय पापनहिरहैं निशान । किये पा
पदेवाँसिठने वह पापभी हांगये पुण्य मगान । बारम्बार यह
कहत जातहो क्यों बनारसी तुम मनसे भैं । पापी तुम तारा
णहारी बनहैं पाप बहुत हमम ॥ २ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिकने जदकियासजन । त-
बआई ब्रह्मण्डलसे श्री गंगाजी तारण तरन । ब्रह्मरूप नि-
र्भय निवाणी अष्टमण्डगंगाकी धारा । विष्णुजीसे ब्रह्माकेपा
सआई तवारीवजीनेधारा । जटाको उनके शाभादी औंमरूप
भी सुन्दर सुझारा । आगे कहूंगा वृत्तान्त जिसविधि तीन
लोकको उझारा । अस्तुतिकरकैं आप ईशने शीशचढ़ाई भये
मगना। तबआई ब्रह्मण्डलसे श्रीगंगाजीतारणतरन ॥ १ ॥ भागी
रथने करी तपस्या मगनभये सम्भ्रमोला । कहाभागदुखहमसे
तब भागीरथ मुखसे यों बोला । गंगादेउनाथजी हमको शु-
द्ध करौं कुलकीचोला । तबफिर अर्जुनजटाको शिवनेअपने
हाथनसेखोला । एक ध्रुवगंगाजल निकला जटासे जब आति
किया यतन । तब आई ब्रह्मण्डल से श्री गंगाजी तारण
तरन ॥ २ ॥ एकध्रुवकी तीनधार भई धाराएक गई पाताल ।
शेषनागने दर्शनपाये जीवनमुक्तभये सरव्याल । एकधार
आकाशगई सब देवता देख भये खुश हाल । हाथ जोरि द-
ण्डवत्करी गंगाने उन्हें तारा तत्काल । एक धार भागी-
रथलाये मृत्युलोक तारन कारन । तब आई ब्रह्मण्डल
से श्री गंगाजी तारण तरन ॥ ३ ॥ मृत्युलोकमें चलीवेगतेतब
समुद्रने किया विचार । हाथजोड गंगसे कहा तुम्हारे
बलका नहिं धारा पारा। ये मुझसे नहिं जाय सहारा बहुत

सिन्धुने करी पुकार । तब गंगाने प्रसन्न हैंकै धारा अपनी करी हजार । नाम पड़ा गंगासागर कह बनारसी नितकर दर्शन । तब आर्द्रब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारण तरन ॥ ४ ॥

और सकल देवतन से फलजो मांगोगे तब पावोगे । बिन मांगेदेहै गंगाजी जो एक बार तुम न्हावोगे । शिवजी की जो करमे तपस्या मनमें ध्यान लगावोगे । और श्रीगंगाका जल जब उन केशीश चढ़ावोगे । तेलपत्र और आक धतूरा मंदि में लेजावोगे । तब वह है हैं प्रसन्न जब तुम दोनों गाल बजावोगे । वो कहि हैं कछु मांगो हमसे तब तुम उनसे मांगके लावोगे । बिन मांगेदेहै गंगाजी जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ १ ॥ ठाकुरद्वारे जाय जाय जब विष्णुको शीश झुकावोगे । पत्रपुष्पसे पूजन करके माला को पहिरावोगे । घूरा दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे । तब वह रीझेंगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे । वह कहि हैं कछु मांगो तुम हमसे तब मांगोगे शर्मावोगे । बिन मांगे देहै गंगाजी जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ २ ॥ ब्रह्मा जीका सुमिरण करके लाखों वरप बितावोगे । कन्दमूल फल खीय खाय के बहुतहि कष्ट उठावोगे ॥ यह काया कञ्चनतन अपना इसको खूब सुखावोगे । तब वो दर्शन देहै पहचो फल जो कुछ तुम चाहेगे ॥ वह कहि हैं कछु हम से लो तब तुम करको फैलावोगे । बिन मांगे देहै गंगाजी जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ ३ ॥ करिहो पृथ्वी परिकम्भा और चारों धाम फिरावोगे । जगन्नाथ और रामेश्वरमें जायके पांव थकावोगे । और द्वारकामें छाप खाखाकर बदन जलावोगे । जइहौ बढी किदार तब तुम

क्योंकर शीत बचावोगे । वहां तो तुम आपही मांगिहो मागं
न में बहुत लजावोगे । बिनमागेदेहें गंगाजी जो एक बारतुम
न्हावोगे॥१॥और कहींजोपामकर्म करिहौ तो पाप उठावोगे ।
गंगाजी में देहभी धोयहौ तोभी नहिं पाछितावोगे । लात
लगाइयो फाँदियो कूदियो बहुहि धूममचावेगे । तबभी
माता प्रसन्नहोयगी वाकेपुत्र कहावोगे । बनारसी कहैं अन्त
में मुक्ती आपीसे तुम पावोगे । बिन मांगेदेहें गंगाजी जो-
एक बार तुम न्हावोगे ॥ ५ ॥

भोजनकर या भुखारहु या वस्त्र पहर याफिर नंगा । जौलौं
जिये तू कहु इस मुख से जयगंगा श्रीजयगंगा । नेम धर्म
औ कर्म अकर्म में योग भोगमें कहुंगंगा । दुख में सुख में
भलेबुरेमें रोग अरोगमें कहुंगंगा । रोवत जागत राह बाट
में हृष शोक में कहुंगंगा । मातु पिता दारा सुत बिछुड़े तो
बियोग में कहुंगंगा । धन दौलत या राजपाटहो या फिर
ननजा भिखमंगा । जौलौं जिये तू कहु इस मुख से जयगंगा
श्रीजयगंगा॥ १॥रोवत हंसते नगरअरुवन में जहां रहै तू कहु
गंगा । सम्पत् विपत् कुपत् और पतनरसबी सहै तू कहुगंग
डूबत तिरत मरत या जीवत मेरे कहे तूकहु गंगा । ये मनमढ़ा
समझ अब झटमेरो मन कह तू कहु गंगा । जोतेरे मन बसे-
कार यह लगे तेरे वित्तमें चंगा । जौलौं जिये तू कहुइसमुख
से जय गंगा श्रीजयगंगा ॥२॥खेलतकूदत उछलत फादत अ
पने मनमें कहु गंगा । बाल जवानी और बुढ़ापा तीनों
मनमें कहु गंगा । धावत गावत ताल बजावत हररागन
में कहु गंगा ॥ सात द्वीप नवखण्ड और चौदह भुवन में

कहु गङ्गा । अंधाहो या बहराहो या बूला हो या इकटंगा
जौलौं जिये तू कहु इस मुखसे जयगङ्गा श्रीजयगङ्गा ॥ ३ ॥
घटो नफे में दिवस रात्रि में आदि अन्त में कह गङ्गा । संग
असग और रंग कुरंग में साधु सन्त में कहु गङ्गा ॥ चरा
चर चैतन्य औ जड़में तू अनन्त में कहु गङ्गा । चाहे
सबमें बैठके कहु चाहे एकान्त में कहु गङ्गा । बनारसी
यों कहें चहै तू गरीब बन या करंदगा । जौलौं गिये तू कहु
इस मुखसे जयगङ्गा श्रीजयगङ्गा ॥ ४ ॥

सागरकी गिनी जांय लहर गिने जांय तारे । नहीं जांय
गिने श्रीगंगाजीके तारे । पट्टशास्त्र गिने जांय गिनेजांयसब
नरनारी । दशादिशागिनीजांय सृष्टिगिनीजांय सारी । सिद्ध
साधु गिनेजांय गिनेजाय आचारी । राजा रानी गिनेजाय
गिनी जांय खलक सरकारी । गिनेजाय शाह शाहानी गि
नेजांय हलकारे । नहीं जाय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ ५ ॥ गि
नेजांय नदी नद सिंधु गिनेजाय नाले । गिनेजांय श्वेतरंग
लाल गिनेजांय काले । दरखत डाढी जांय गिनी गिनेजांय
ये डाले । छतीसरागिनी रागसकल गिनडाले । गिनते २
कई हजार शायर हारे । नहीं जाय गिने श्रीगंगाजी के तारे
खग चरन्दजाते गिने गिनेजांय चातर । हरजात गिनी-
जांय नगर गिनेजांय घरघर । कागज स्याही जाय गिनी
गिनेजांय अक्षर सरदारगिनेजांय गिनेजांयसागरसराक्याजाने
गंगा ने कितने शठ निस्तारे । नहीं जांय गिने श्रीगंगाजी
के तारे ॥ ६ ॥ दिन रातगिनी जांय गिनीजांय तिथि घड़ी ।
शायरी गिनी जांय गिनी जाय छन्दकी लड़ी । शायर

कायर जाँय गिने गिनीजाँय कड़ी । जंगल खेड़ा जँय
गिनी गिनीजाय जड़ी । यह सत्य सत्य छन्द काशीगिरि
ललकारे । नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजी के तारे ॥ ४ ॥

अब विष्णुसे जाकरयमने यही पुकारा । गँगाने बँद करदि
या नरककाद्वारा । लाखोंपापी पृथ्वीपैरोजमरतेहैं । क्या कहूँ
मैंवह एकक्षणभरमें तरतेहैं । मेरे भयसे भी ज़रा नहीं डरते हैं ।
गंगा के गण उनकीरक्षा करतेहैं। बिन भजनकिये होता उनका
निस्तारा। गँगानेबँदकरदिया नरककाद्वारा ॥ ५ ॥ हिन्दूयातुर्किया
बेहना डोम कसाई । भँगी धोबी हडफोड़ या होवे नाई। गंगा
की लहर जिसे दूरसे दी दिखाई। फिर अंतसमय में उसने मु-
क्तीपाई । दर्शन करते ही तरा महाहत्यारा । गँगानेबँदकरदि
या नरकका द्वारा ॥ ६ ॥ जो मेरेदूत पापियों को जाँय पकड़ने ।
तो गंगाके गण आवें उनसे लड़ने ॥ वह देख देख दूतों
को लगे अकड़ने । और मारे बाण तनवीच चले वह
लड़ने । मैं लड़लड़ कई लाख लड़ाई हारा । गँगाने
करदिया नरकका द्वारा ॥ ७ ॥ गंगासे सौ योजन पर एक
नगरथा । उस नगरमें एक पापी ऊँचा का घर था। वह पाप
कर्मकर करता रोज गुज़रथा । मरगया तौ उस पर पड़ा
एकबस्तरथा । गंगाका धोया उसीने उसको तारा । गंगा
ने बन्द करदिया नरकका द्वारा ॥ ८ ॥ यह सुनी बात तब
विष्णुजी यमसे बोले । गंगाकी महिमा कहाँ लौ कोई
खोले । इस नेत्रसे दर्शन श्रीगंगा के जोले । वेकुण्ठ में
वह फिर झूले सदा हिंडोले । कुछ बरा नहीं मेरा चले
न चले तुम्हारा। गँगाने बन्द कर दिया नरककाद्वारा ॥ ९ ॥

जब मृत्युलोकसे गंगा आय सिधरि हैं । तब वह पापी फिर कौ न विधी करि तरि हैं । उस कालमें जो कोई पाप कर्म करि मरि हैं । वह आन आन कर नरक तुम्हारा भरि हैं । यमराज जी अब थोड़े दिन करो गुजारा । गंगा ने बंद कर दिया नरक का द्वारा ॥ यह सुनी वात यमराज ने घर फिर आये । कुछ हैंसे और कुछ कुछ मनमें पछिताये । मनमारके यह गंगा के वचन सुनाये । अब तो तुम्हरे थोड़े दिन रहने पाये । कहैं नारसी कुछ यमका चला न चारा । गंगा ने बंद कर दिया नरक का द्वारा ॥ ७ ॥

जौ लौं पृथ्वी पर हैं श्रीगंगा की धारा । तौ लौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा । मत डरो कोई यम दूतसे मेरे भाई । रक्षा करने को हैं श्रीगंगामाई । जबसे शंकरने अपने शीश चढ़ाई । तब ईश और जगदीश की पदवी पाई । शिव बना वोही जिमने एक गोता मारा । तौ लौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥ १ ॥ कुछ जोर नयमका चले पाप नहिं लागे और कालभी देखै दूरसे तो वह भागे । जो गंगा के दर्शन कर काया त्यागे । वह अमर लोकपुर वसै अलख हैं जागे । यह निश्चय करके मानों वचन हमारा । तौ लौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥ २ ॥ चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले । कुछ कर्म अकर्म न उसके देखे भाले । जो इक बार प्राणी गंगा में न्हाले । वह जन्म जन्म के सकल पाप को टाले । हैं श्री गंगा की महिमा अं पर पारा । तौ लौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा । मत चलो हमारे मित्र किसीसे डरके । निर्भय हो दर्शन श्रीगंगा के करके । कहैं देवीसिंह गंगा हो ध्यान में धरके । जइहौ भवसागर

सहजहि आप उतरके ॥ गंगाके बलसे दल सब यमका
हारा । तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ ४ ॥

श्रीगंगाजी के तीर नीरपीनेको नाग इकआया। था बडाबो
विषधर नागभागकुछ उमदिन वाकेजागे । वह जलपीनेजब
लगातौं मेढक देखदेखकरभागे । इतनेमें आयेगरुड चोंचसे
पकडकेखानेलागे । झटपटवाके गये निलकषाण तत्कालही
उमनेत्यागे । मरतेहि विष्णुतनधारा । चटिगरुड़पै यहीपुका-
रा । तूबाहनहुआहमारा धनधन गंगाको बिन्दुमुझे गोविन्दहि
आपबनाया । श्री गंगाजीकेतीर नीरपीनेकोनागइकआया॥ ॥
शिर मोरमुकटकी लटक कानमें कुण्डल आंधिक बिराजे ।
गलमें वैजयतीमाल पीत पीताम्बर तन पर साजे । वह
शंखचक्र और गदा पद्मकी सम्पूरण छविछाजे । ये चरित्र
वाके देख देखके गरुडजी मनमें लाजे । कुछ कहते नहीं
बनिआवे । गंगा जो चाहै बनावै । चाहे शिवका रूप ध-
रावे । है महिमा अपरम्पार पार नहिसुरनर मुनिने पाया ॥ श्री
गंगाजी के तीर नीर पीनेको नाग इक आया ॥ २ ॥ तब श्री
गंगाकी आप स्तुति करी गरुड़ ने मुख से । हुई प्रसन्न
गंगा मातु तो बाणी बोली एक सन्मुख से ॥ था बहुत कष्ट में
नाग छुटाया मैंने इसको दुख से । अब तुम इसको बैकुण्ठ
पहुंचाओ बसे जाय यह अति सुख से । ये गरुड ने आज्ञा
मानी । गंगा की महिमा जानी । तब उड़े तड़े बलवानी
एक पल में पहुंचे जाय उसे बैकुण्ठ में तुरत बिठाया । श्री
गंगाजी के तीर नीर पीने को नाग इक आया ॥ ३ ॥ जो यह
अस्तुति गंगाकी कान देय सुनै और मुख से गावै । वह

भुक्तिमुक्ति सम्पूर्ण पदार्थ मन माने पावैं । गंगा से पर
न और देव कोई दृष्टि में आवे । है धन धन वाके
भाग जो दर्शनकर और गंगान्हावे । कहैं देवीसिंह भजु
गंगा । तब तेरा मन होवै चंगा । मन बनारसी ने रंगा ।
गंगाजी में तन बोरबोर झकझोरके पाप बहाया । श्री गंगा
जी के तीर नीर पीनेको नाग इक आया ॥ ४ ॥

हरेक ढूंढते जंगलमें दवा रसायनकी बूटी । नारायण हैं सर
जीवन भई वह बूटी हमने लूटी । कोई ढूंढता उस बूटिको जिस
में पारा तुरत मरे । कोई खोजता जड़ीको जो कोई तनकायाके
दुख हरे । बहुत लोग खोद पृथ्वीको वृक्ष काटते हरे भरे । उनको
भी फिर यम काटेगा कहैं शब्दये खरे खरे । हरी हरी बूटी है समझौ
हरी नाम है सबसे परे । उस बूटीको जिसने पाया वह भव-
सागर सहज तरे ॥ रामरसायन पाई हमने और रसा-
यन सब लूटी । नारायण हैं सरजीवन भई वह बूटी हम
ने लूटी ॥ १ ॥ कोई कहैं सिंगरफ मारें और काढ़े ग
न्धकका तेल । कोई देखते जड़ी ब्राह्मी कोई कोई ढूंढते
अम्बर बेल । हमने सबको देखा यारो येतो हैं सब झूठे
खेल । अमर नाम है दत्त निरंजन उसको अपने मनमें
मेल । मनको मारके बनाले कुश्ता जो गुजरे वह दिल पर
झेल । तनको शोधके शुद्ध करो तुम तजो झूठ और तजो
झमेल । जो न शस्त्र फूँके धातुको उनके हिये की है फूटी ।
नारायण है सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी ॥ २ ॥ कोई
मारने अवरख ताँवा कोई फूँकते दरताल । हमने अपने
मनको मारा मिले हमें गोविंद गुपाल । कोई कहैं हम

चाँदीमारे जिसमेंहो कुछ धन और माल । इन कर्मोंको जोई करता उसका होता हाल बिहाल । कोई कहे हम सोना मारे और करें पैसेको लाल । ठग ठगके छूटें दुनियांको उनको एक दिन ठगेगा काल । बहुत चोटते खरलमें धातु सन्तोंने काया कूटी । नारायण हैं सरजीवन भई वहबूटी हमनेलूटी ॥३॥ काई मारतेहैं कलहको जिसमें होवे पुष्ट शरीर । चरको फूंकके त बाह किया वह अमीर से होगये फकीर । साधूका नहीं धर्म जौनमारे धातु करके तदबीर । कहैं दैवीसिंह हरीहरी कहो जो जिह्वा हैगी अकसीर । खाकसारको ज्वां रसायन इनमेंहैं हर एक तासीर । ज्वांसे वह मुरदेको जलादे ज्वांसे दे डालें जहांगीर । बनारसी यें कहे हमारी रामनाम हैगी घूटी । नारायण है सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी ॥ ४ ॥

बहुत दिनों पर बिछी है चौसर सँभल के खेलो यह चाल क्या है । जो फेंकपांसा तो छूटें छक्के नलोदमनकी मज्जा ल क्याहै । मैंहूँ जुवारी सुघर खिलारी हमेशह जीतूँ कभी न हारूँ । सदा पड़े औदुई दूरहो चौरासी घरकी नरद मारूँ । पड़े अगरचे जो तीन काणे तो अपने दिल में मैं यह बिचारूँ । ये तीनगुणहैं सबी के तनमें मैं इनसे चलके अलग सिधारूँ । हैं चारकोण वह चौथापद है मिला अब हमको मलाल क्या है । जो फेंक पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मज्जा ल क्याहै ॥ १ ॥ हैं इसमें पंजड़ी सो पांचतख हैं मैं इनसे गोटी चलो बचाइके । और फेंकूँ छकड़ी ले आऊँ सत्ता सत्तको सतगुरुके पासजाके । हैदाव अठासी आठसिद्धि नवनिधियो में रक्खूँ मनाके ।

पड़े अगर छः चहार दशतो दशोद्वार देखूं दिल लगाके । न
 रंग अपना मेरे किसी से मैं अब समझाता हूं काल क्या है। फे
 कूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है॥ १॥ आये
 हमारे वह दश पौ ग्यारह सो ग्यारहों रुद्र हैं बदनमें । और
 बारह सौ दोनों बारह समझ शोचकुछ तू अपने मन में ।
 बड़े हैं इनमें वह दोनों तेरह में तेरह तेरह कहूँ मन में । तू
 चौधरी जहांका मालिक नज़र पड़े बौदहों भुवनमें । क
 रूं भजन में ये पन्द्रहों दिन माया मोह का वह जाल क्या है।
 जो फेंकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥
 है आत्मा सोलहों कला ये सो पासमें सोलहों बनाये । वह
 आये सत्रह ये सत्रहों अब हरी हरी हरिके गुणगायो पड़े अ
 ठारह पुराण हमनें औ अर्थ उसके थे दिलमें पाये । उठेरंग
 बदरंग भी उठगये वह सारी मायाको जीत लाये । बनारसी
 का सदा बनारस बना हुआ है बवाल क्या है । जो फेंकूं पांसे
 तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ ४ ॥

लाललाल तन झलकत ललकत चलत दलत दल
 गर्जतघन । करतसकल जगहर्ष करै जयजय श्री अञ्जनी
 नन्दन ॥ तरण तारण तरण तारण धरणी धारण हैं कष्ट
 दलन । रक्तरंग अंगजंगजद करत लगत संसार हलन ।
 जल थल हल चल करत धरत जद चरण गर्जिकर ल
 गतचलन । झल झल झलकत जलत गढ़ लँक दैत्य
 शठलगत जलन । हतहत गत करदेत शठनकी जड़त
 शस्त्रकाटत नसतन । करत सकल जग हर्ष कर जय जयश्री
 अञ्जनीनन्दन ॥ १ ॥ गर्जत लर्जत धरण चरण जद हलत

धरणिडगडगकरनन । शेष थकत अतिछकत सतासिन्धु
देखि जिनके चरनन । हरी जरी नहीं देर करी गिरिलाये
सकल कर दिये जरनन । सेतुदेतुकर रवाया ऐमे हैं संकट
हरनन । तनितानि हनिहानि रणदल छेदत राक्षस की का-
टत गरदन । करत सकल जग हर्षकर जय जय श्री अं
जनीनन्दन ॥ २ ॥ कर धर गदानककरगाहिकर झट जलदी
से लेतजगन । कड़ककड़क कर कड़कधगणिसे क्षण अन्दर
चढ़िजात गगन । रण अन्दर धँसधँसकर कसकस जड़त
गदाधर धरके लगन । हरेक अस्र अति चलत शठ
दठ के अन्दर लगत अगन । अस अस करत सकल
नर यशकर हरहर रटत हंसत हरजन । करत सक
ल जग हर्षकर जयजय श्रीअंजनी नन्दन ॥ ३ ॥ चढ़िचढ़ि
जात हाथ गिरिलेकर करके घात जद लगत अड़
न । झट छत छोटत हाथ हठ नाथ ताक तक लगत जड़न ।
दरद शरद करदेत करद जद करसे गहिकर जात लड़न ।
असंख्य गर्जत शंख अनहद गतंडते लगत झलन । का-
शीनन्दन आनन्द छन्द कथ कहत अधर नित नई कथन ।
करत सकल जग हर्षकर जयजय श्री अंजनी नन्दन ॥ ४ ॥

महावीर मस्तकं ललित सिंदूरं कुम् कुम्भगरं । ज्ञान-
वान अभिमान रहित निर अहंकार हरयोगी । इन्द्रो-
जात कामिनी त्यागी नवकामी नवभोगी ॥ रूपअनन्द
परमानन्दं । महावीर मस्तकं ललित सिंदूरं कुम्कुम्
अगरं ॥ १ ॥ दशकन्धर अभिमान हनन लङ्कादाहन बज-
रंगी । पूरण ब्रह्म अखण्ड सान्निधानंद साधु सत संगी ।
नामउचारत नितगोविंद ॥ महावीर मस्तक ललितं

सिंदूरं कुम्कुम् अगंरं ॥ २ ॥ रक्त चीर गदाकर शोभित पु-
ष्प माल उर धारन् । दानव दलनं हनन दुष्ट दल सक
ल शत्रु मंहारन ॥ शब्द धनि गर्जत हरि हरी बम्बम् ।
महावीर मस्तकंललित सिंदूरं कुम्कुम् अगंरं ॥ ३ ॥ शिव
सङ्कर सर्वज्ञ स्वरूप विश्वेश्वरसु विशालम् । परम वैष्णव
शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम् । बहुविस्तारं मम
किं वरणम् । महावीर मस्तकं ललित सिंदूरं कुम्कुम्
अगंरं ॥ ४ ॥ जटाजूट मकराकृत कुण्डल रत्न जटित अ-
ंग भूषण । पैवम मुख मुखदायक दाता देवपती निरदू-
षण । छन्द काशीगिर शास्त्र कथित । महावीर मस्त
कं ललित सिंदूरं कुम्कुम् अगंरं ॥ ५ ॥

नन्दनंदन ब्रजराज की छवि अब कोटिन भानु प्रकाश
करें । उदित करें चन्द्र कोटिन अरु कोटिन तमका नाश
करें । कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्ण हरी के
हैं । कोटिन हैं नामिका हरी की कोटिन वर्ण हरीके हैं ।
कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शरण हरी के हैं ।
कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरी के हैं ॥

शैर-कोटिन हरी के मुकुट हैं कोटिन हैं तिलक भाल ।

कोटिन हरी के कण्ठ हैं कोटिन हैं मक्त माल ॥

कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरी के लाल ।

कोटिन हरी के भाव हैं कोटिन हरी की चाल ॥

कोटिन पग पाताल छवे अरु कोटिन आश अकाश
करें । उदित करें चन्द्र कोटिन अरु कोटिन तमका नाश
करें । ६ । कोटिन कर्प हरी के हैं अरु कोटिन नाम हरी के
हैं । कोटिन रूख हरी के हैं अरु कोटिन नाम हरी के हैं ॥

कोटिन ग्राम हरी के हैं अरु कोटिन धाम हरी के हैं । कोटिन शैव हरी के हैं अरु कोटिन वाम हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के वेद हैं कोटिन हरी के मन्त्र ।

कोटिन हरी के शास्त्र हैं कोटिन हरी के तन्त्र ॥

कोटिन हरी की पूजा हैं कोटिन हरी के यन्त्र ।

कोटिन से हरी अन्त हैं कोटिन से हैं निरन्त्र ॥

कोटिन को सुख दें हरी कोटिन के मन में त्रास करें ।
उदितकरें चन्द्रकोटिन अरु कोटिन तमका नाशकरें ॥ २ ॥ कोटिन
इन्द्र हरी के हैं अरु कोटिन राज हरी के हैं । कोटिन हैं
गन्धर्व हरी के कोटिन साज हरी हैं । कोटिन माया
हरी की हैं कोटिन समाज हरी के हैं । कोटिन मित्र हरी के
हैं कोटिन मुहताज हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के गज हैं और कोटिन खड़े तुरंग ।

कोटिन हरी के रथ हैं और कोटिन हैं रथके संग ॥

कोटिन हरी के वेष हैं कोटिन हरी के रंग ।

कोटिन हरी की लहर हैं कोटिन उठें तरंग ॥

कोटिन हरि वैकुण्ठ करें चाहें कोटिन कैलास करें । उदितकरें चन्द्रकोटिन अरु कोटिन तमका नाशकरें ॥ ३ ॥ कोटिन
हैं गोपिका हरी की कोटिन ग्वाल हरी के हैं । कोटिन धेनु
हरी के हैं कोटिन गोपाल हरी के हैं । कोटिन सिंधु हरी के
हैं अरु कोटिन ताल हरी के हैं । कोटिन रत्न हरी के हैं
अरु कोटिन थाल हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के दैत्य हैं कोटिन हैं देवते ।

कोटिन हरी के नाम को हैं मुख से लेवते ॥

कोटिन हरी के नाव हैं कोटिन हैं खेवते ।

कोटिन हरी के चरण को है करमे सेवते ॥

देवीसिंह कहै बनारसी के घटमें हरी निवास करें । उदिह
त करें चन्द्र कोटिन अरु कोटिन तपका नाश करें ॥ ४ ॥

ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में है विष्णु, विष्णु में शिव शंकर। शिव
शंकरमें शक्ति शक्ति में सृष्टि सृष्टि में उसी का घराघर मैजन्म
जन्म में बालक बालकमें है मनमोहन । मनमोहन में मोहनी
मोहनी में रस रसमें भोलापन । भोलेपनमें खेल खेलमें खुशी
खुशी में नन्दनन्दन। नन्दनन्दन में राधे राधे में सखियाँ सखि
यों में लगन । लगन में प्रेम प्रेम में प्यारी प्यारी में सोलह
लक्षन । लक्षन में शोभा शोभा में रूप रूपमें चन्द्रबदन । चन्द्र
बदन में श्याम श्याम में सुन्दर सुन्दर में वह दमक । दमक में
कृष्ण कृष्ण में दामोदर । ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में विष्णु विष्णु
में शिवशंकर ॥१॥ दामोदरमें दयादयामें धर्म धर्म में रहै सुमत
सुमत में सुख और सुख में सम्पाति में है सारा जगत् ॥
जगत्में थल और थल में पृथ्वी पृथ्वी में आकाश रहत ।
आकाश में पवन पवन में अग्नी अग्नी में पाँचों तत्व ।
तत्व में त्रैगुण त्रैगुण में है तीन लोक लोकों में सत्त्व ॥
सत्त्वमें सारा विश्व विश्व में रचना रचना में है भक्ता भक्त में भाव
भावमें साधुसाधुके मनमें ईश्वर। ईश्वरमें ईच्छा। ईच्छामें रहित रहितमें
रहे अमर । ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मामें है विष्णु विष्णु में शिव
शंकर ॥ २ ॥ अमर में आदि आदि में आत्म आत्म में है
आत्म ज्ञान । ज्ञान में गोविन्द गोविन्द में गिरधर
गिरधर में श्री भगवान । भगवान में निर्गुण निर्गुण में है
सगुण सगुण म हवै ध्यान। ध्यान में योग में योग में योगी

योगीके मनमोविज्ञान । विज्ञानमें चैतन्य और चैतन्यमें चित्त
चित्तमेंप्रान । प्रानमें जीव जीवमें जपतप जपतप में है यज्ञ
और दान । दानमें मान मानमें आदर आदर में है हरि और
हर । हरमेंउमाश्रममें लक्ष्मी श्री लक्ष्मीमें चराचर । ब्रह्ममें
ब्रह्मा ब्रह्मामें विष्णु विष्णुमें शिवशंकर ॥ ३ ॥ चराचरमेंवीर्य
वीर्यमें वृक्ष वृक्षमें भराहैजल । जलमें शाख शाखमें पत्रहै पत्रमें
पुष्प पुष्पमें फल । फलमें रस और रसमें अमृत अमृत में
है स्वाद अटल । अटलमें अलख अलख में माया माया
में वह है निर्मल । निर्मलमें है शुद्ध शुद्धमें बुद्धि बुद्धि में
है उज्ज्वल । उज्ज्वल में उपमा उपमा में शान्त शान्त में
बड़ा है बल । बलमें वीर वीर में योद्धा योद्धा में है जोरा-
वर । जोरावर में बनारसी और बनारसी में परमेश्वर ।
ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मा में है विष्णु विष्णु में शिवशंकर ॥ ४ ॥ ॥

बाजी खेली इश्ककी हमने जरा किया शशपंज नहीं ।
खेलले हर कोई जिसको यह वह बाजी शतरंज नहीं ।
शकलका यों कुछ जोर नहीं जो घोड़े से चल कर जीते ।
फीलकी क्या ताकतहै जो इस बाजीको बलकर जीते । ये
तो इश्कका दिल है इसको क्या पैदल दलकर जीते ।
रुखकारुख फिरजाय न वह इस बाजीको छलकर जीते ।
मेरे मिवा कोई और जहां में उठासके यह रंज नहीं ।
खेलले हरकोई जिसने यह वह बाजी शतरंज नहीं ॥ १ ॥
वज्ररिका क्या जिकर इश्कमें बादशाह तक हुए गदा ।
जोकि चाल चूका वह मारा गया मरा है यही सदा । इस
ने अपने शिर की बाजी लगाके इसमें दांव बदा । जान

वेचेक जो खेला वह जीता उसको मिला खुदा । वह क्या करेगा मातकि जिसके काबूमें शशंपन्न नहीं । खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंजनहीं ॥ २ ॥ अरदबनें नहीं आया बादशाह अपनेकीली चोटबचा। उमने नोडा किला जहांमेंकोई न उसने कोट बना । तिरछेहोकर बलौंगो तो क्या करकेसकोगे गोटबचा । उमका माल लुटगया रखीथी ज़िम ने ज़रकी पोटबचा । मुझे किस्त नहीं लगी किमने जमाकि या कोईगंज नहीं । खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंजनहीं॥३॥ यह शतरंज इश्ककी इसको खेले सोई सया नाहै । बड़े बड़े होगये जिच्च नहीं मेद किसीने जाना है । यह तो इश्कका ख्यालसदा आशिकोंके मनमें माना है । बना रसी अब जीतेजी निर्गुणके बीच समाना है । रामकृष्ण के शरीरी सखुनको पाये शीर बेरंज नहीं । खेलले हरकोई जिस को यह वह बाजी शतरंज नहीं ॥४॥

बन कायामें मन मृग चारों तरफ चौकड़ी भरताहै । बिना पैरसे खूब दौड़ता बिनमुख चारा चरता है । बिना नेत्रसे देखे सबको बिना दाँत दाना खावे । सब कहीं जावे और यह कहीं नहीं आवे जावे । बिन जिह्वासे बातकरे और बिना कण्ठ गानागावे । बिना सींगने लडे भगे नहीं बडे बडे दल हट्टावे । बहुत सिंह डरते इससे यह किसी से भी नहिं डरता है । बिना पैरसे खूब दौड़ता बिन मुख चारा चरता है ॥ १ ॥ बिनखुरखोदे सकल जगत्को ऐसा यह मदमाता है । बिन इन्द्रीसे भोग करत है यही यती कहलाता है । नहिं इस के कोई तात मात नहिं कुटम्ब कबीला नाता है । आपा

पैदाहोय आपमें आपेआप समता है । सब रंगों से न्यारा है और हरैकरूपको धरता है । बिना पैरसे खूब दौड़ता बिन मुख चारा चरता है ॥१॥ बिना जीवकामांमखाय यह किसीको भी नहीं मारे है । जिसको मारे एक पलभर में उमको फेर मुधारे है ॥ बिना कानमें सुननामकी जो कोई उमे पुकारे है ॥ ऐमे ज्ञानको कोईमा साथू संत बिचारे है । तीनलोकमें फिरता यह मृग भवसागर में तिरता है । बिना पैरमेखदौड़ता बिनमुख चाराचरता है ॥२॥ बिना नाशिका लेवे वामना हरैके चीज़की खुशबोई । आपही आपहै अकेला और इमके नहीं संग कोई ॥ देवीमिंह यह कहै कि जिसने बुद्धि निम्मलकर धोई । अपनी आत्मा जानता इम मृगको जाने सोई । न-नारसीने देखा यह मृग नहीं जन्मे नहीं मरता है । बिना पैरसे खूब दौड़ता बिनमुख चारा चरता है ॥३॥

यह काया है काम धेनुकर प्रेम प्रीति हमने पाली । सबी पदार्थ हैं इममें इच्छा फल देनेवाली । मगन रूप मस्तक झलकत मन्तोष सुमानिके सींग खड़े नही वह मारे कि सीसे नहींमरे और नहींलड़े । हीरे मोती लाल और हर एक रत्न रसनामें जड़े । कृपा और करुणा के दोनों कान नहीं छोटे औ बड़े । त्रिपगुण के हैं तीन बिह्व कहीं श्वेत श्याम कहीं है लाठी । सबी पदार्थ हैं इममें इच्छा फल देनेवाली ॥ दया धर्म है दृग दानों जैस रवि शशिका उजियाला । बनी नामिकानाम निश्चयरूपी सबसे आला ॥ अपा महिमा का मुख जिसमें मन्त्ररूप फिरती माला । अपनी काया हमने कामधेनु करकेपाला ॥ जिस जिह्वा और

दिव्यदन्त कल्याण कण्ठ रेखाकाली । सभी पदार्थ हैं इसमें
 इच्छा फल देनेवाली ॥ १॥ परमत्वकी पीठबनी आर उग्रनेत्र
 का उदर भला । परमार्थकी पूछहिलरही करै हर एक कला ॥
 चतुराई के चारोंथन समदृष्टी समदृष्ट ठला । चर्चा रूपी चरण
 चारों सुन्दर सममे अबला ॥ जगमगातहिरदयमें जगमगब्र-
 ह्मज्योतिकी उजियाली । सभी पदार्थ हैं इसमें इच्छा फल
 देनेवाली ॥ ३ ॥ हमने धारदुही धारजकी अब अपना उच्चारक
 रा । ज्ञानज्ञानके दूधको हिरदय की हांडीमें भरा ॥ ज्ञान से
 गरमकिया उसको मरजावन जीवन बीचधरा । जमा दही
 को मथा छलछिद्र छोड़ नहीं रही जरा ॥ मुक्तरूप माखनपाया
 हुई पूरी मनसा मनवाली । सभी पदार्थ हैं इसमें इच्छा फल
 देनेवाली ॥ ४ ॥ जो मांगे सौपावै इसमें ऐसी काय काभ धैन ।
 विश्वरूपहै जो देखे इसको उमको होवै चैनावनारसीकहै
 इनोदेखकर खुशीहमारे हुपनयन ॥ भंगरंग धीपटैहै वारणाऔर
 बोले हैं मधुरबचन । सबकी मनसा पूरणकरती कोई को नहीं
 फेरे खाली । सभीपदार्थहैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥ ५ ॥

हरि प्रथमबजाई जब बसुरी राधावर कुंजविहारी ने ।
 धनिसुनत अचानक उठिधाई तजि काजसकल बजनारी
 ने । पड़ीभनक श्रवण बुरलीकी जब सब सखियां उठि
 धाय चलीं । कोउ एकदृगमें सुरवादकर कोउ एककर मँह
 दीलाय चलीं । कोउ आधीसार तनहांके कोउ योवन
 खोलि दिखाय चलीं । कोउ के आधेदातन मिस्री कोउ
 आधाशीश गुंथाय चलीं ॥ कोउ लट लटकायली लटपट
 लज्जातजिसकल बिचाहीने । धनिसुनत अचानक उठि

धाई तजिकाज सकल व्रजनारीने ॥ १ ॥ कोउ पांयनेबांधे हूँ
 ची कोउ हाथन पायल डोलवलीं । कोउ कण्ठमें धारेकिङ्कि
 णिको और कोउकटिपहिने मालवलीं ॥ कोऊके कानननथु
 नी लटकन कोउखोलेशिरकेवालवलीं । कोउके नाकन बा
 ली झुमकेहैं जोवलींतोसबवेहालवलीं ॥ जब पहुंची कृष्ण
 निकट युवती तबहीं लखा गिरधारी ने । धनि सुनत
 अचानक उठधाई तजिकाज सकल व्रजनारी ने ॥ २ ॥ फि
 र बोले कृष्ण कौनहो तुम कैसे तुमने शृंगार किये । पांय
 न पहुंची हाथन पायल और कटिमुक्ताके द्वार किये । का
 ननमें नथुनी और लटकन ये भूषण बिना विचार
 किये ॥ नाकनमें वाली और झुमके काहे तुमने व्रजनारी
 किये । ये सुनत वचन तब दिया ज्वाब व्रजकी युवती दो
 वारीने । धनि सुनत अचानक उठिधाई तजिकाज
 सकल व्रजनारीने ॥ ३ ॥ जब तनकी सुधि कुञ्जनाहिरही तब
 भूषण कौन सुधार चले । मनतो अटका इस बंसुरी में
 दृगसे अँसुवनकी धार चले । ऐसा राग बजावो रासकरो
 ऐसा कोउ नहीं बिहारकरे । मंझधारमें नावपड़ी हमरी
 तुम बिनको बेडापार करे ॥ तुमपाति हमरे हम दासी सब ये
 दिया ज्वाब दुखियारी ने । धनि सुनत अचानक उठिधाई
 तजिकाज सकल व्रजनारीने ॥ ४ ॥ लखिप्रेम सकलव्रजब-
 निता फिर कृष्णने मुरली अधरधरी । मोहनभी वादिन
 मोहिगये बहतान जो निकली रागभरी ॥ तनमनकी सुधि
 कुञ्जनाहिरही जब श्रीराधेपर दृष्टिपरी । कहैं काशोगिरि
 बोलो सन्तो जय कृष्ण राधिका हरी हरी । ऐसी लीला
 नहिं करी कोउ जैसी करी हरि अवतारी ने । धनि सुनत

अचानक उठिधाई तजिकाज सकल ब्रजनारीने ॥ ५ ॥

हरि बैसुरी ध्वनि सुन ब्रजयुवती चली भुण्ड के झुण्ड मग
नमनकर । धन धन्यहरी धन धन्यसखी धन धन्य बैसुरी तन
मनलियोहर । मन प्रेम प्रबल अति तन सुन्दर सब वेद श्रुति
अस गुणगावें । तजलाज सकल गृहकाज छोड़ चली हरि
पदपंकज मनभावें । हरि आनन चन्द्र चकोर सखी छवि नि
राखि निराखिकर सकुचावें । कुछकहि न सकैं चितकी बतियां
अति लज्जित मनमें मुस्कियावें । अति व्याकुल गात मद
न मदकर सखि चाहत मिलें मनोहर बर । धन धन्य हरी धन
धन्यसखी धन धनबैसुरी तन मन लियोहर ॥ १ ॥ मनकी बां-
छालाखि मुरली धर ब्रजयुवतिन संग बिहार करें । एक एक
हरी एकएक सखी एक एकके कर एक एक पकरें । एकएक
मुरली दई गोपियन को हरि कहत बजावो तबहि बरें । ये
प्रेम कथा सुनि हँसि हँसि करि मुख धरत न बजत प्राण बि-
खरें । कहें ब्रजयुवती हम कीन्ह कहा अब तुमही बजावो
नट नागर । धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बैसुरी
तन मन लियोहर ॥ २ ॥ एक एक तरबर तर एक एक हरी
एक एक युवती संग बातकरें । इत घर आवैं यशुदा के
पास उत गापियन बीच प्रभातकरें । हरी ठीठ पकड़ कर
मुखधूवें और बातसखी सकुचात करें ॥ यहिभांगत बर बि
नती करकर बिधना नित ऐसी रातकरें । युवतिनके जो
पति आवत सब गृहपावत अपनी पत्नी घरघर । धन
धन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बैसुरी तनमन लियो
हर ॥ ३ ॥ शिव नारद आदि सकल ऋषि मुनि सब देखत

गगन विमानधरे । कौतुक गिरिवर के लख न परें तन मा
नुष ब्रह्म अखण्डतरें । युवती तन नारी वेदश्रुति रवि लीला
ब्रजमें खेलकरें । हरि पुण्य पाप न दुख सुख कछु वेदान्तके
करतावेदपरें । रविछन्द यह काशीगिरि अस्तुतिकर मांगत भ
क्तिप्रदार्थ वर । धनधन्यहरी धनधन्य सखी धन धन मैं
सुरी तन मन लियाँ हर ॥ ४ ॥

किसीका बाना कलंगीतुरी ये नहीं गानाहै । फकत देखलो
यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै । कम अकलेंगे कम अकली
कर माया कलंगी बनाई ब्रह्मको तुरी जौन कहते बहतो हैं
सौदाई । माया तो है निराकार नहीं देय किसीको दिख
लाई । वोही ब्रह्म है कि जिसकी थाह किसी ने नहीं पाई । तु
रैवाले कहते हैं कलंगीको तुरेकी लुगाई । कलंगी वाले कहें
तुरेकी कलंगीई माईयेतोहैं सब झूठ हमने सच्चेको पहिचाना
है । फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै ॥ १ ॥ क्या
गाते पाखण्डीको कलंगी तुरीभी भिट जावेगा । अनचड़ छ
त्तर और डुंडाभी कोई नहीं गावेगा । माया ब्रह्मकी निन्दा
करते फिर पीछे पछतावेगा । लख चौरागी योनिसे तब कहीं
कौन बचावेगा । शिव शक्ति को एक सप्रज्ञता बड़ ज्ञानी
कहिलावेगा । भवसागर के पारहो परमधाम को पावोगी ॥
हमने उसका किया भजन तब अपने को पहिचाना है । फ-
कत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै ॥ रागरपूछो तौ
बानामेरा सातझीपहैं चौदहमुवन । नव अण्डहैं मेरे बाने में
जल अग्नि पवन । तीनलोक मेरे बानेमें सबसे न्यारा मेरा
बतन । अज्ञानी नहीं सुझे जाने अगर करे चाहे लाख

यतन । जिमको तुम कहतेहो शिव सो मेरा रूप है मेरा ही तन । अपने आपको मैठा जानूँ हूँ रहे मन सदा मगन । चाहै कोई माने नहीं माने हम को तो समझाना है । फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै ॥ ३ ॥ कोई बना हिंदू और कोई मुसलमान होकर बैठा । कोई फिरङ्गी बना कोई किरिष्ठान होकर बैठा । सबकी बात सुन सुन मैं कर बन्द कान होकर बैठा । अपना दिलतो मियां अब लाम कान होकर बैठा । एकान्त गिरि एकान्त में उसका धरके ध्यानहोकर बैठा । पक्षपातका मैं दिलसे तज गुमान हो करबैठा । बनारसी कहें एकनाम सोई मेरे मनमें माना है । फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गाना है ॥ ४ ॥

जिसने नहीं कुछदिया जहांमें मियांवह खाली हाथ चला। लुटाया जिसनेमाल वहमाल उसी के साथ चला । बलख बुखारेका वह बादशाह छोड़ सलतनत गदा हुआ । लुटे वह क्योंकर जा था उसका किस्मतें में बदाहुआ। गया विया बां को वह निकला नहीं दिलमें हैरतजदाहुआ ॥ जोकि कौल थारब्वसे किया वह उसमें अदाहुआ । नजर पड़ा सामान ऐ शइशरतका आगे लदाहुआ । कहाखुदा ने ले अब ये तेरेवा स्ते सदाहुआ । उसीका संगजाती है हश्मत जो भीरके जर को लादचला । लुटाया जिसने माल वह माल उसीके साथ चला ॥ ॥ ॥ जोकि शूम कज्जूसहै वह तो हाथ पसारे जाते हैं । पकड़मक्कल उन्हेंले यमके द्वारे जाते हैं । अग्नि खम्भ से बांधके बहकोडोंसे मारे जाते हैं । डरते रहियो यहां पर हम ये पुकारे जाते हैं ॥ खांय खिलावें देवें दिलावें वह नर तारे जाते हैं । भव सागर के पार

एक क्षणमें उतारे जाते हैं । भुक्ति मुक्ति पाता है वही जो देता
दिन औ रात चला । लुटाया जिसने माल वह माल उसीके
साथ चला ॥२॥ वीर विक्रमादित्य ने परस्वारथमें अपना नाम
किया । जैसा जिसने कहा वैसा ही उसका काम किया ॥ क-
हीं फकीरी करी कहीं पर उसने राज्य तमाम किया । पराये
दुःखको आप दुःख सह सह उसे आराम किया ॥ बहुत तप
स्या करी हरीका सुमिरण आठों याम किया । परस्वारथ
में नाम उसने अपना सरनाम किया । सखावत का बड़ा है
दरजा जो करता खैरात चला । लुटाया जिसने माल वह मा-
ल उसीके साथ चला ॥ ३ ॥ उसीके संग जाती है लक्ष्मी जिस
ने जरूरी लुटाया । इन हाथों से दिया सो आंखों के आगे
आया । क्या कोई ले गया यहां से और क्या कोई वहां से
लाया । जिसने पाया उसीने कुछ अपना देके पाया । देवीसिं-
हका छंद रंगीला कुल आलमके मन भाया । बनारसी ये कहें
मैंने सबके तई ये समझाया । कोई बला उठरातको थारो
कोई उठि परमात चला । लुटाया जिसने माल वह मा-
ल उसी के साथ चला ॥ ४ ॥

देहभाव गया छूट आतमारामको जब से पहिचाना ।
निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आनाजाना । अहम्
आतम स्वरूप है कुछ नहीं देहसे काम मेरा । शरीर तो है
जड़वस्तु चैतन्य आतमा नाम मेरा । रवि शशि अग्नि
आकाश से है परे निरन्तर धाम मेरा ॥ अनन्त अव्यय
अविनाशी अद्वैतरूप शिवराम मेरा । कायाकर्म का त्याग
के हमने सत्य आतमाको माना । निराकारमें निराकारहो
मिले छुटा आना जाना ॥१॥ जीव ब्रह्म एकी स्वरूप है पर-

हैं अज्ञानका भेद । आज्ञानी तो जीवबों और ज्ञानी बनता ब्रह्म
 अभेद । त्रयगुणसे जो रहित हैं उन १ कौन । वधी और को
 न निषेध । जो चाहे सो करे वो हैं वेदान्तके कथिता ग्रथिता
 वेद । चाहे वह बोले चाहे हँसे और चाहे लगे गानेगाना नि-
 राकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥२॥ आत्म सत्य
 और शरीर मिथ्या इस विधि करै है जिसके ज्ञान । वह प्रा-
 णी है आपी ईश्वर ब्रह्ममें उसमें भेद न जान । कामक्रोध मद
 लोभमोह अहंकार कपटतज मान गुमान । मिले ब्रह्ममें ब्रह्मरू-
 प होकरके सब छोड़ा अभिमान । ज्यों पानी से उठे बुलबुला
 फिर जल अन्दर सामाना । निराकारमें निराकार हो मिले छु-
 टा आना जाना ॥३॥ जलतरंग है एक नाम है दोइन को एकी जानो ।
 इसी तरहसे अपने जिवको परब्रह्म कर पहिचानो । जीव ब्रह्ममें
 भेद नहीं है वेदवाक्य सुन लोकानो । द्वैतभावदो छोड़रहो अ-
 द्वैत कहामे रामानो । काशीगिरि ज्योतिस्वरूपने तत्त्वज्ञान यह
 बाखाना । निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥४॥

द्रोपदी विपति में करुणा निधिको देरी । पति चली
 विपतिमें नाथ राखो पतिमेरी । इस दुर्योधन पापीने भला
 क्या कीता । करिकपटसे मेरे पाँचों पति को जीता । सब
 राज्यपाटहर लिया मुझे हरलीता । श्री कृष्ण तुम्हारी कहाँ
 गई वह गीता । क्यों मेरे काजको लगाई तुमने देरी । पति
 चली विपतिमें नाथ राखो पतिमेरी ॥ ५ ॥ अब मेरा चीर ऐँचने
 दुशामन आया । दुर्वासाजी के बरने शमा दिखाया ॥
 जब उस पापीने चीरको हाथ लगाया । तब श्री कृष्णने
 दिखलाई वह माया । ऐँचत ऐँचत लग गई चीर की देरी ।

पतिचलीविपतिमें नाथ राखोपतिमेरी ॥ २ ॥ ज्यो २ बहपापी
 चीरखीचताजावे । त्योंत्योंबह बढ़ताजाय नघटनेपावे । ये दे
 खदुष्टकोसारासिमाघबरावे । तिसरबहपापी मनमें दया न ला
 वे ॥ लगीधीरकीढेरी परढेरी बहुतेरी । पति चली विपतमेंनाथ
 राखोपतिमेरी॥ २ ॥खैचत खैचत बलथकत दुसासनहारा । तब
 श्रीकृष्णने मनमें यही विचारा ॥ लिया उम पापीकोपकड़हाल
 कहोमारा । येचीरक भीनहिंतुममेंजायउतारा ॥ कहैं मनमें द्रोप
 दीकृष्णमेंतुम्हारीचेरी । पतिचली विपतमें नाथराखोपति मेरी
 ॥४॥फिर चार हाथमे छोड़ा सब घनराये । औरनीचाशिरकर
 लिया बहुत शरमाये । द्रोपदीकी लज्जा रही कृष्णगुणगाये ।
 बहारेजो कोईछन्द ये सुननेआये । कहैंबनारसी करोकृष्णचंद्र
 की फेरी । पति चली विपतिमें नाथ राखो पति मेरी ॥ २ ॥

कान्हाने लटलट काके लटका लटका नया निकाला ।
 श्रीकृष्णकी अलकैं अलक केशोंसे शेष लजत धरणीध-
 र । घनघटा देखकर घटत निशा अति छकत कहतध-
 रणीधर । काळी काली लट कलाकैं चित हरत तकत
 धरणीधर । रसना सहसमुखमे रटत रटत दिन रात थकत
 धरणीधर । करमेगहिकर छिटछाई । नागिनी देखिलाह-
 राई । कालीने शंका खाई । लेखनी लेख ना लिखत अ-
 लक जद दिखत कृष्णकीआला । कान्हाने लः लटका
 के लटकालटका नया निकाला ॥ १ ॥ दृग चञ्जळ चतुरहरी
 के नेत्रलागत खञ्जनते नीके । करे लहर लकीरैं लाळ
 लगत कारे अञ्जनते नीके । गड़गये कलेजे ओषधायके
 चन्द्रकिरणते नीके । रमसागरते अतिसरस हरणाचित

लगतहारिने नीले । शरचलत नेत्रमे नीखे । जदलइतेदृगन
 ते दीखे । हरि वन्नि कैसे सीखे । कमकत हृदय दिनरैननयन
 ने अयन कलेजाशाला । कान्हाने लटलटकाके लटका लटका
 नया निकाला ॥ ३ ॥ आननकी पटदशलळा दन्तने ही लाल
 लजाये । दर्शन कारण पटदर्शन आसन त्याग त्यागकर आ
 ये । शकर इन्द्रादिक सहित चरणनंगे करारकेधाये । श्रीकृष्ण
 की लीला देखि छन्द आनन्दमे कथ कथगाये । तनुचन्दन
 हारबढ़ाये । अक्षनले शीश लगाये । हृदय चरणन चित
 लाये । नंदलाल कमककाल काट दिया अंतर का ताला ।
 कान्हाने लटलटकाके लटकालटका नयानिकाला ॥ ३ ॥ हरि
 निराकार निराधार चारकर त्रयकालके कर्ता । पटराग
 तीमरागिनी नारायण तीन तालके कर्ता । सच्चिदानंद
 कालके काठ कालके कर्ता । हैं आदि अनादि अगाध
 कृष्ण अक्षय अकाठ के कर्ता । कहैकाशीगिरि हरीहर हरी
 हर दिनरैन ध्यान हृदय धर । रज चरणन की अंजनकर ।
 कहा अधरछंद धरध्यान ज्ञानदे दान नंदके लाला ।
 कान्हाने लटलटकाके लटका लटका नयानिकाला ॥ ४ ॥

श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ।
 अतिविचित्र लटकी लटकलटककर अमृत रसको चाखें ॥
 जो मर्ष ओस जिह्वासे चाटके प्राणको अपने राखें । शाशि
 मंडलकीसी शोभा उपमा वेदभी ऐसी भाखें ॥ राधे साखि
 यनसे कहैं धूमके मनको मेरे सुलाखें । मोहनी अलकनमें
 बसी । छविभांति भांतिकी फंसी ॥ मानों बने कृष्ण महेश
 पहनकर नागनकीसी माला । श्री गिरिधर ने लटकाली

लटकाली आननपर आला ॥ १ ॥ कोई बांधी में से लपक चले
कोई गिंडली मार के बैठे । कोई उगिल के मणीको खड़े और
कोई संगनारि के बैठे । कोईफणमे फुफुकार और कोई
केंचुली उतारके बैठे । मानों विष भरे भुजंग वह मलयागिरि
विचारके बैठे । कोई श्वेतलाल कोई पीले । रंग रंग के सर्प
रंगीले । रोली केसर चन्दन से चर्चि अद्भुत रंग निकाला ।
श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ २ ॥

उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कवि के कही न जावै ।
मानो कजली बनसे सुगन्ध नाना प्रकार की आवै । एक
तो मनउलझा काव्यमें दृजे कृष्ण की लट उलझावै । जो
कुंज कुंज में परदेशीभूला नहिं रस्तापावै । हारिकी लट भू
लनी वारी । भूले ब्रजके नरनारी । जो प्रेम जाल में फँसा
वहीं वह बसा न गया निकाला । श्रीगिरिधरने लटकाली
लटकाली आननपर आला ॥ ३ ॥ अतिउत्तम छवि अलकन की
सुन्दर श्याम घटासी दरसे । जब कृष्णकरे अस्नान तो मोती
झूम झूमके बरसे । वह घूंघरवाले केशद्योयचहुँदेश वसे अम्बर
से । अस्तुति करकरके थके शेष और महिमा को जी तरसे ।
जो इसपदको कोउगावै । वह भुक्ति मुक्ति सब पावै । कहै ब
नारसी भज रामकृष्ण गोविन्द और श्री गोपाला । श्रीगि
रिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ ४ ॥

शरीर से है भिन्न आत्मा सोहं आत्मराम । देह से
हमें नहीं कुछ काम जी । जैसे जलमें कमल रहे वह जल में
जलसे दूर । आत्मा ऐसे रहै भरपूरजी । आत्म तो चैतन्य
है और यह जडशरीर है धूर । आत्मा रहा सर्प में पूरजी ॥

दोहा ॥ शरीरकेहे रंग भिन्न भिन्न आत्मा एकही रंग । जो
 ज्ञानी एरुपकरै यह आत्म से सत्संग ॥ आत्मा परब्रह्म का
 नामजी । शरीरसे है भिन्न आत्मा सोहं आत्मराम । देहसे
 हमें नहीं कुछकामजी । १ ॥ त्रैगुणमेहै रहित आत्मादश इन्द्रोमे
 परे । आत्मा नहीं जन्म नहीं मरे । शरीरका दुखसुखहै आत्मा
 दुखःसुख कुछनहींभरे आत्मापुण्य पाप नाहिकरैजी ॥ दोहा ॥
 देहबढ़ै और घटैदेह होतीदुबली मोटी । रहै आत्मा ज्यों की
 त्यों नहिं होवे बड़ी नहिं छोटी ॥ दूरहै सबसे आत्मा धामजी ॥
 शरीरसेहै भिन्न आत्मा सोहं आत्मराम । देहसे हमें नहीं कुछ
 कामजी ॥ २ ॥ देहमिले मिट्टीमें औरयहदेह अगिनमें जलै आ
 त्मानहीं जलैनहीं बलैजी । दह पवनमे सूर्ख और यहदेह जलै
 अन्दरगलै आत्मा नहीं किसीमें रलैजी । दोहा ॥ अखण्ड अ
 व्यय अविनाशीहै आत्मा आदि अनाद । नहीं शस्त्रसे छिदे
 नहीं कुछ इसमें बाद विवाद ॥ आत्मा कृष्ण आत्मा
 रामजी । शरीर से है भिन्न आत्मा सोहं आत्मराम ।
 देहसे नहीं हमें कुछ कामजी । ३ ॥ गीतामेंहै लिखा श्रेष्ठ है
 सबमें आत्मज्ञान । ध्यान में यही बडाहै ध्यान । शरीर
 का अभिमान तजै जो बने आप भगवान । होय एक
 क्षणभरमें कल्याणजी ॥ दोहा ॥ पानी का बुलबुला फूट
 जैसेहोता पानी । मिलै ब्रह्ममें ब्रह्म रूप हो करके नरज्ञानी ॥
 छन्द काशीगिरिके सरनामजी । शरीर से है भिन्न आ-
 त्मा सोहं आत्मराम । देहसे नहीं हमें कुछ कामजी ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण शिव एक रूपहैं रहते एकीसंग हरीहर दोनों
 हैं अर्द्धग भला । आधा अंगहै श्रीकृष्णका आधा शिव

का जान कहाये परम पुरातन ज्ञान भला । कृष्ण करें शिव
का सुमिरण शिवधरें कृष्णका ध्यान आत्मा एक एक अ-
स्थानभला ॥ दोहा ॥ शिवजी साधैयोग कृष्णजी करें भोग
विलास । योग भोग दोनों यकी दोनोंका ब्रह्म में वाम । वो
पहिने भूषण वो रहें नंग भला ॥ १ ॥ कृष्णपैदें गीता और शिव
जी पदैं आप वेदान्त । वो करते क्रोध वो रहते शांत भला ।
कृष्णकरें क्रीडा ब्रजमें शिव रहें सदा एकांत । दोनोंकी सुन्दर
शोभा कांतिभला ॥ दोहा ॥ शिवका सुमिरण करते करते
कृष्णजीहागये श्याम । शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं
कृष्णकानाम । ऐमानहीं कोई का सतसंग भला ॥ २ ॥ कृष्ण
बजावै मरली मुखधर शिवजी गातेगान । निकले दोनों में
एकीतान भला । कृष्ण भरें भण्डारजक्त के शिव देते बरदा
न । करें दोनों जनका कल्याण भला ॥ दोहा ॥ कृष्ण करें
वैराग्यतीव्र और शिव धरें सन्यास । वो उनके सेवक होंगे
और वो हैं उनके दास । करे राक्षसों को दोनों दंग भला
॥ ३ ॥ कृष्ण सोवते शेषकी शय्यापर करके आराम । करें शि
व मसान में विश्राम भला । कृष्णकरें शिवकी सेवा शि
व करें कृष्णकाकाम । रटो दोनोंको आठोंयामभला ॥ दोहा ॥
शिव पूजें कृष्णके चरण करें कृष्णलिंगपूजा । हरीहर आत्म
एक मूर्ती और नहीं दुजा । उनके शिर मुकुट उनके
शिर गंगभला ॥ ४ ॥ त्रैगुण से शिर रहित कृष्ण हैं तीन
लोकमें परे । भजो चाहै हरिकहो चाहै हरेभला । शिव
ने त्रिपुरासुरको मारा कृष्णसे कौरव मरे । दोनों ये कोई
से नहीं डरेंभला ॥ दोहा ॥ शिवके संगरहैं सदा योगिनी

और भूत बैतालाकृष्णलिये ग्वालिन संग में ब्रजक सारेगवा
ल । वह पिवें दूध वह पीवें भंग भला ॥५॥ कृष्ण बने गौराजी शि
वजी बने लक्ष्मी आप । उनको पुण्य न उनको पाप भला ।
कृष्ण हरें वाधा तनुकी शिवदूरकरें संताप । मेरामन दोनों में
रहा व्याप भला ॥ दोहा ॥ कृष्ण बने नंदीगण शिवजी गरु
डरूप लिये धार । वह उन पर औ वह होते उनपर अस
वारा ॥ ये दोनों एक हैं और बहुरंग भला ॥६॥ कृष्ण पार्थिव पूजें
शिवजी पूजें शालग्राम । बना दोनों का सुन्दर धाम भला ।
शिवकी कारी बसो बना श्रीकृष्णका गोकुलग्राम । देवीसिंह
दोनों का लैना नाम भला ॥ दोहा ॥ शिवका शिवालावना
कृष्णका है ठाकुरद्वारा । बनारसी यह कहै मुझे दोनोंका ना
म प्यारा । उठी है मनमें यही तरंग भला ॥७॥

वही लक्ष्मी वही गौराजी चारवेदमें देख । शक्ति है एक
जुदे दो बेष भला । विष्णु के संग रहैं सदा लक्ष्मी शिव के
संग रहैं पार्वती । लक्ष्मी नहिं जाय दोनों की गति भला ।
लक्ष्मी के पति इन्द्रजीत हैं गौरा के पति यती । लक्ष्मी
कुमारगौरासती भला ॥ दोहा ॥ लक्ष्मी को चढ़ें पुष्प और
गौरा को चढ़ें बेलपती । उनकी बुद्धि निर्मल है और उनकी
हैं मती सुमती । रूप दोनों का अलख अलेख भला ॥ १ ॥
लक्ष्मीके मस्तक पर सोहै सुन्दरबेदीमाल । गौरि के मस्तक
चन्द्र विशाल भला । लक्ष्मी के उर पड़ा हार है जिसमें
मोतीलाल । गौरिके कण्ठ मुंडकी माल भला ॥ दोहा ॥
लक्ष्मी के दोनों करमें हैं कड़े जड़ाऊ पड़े । गौरि के कर
सोहैं कंगन दोनों के हैं भाग्य बड़े । लिखी बिधनाने ऐसी

रेखाभला ॥ २ ॥ लक्ष्मीके सेवकहैं सो सेषक ते सुन्दर भांग।
गौरिके सेवक साथैं योगभला । लक्ष्मी को जो सुमिरैं उमको
कभी न व्यापै शोग । गौरिको भजै सो रहै निरोग भला
॥ दोहा ॥ क्षीरसिन्धुमें बसै लक्ष्मी नारायण के पास । गौ-
रिसैं शिवसंग जहां सुन्दर पर्वत कैलाश । भक्तजन लेते
उन्हें परखभला ॥ ३ ॥ लक्ष्मीका शीतल स्वभावहै जल और
चन्द्रमाजान । गौरिको समझो अग्नी भानुभला । लक्ष्मी
केहैं पासमें हीरालाल मोतिनकी खानि । गौरिकीविभूतिहै
धनवान् भला । लक्ष्मीमें बसै गौरि गौरिमें करै लक्ष्मीबास।
सुनो इधरधर ध्यान तुम हमसे उनकी रास । हैं उनकी कुम्भ
और इनकी मेषभला ॥ ४ ॥ श्री लक्ष्मी पाहिने तनुके ऊपर
बस्तर लाल । गौरिजा ओठिरही मृगझाल भला । कहीं
भार्याबनी कहीं जननी हो करै प्रतिपाल । बनी कहीं
अन्तकालका काल भला ॥ दोहा ॥ ब्रह्म लिखते थके शे—
षजी ने नहीं पाया पार । बनारसी यह कहै कहूँ मैं कहाँ
तलक विस्तार । मुझे दोनोंकी भक्ती विशेष भला ॥ ५ ॥
शिव गौराको सब कोई कहते ये दोऊ उनके अंग ।
कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धगभला । आधे शीशपर जटा
औ आधे लटके लटकाली । आधे शिव आधे बनमाली
जी भला । आये मुख वेदान्त औ आधे वेदकी ध्वनि
आली । करैं आपुस में बोलाचालीजी भला ॥ दोहा ॥ कहैं
गौरिजा सुनो लक्ष्मी देखो पतिकारूप ॥ ऐसा रूप नहीं
देखाथा सो देखो आज स्वरूप ॥ आधे शिरमुकुट आधे
शिर गंग भला ॥ ६ ॥ आधे शीश पर चन्द्र और आधे

चन्दनकाहे खौर । धर मुखल और उधर हो चरभला ।
 आधे मुख माखन और आधे धतूरेका है कौर । आधा अंग
 श्याम आधा अंग गौर भला ॥ दोहा ॥ आधे अंग में भस्म
 लगी थी आधे लो सुगन्ध । आधा अंग है क्रोधवन्त और
 आधा है आनन्द । आधे अंग वस्त्र और आधा नभगला ॥ २ ॥
 आधे मुख मुरली बाजै आधे मुख बाजै नाद । न उनका अंत न
 उनका आदि भला । आधे मुख अमृत और आधे हलाहल
 का स्वाद । दूर करे क्षण में विघ्न बिख्यात भला ॥ दोहा ।
 आधे अंग में सर्प और आधे अंग में भूषण हेम । आधा
 अंग है कर्म रदित और आधे अंग में नेम । आधा ब्रह्म
 चर्य आधा सर्मग भला ॥ ३ ॥ आधे कमर में लँगोटा आधे क
 टिकछनी कसे । दोनों अंग एक अंग में बसे भला । आधा
 आसन गखड़पै आधा नन्दीगण पर लमै । यह शोभा देख
 मेरा मन हँसे भला ॥ दोहा ॥ अर्द्धस्वरूप है महाकाल औ
 आधा पालनहार । बनारसी यह कहै है उसकी माहिमा
 अगम अपार । देख सुर नर होगये दंग भला ॥ ४ ॥

घर मिलै उसे जो अपना घर खोवै है । जो घर रखै
 घर घर में रोवै है । जो राज्य तजै वो महाराज्य करता
 है । और जान तजै सो कभी नहीं मरता है । सुख त्यागै
 तो वह और का दुख हरता है । धन तजै तो फिर दौलत से
 घर भरता है । जो पलंग तजै वह फूलों पर सोवै है । जो घर
 रखै वह छे घर में रोवै है ॥ ५ ॥ जो परदारा को तजै वह
 पावै रानी । और झूट वचन में छोड़ सिद्ध होय बानी ।
 जो दुर्बुद्धी को तजे वही हो ज्ञानी । मनसा त्यागै तो मिलै

कृद्धिमनमानी । जो सर्वतजै उसको सबकुछ होवे है । जो घर रक्खे वह घरघर में रोवेहै ॥ २ ॥ जो कुछ इच्छा नहिं करै वह इच्छा पावै । और स्वादतजै तो अमृत भोजन खावै । नहिं मांगे तो फलपावै जो मन भावै । है त्यागमें तीनों लोक वेद यों गावे । जो मैला होके रहे वह दित धोवेहै ॥ जो घर रक्खे वह घर घरमें रोवेहै ॥ ३ ॥ जो पक्षपातको तजे वह सबको जीते । औ कामतजे तो होग काममनचीते ॥ कहै देवीसिंह हरनाम जिन्हों ने छीते । उनको गोविन्द ने ब्रह्मलोकपुर दीते । अब बनारसी घरखोके ब्रह्महोवेहै । जो घररक्खे वह घरघरमें रोवेहै ॥

वह आपी आपहै एक और नहिं कोई । कहु कलंगी तुरी कहांसे आये दोई । वही ब्रह्मा विष्णु महेश वही है शक्ती । निश्चय कर मानो करो प्रेमसे भक्ती ॥ सुन किसी कि निन्दा मुझे भली नहीं लगती । हैं सबमें पूरणब्रह्म ज्योतिसी जगती ॥ क्यों झुठ्ठाद करकरके बुद्धी खाई । कहुकलंगी तुरी कहांसे आये दोई ॥ १ ॥ मायामें बसता ब्रह्म ब्रह्ममें माया ॥ है चारवेदने इसी तरह से गाया । माया से सृष्टी करी औ जक्करचाया ॥ मायाके बीच में कलंगी तुरी आया ॥ है ब्रह्मफूल माया उसकी खुशबोई । कहुकलंगी तुरी कहांसे आये दोई ॥ २ ॥ वही अलख निरजन निराकार अविनासी । है सबमें न्यारा सबवटघटका बासी ॥ वह बड़ी दूरपर वसै ओ सबके पास । जिसजिसने उसको लखा वही सन्यासी । क्यों निन्दाकरके पापकिगठरी ढोई । कहुकलंगी तुरी कहांसे आये दोई ॥ ३ ॥ कोई अनघड छत्तर दण्डा डुडुगावै ॥ जो पक्षपातको करे वह गोते खावै

कोईकतंगी तुराबहुते ख्यालबनावै । कहै देवीसिंह नहीं भेदज्ञा
नकापावै । कहै बनारसी यह सोहं पद से सोई । कहु कल.
गी तुरा कहाँमे आयेदोई ॥ ४ ॥

कहिं पुण्य करो तो बडा पाप होता है । कहिं पाप किये
से पुण्य आप होता है । कहिं अग्निमें रहके शीतलतनु होता
है ॥ कहिं जलमें बसके रूपअग्नि होता है । कहिं दुखमें सु-
खहो प्राणमग्न होता है । कहिं दान किये तो अतिनिर्धन हो
ताहै ॥ कहिं गा नोदेनेसे भी जापहोताहै । कहिं पापकरो तो
पुण्य आप होता है ॥ १ ॥ कहिं भूलजाय तो सवाविद्या आ
वै है । कहिं पढ़ै तो वह फिर सभीभूल जावै है ॥ कहिं प-
वन अहार होके सब खावैहै । कहिं भोगीहो जितइन्द्री क
हलावैहै ॥ कहिं अशीश देने से भी शाप होताहै । कहिं
पापकरो तो पुण्य आप होता है ॥ २ ॥

कहिं झूठ बोलके सच्चा कहलाता है । कहिं सत्य
वचन कह नरकबीच जाता है ॥ कहिं गुरुसे लड़केवल
फख पाता है । कुछ उसका भेद लखने में नहिं आता है ।
कहिं वियोग करके भी मिलाप होताहै ॥ ॥ कहीं पापकरो
तो पुण्य आप होताहै ॥ ३ ॥ कहिं दुर्बलजायके पर्वत लेय
उठाई । कहिं अति बलवान् से उठे न एको राई । कहै
देवीसिंह सच है उसकी प्रभुताई । अय बनारसी तेरी
गति लखी न जाई ॥ जो होताहै वह आपी आप होता
है । कहिं पापकरो तो पुण्य आप होताहै ॥ ४ ॥

सबके बीच में है और दिखाईनहिं दे गोविन्द । हुआ
दुनियांको मोतियाबिंदुजी । भीतरकी गई फूट देवाहर
से दिखलाई । कहै ये बापहै ये माईजी । मरजावै तो कोई

साथ नहीं चलै नहिं चलै बहिन भाई । या चाचा हो या हो
 ताईजी झूठबात नहीं कहते बोले सत्य बचन येरिन्द ॥
 हुआ दुनियांको मोतिया बिन्दुजी ॥ १ ॥ अरेमूढ़ अज्ञानतृ क्यों
 भटके हैं चारो धाम । तेरे घटमें आतमारामजी ॥ उन्हें
 तृ क्यों नहिं देखे जो हृदयमें करे विश्राम । नाम जपैतो तेरा
 हो नामजी ॥ घटमें आतमा सुझपड़े नहीं योंही योंही गंवाई
 निन्द । हुआ दुनियांको मोतिया बिन्दुजी ॥ २ ॥ गोदी में
 लड़का औं टिंढोरा शहरमें फिरवाते । मुसल जो है वही हम
 गातेजी ॥ इसीतरह से घटमें हर बाहर खोजन जाते । मिलै
 नहीं उलटे फिर आतेजी ॥ मुसलमान मक्केजी भटके हिन्दू भटके
 हिन्द ॥ हुआ दुनियांको मोतिया बिन्दुजी ॥ ३ ॥ जगन्नाथ औं बट्टी
 नाथ सब हमभी फिर आये ॥ कृष्ण इस हिरदयमें पायेजी ।
 देवीसिंहने ज्ञान ध्यान के सदा छन्द गाये । रागके चरण
 चित्त लायेजी ॥ बनारसी ने ज्ञान दृष्टि से दिया जक्त को
 निन्द ॥ हुआ दुनियांको मोतिया बिन्दुजी ॥ ४ ॥

जो चाहै सो करै प्रभू उसकी गति लखी न जाय ।
 कर्म के लिखे को देय मिटाय जी ॥ कितने ही मरगये तो

कंचन बने जो उसको पारस देउ छुवाय । कर्मके लिखे को देय मिटायजी ॥२॥ विधवा होय सुहागन उपजै पुत्र सो करै सहाय ॥ आगिको पानी देय जलाय जी । भूखा भो जन नहीं करै औ पेटभरा सब खाय ॥ शेर को भेड़ी देय भगायजी ॥ भृंगी कीड़े को अपने सम लेता आप बनाय । कर्मके लिख को देय मिटायजी ॥ ३ ॥ मार्कण्डेयजी बारह वर्षकी आये उपर लिखाय । लिखी विधना ने बहुत धित लायजी ॥ सोती होगये चिरंजीव मैं सत्य सत्य कहूँ गाय । प्रभुके आगे कर्म लजायजी ॥ बनारसी कहै नरसे प्राणी नारायण होजाय । कर्म के लिखे को देय मिटायजी ॥४॥

मनपतङ्ग बढ़ गया सन्तका घूम रहा चहुँओर ॥ काल के ऊपर कर्ता जोरजी हवाजाय पश्चिमको तो यह पूरबको जावै ॥ हवाके बशमें नहीं आवैजी । पवन जो दक्षिण जाय तो यह उत्तर की सुधि लावै ॥ किसी से ज़रा न भय खावैजी ॥ दोहा ॥ सातद्वीप नवखंड औ चौदह भुवनों में फिरता । जहांचाहे जहांजाय गिराये किसी के नहीं गिरता ॥ तीनों लोकोंमें करता शोरजी । मन पतङ्ग बढ़गया सन्तका घूमरहा चहुँ ओर । कालके ऊपर कर्ता जोरजी ॥ ५ ॥ चाहै जबले उतार औ चाहे जब दे चढ़ाय ॥ उड़ावै योगी ध्यान लगायजी । जहां कालका गुज़र नहीं है वहां ये तुम्कल जाय ॥ तयारकी अद्भुत लेख लगायजी ॥ दोहा ॥ लगी इसमें अद्वैत की जोड़ी ठंडा ठीक खिला । और कोई नहीं रंग है इसमें निर्गुण रंगमिला ॥ दबै नहीं कहींपर इसकी कोरजी । मन पतङ्ग बढ़गया सन्तका घूमरहा चहुँओर । कालके ऊपर कर्ता जोरजी ॥६॥ कृष्णनामकी लगाई कंझी कभी न कभी

लगे।सातवें अकाशपर जगमगैजी । ब्रह्मपुत्रल्लेसे डरडर पापी
 कनकवैभगे । गये बहयमके लोफमें ठगेजी ॥ दोहा ॥ ज्ञान
 कागोला ध्यानकामांझा ज्यों खांडेकी धार । सदगुरु की सह
 लगी तो होगये भवसागरकेपार । नट्टे सत्तशब्दकी डोरजी
 मन पतंगबढगया संतकाधूमरहा चहुँओर । कालके ऊपर क-
 र्ता जोरजी ॥३॥ शुद्ध आत्मा बनायह तुक्कल चौथेपदखड़ी ।
 हैमहिमा इस तुक्कल की बडीजी । पुण्यपापसे अलगहे यहनहीं
 नर्मनहींकड़ी । काटाउसको जो इससे लडीजी ॥ दोहा ॥ देवी
 सिंह यों कहै जो इसके पेचमें कोई आवै । झटपटले लपेटखी
 च अपनेवरमेंलावे । कह छन्दबनारसी चित्तजोरजी । मन प-
 तंगबढ गया सन्तका धूमरहाचहुँओर । कालके ऊपर कर्ताजो
 रजी ॥ ४ ॥

ग्वालिनसे कृष्णजी कहैं मधुर बोली में । यह कहा चु-
 राये जातहौ तुम चोली में ॥ गई दधि बेचन यह कहां से
 गठरी पाई । इसमें मोहि मोती माणिक दे दिखलाई ॥ यह
 सुनत वचन तबतो ग्वालिन मुसुक्याई । और लगी
 गालियां देने बहुत रिसाई ॥ मत बोलो ऐसा वचन मेरी
 टोलीमें । यह कहा चुराये जातहौ तुम चोलीमें ॥ १ ॥ फिर
 कहैं कृष्ण तुम हमको तनक दिखाओ । जो चोरीनहींहै करी
 तो क्यों शरमाओ ॥ योंकहैं ग्वालिनी हटो उधर को जाओ ।
 कतकरो हँसीकीबात न मोहि लजाओ ॥ फिरकहैं कृष्ण
 अपनीबतियां भोली में । यह कहा चुराये जातहौ तुम चो-
 ली में । २ । उस वक्त कृष्णने ऐसी मोहिनीडाली । ग्वालिन
 मदमें भईचूर न बोली चली ॥ सब खोलि के अगिया उस

की देखी भाली । दोनों कुच लीन्हे पकड़ हँसें बनमाली ॥ नि
त ऐसी लीला करें कृष्ण होलीमें । यह कहा चुराये जातहौतु
मचोलीमोशथी यही इच्छा खालिनकी कृष्ण मिलजावें । औ
पकड़के बहियां मोको गले लगावें॥ कहैं देवीसिंह जो कृष्णकी
अस्तुतिगावें । वह जीतेहीजी जीवन्मुक्ति फलपावें ॥ कहैं ब
नारसी क्या है अंगिया पोली में । यह कहा चुराये जातहौ
तुम चोली में ॥ ४ ॥

नहीं मेरा यह शरीर है नहींहै मुझको दुखदुन्द । मेराहैरूप
सच्चिदानन्दजी ॥ नहीं लोभ नहीं मोह नहीं बुद्धि नहीं अह
ङ्कार । नहीं आचार औ नहीं विचारजी ॥ नहीं रात नहींदिन
नहीतिथिवडी लग्ननहींवार । नहींहै अपना पारावारजी ॥ न
हींऊजडनहींजंगल नहीं वस्ती कुटुम्ब घरवार । नहींदारासुत
नहीं परिवारजी । दोहा । नहीं शीश नहीं मुख नहीं जिह्वा
नहीं बाणी नहींहाथ । नहीं उदर नहीं लिंग चरणनहीं नहीं
वर्ण नहीं जात । नहीं वेद नहीं शास्त्र नहीं श्लोक नहींपरब्र
न्द । मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी । १ । नहीं काम नहीं क्रोध
नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान । नहीं कोई मन्त्र तन्त्र नहीं ध्या
नजी ॥ नहीं नेम नहीं संयम पूजानहीं तीर्थस्नान । नहीं व्रत
होम यज्ञ नहीं दानजी । नहीं योग नहीं भोग नहीं संयोग
मान अपमान । नहीं बनवासी नहीं स्थानजी । दोहा । न
ही सीधा नहीं मोल नहीं दुबला औ नहीं मोटा । नहीं टेढ़ा
नहीं बड़ा बहुत नहीं मोटा नहीं छोटा । नहीं तुर्श नहींलौन
अलौना नहीं कडुवा नहीं कन्द । मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी
॥२॥ नहींसुखनहीं दुःखनहीं धनवान् नहीं कंगाल । नहींमंत्री

और नहीं भूपालजी ॥ नहींसिधु नहीं नदी नहीं है रूप वा-
वडीताल । नहींहै आकाश नहीं पातालजी । नहीं श्वेत नहीं
पीत नहीं है कपोत नीलालाल । नहीं है वृक्ष फूल फल डाल
जी ॥ दोहा—नहीं हीरा नहीं मोती माणिक नहींरत्नकी खान ।
नहीं खर्ग नहीं चक्र नहीं त्रिशूल धनुषनहीं बान ॥ नहीं जाग्र
त नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहीं बन्द । मेरा है रूप स-
च्चिदानन्दजी ॥ ३ ॥ नहीं त्रिपुण्ड्री नहीं वनखण्डी नहीं ब्रह्म
चारी । नहीं मुण्डित न जटाधारीजी ॥ नहीं अग्नि नहीं पवन
न पानी नहीं मीठा खारी । पशु नहीं पुरुष नहीं नारीजी ॥
नहीं शैव नहीं शक्ति नहीं वैष्णव नहीं आचारी । नहीं हल
का नहीं भारीजी ॥ दोहा—नहीं मिमांसक नहीं जैनी नहीं
उदासीन मतबाद । नहीं देव गन्धर्व यक्ष नहीं विप्रविख्यात ।
नहीं बिजुली नहीं घन नहीं तारे नहीं सूर्य नहीं चन्द्र ।
मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ ४ ॥ नहीं शिष्य नहीं गुरु न
माता पिता नहीं भ्राता । नहीं रिश्ता और नहीं नाताजी ॥
नहीं बैठा नहीं खड़ा नहीं आता है नहीं जाता । नहीं भूखा
है नहीं खाताजी ॥ नहीं लेय नहीं धरै नहीं देते नहीं दिला
ता । सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥ दोहा—नहीं कर्म की
रेख लेख नहीं नहीं पढ़ाजाता । नहीं मौन होरहे नहीं बोलै
नहीं बुलवाता ॥ नहीं पक्षी नहीं फेद कहै नहीं जाल नहीं
फर फंद । मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ ५ ॥ नहीं हिन्दू नहीं
मुसलमान याहूदी नहीं फिरंग । नहीं कोई रूप नहीं कोई
रंगजी ॥ नहीं धीन बांसुरी नहीं करताल ताल मृदंग ।
नहीं जलतरंग नहीं उपचंगजी ॥ नहीं कलंगी नहीं

तुरा नहीं अनघड डुण्डा नही चंग नही कोई संग है न
ही आसंगजी ॥ दोहा—आपी आप में आप है रहा आप
में व्याप । नहीं स्वर्ग नही नरकहै नही पुण्य नहि पाप ॥
बनारसी कहै रूप हमारा अखण्ड परमानंद । भेरा है रूप
सच्चिदानन्दजी ॥ ६ ॥

हैं उपरकुवा औ नीचे जिसके डोरी । पानी भरती पनिहा
रिन चोराचोरी ॥ डोरी के ऊपर घिरनी चक्कर खावै । वह
मधुरमधुर ध्वनि बोलै मोहि सुहावै । जबतक वह डोरी कुवां
से आवै जावै तबतक कुवां वह नही सूखने पावै ॥ उस कुवे
के ऊपर खड़ी हजारों गोरी । पानी भरती पनिहारिन चोराचोरी
॥ मुँहबंद कुवे का रहै औ पानी दरसै । वह देखै जिसकी
डोर लगी है दरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम न राखै घर
से । तब अमृतजलको छकै छुटै सब डरसे ॥ वह नित उठि
गागरिभरै बनी रह कोरी । पानी भरती पनिहारिन चोरा चो
री ॥ जब उलटा डोल वह जाय तो पानी आवै । फिर सींचै
अपना बाग अमर फल पावै ॥ हैं काहेका वह डोल औ कौन
बनावै । जो पूरा योगी होय तो मोहि बतावै ॥ उस कुये के
ऊपर नहीं चलै बरजोरी । पानी भरती पनिहारिन चोरा चो
री ॥ १॥ उस कुये पै गंगा यमुना सरस्वती हैं । औ महादेव
अविनाशी पार्वती हैं ॥ भोलानाथ चौरासी सिद्ध और बाल
यती हैं नानाप्रकारकी उसमें बेलपती हैं ॥ हैं राह वहां की
बहुतै सांकरखोरी । पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥
॥ २॥ लाखों पनिहारिन एक है ह्वां पनिहारा । उस
पनिहारे ने सबको भरदी धारा ॥ जिसने पाया वह नीर

तौ जन्म सुधारा । कहै बनारसी उसकी गाति अपरम्पारा । व
हन्हावे उसमें जिसका पंथ अघोरी । पानी भरती प-
निहारिन चोराचोरी ॥ ५ ॥

क्याही झलक दंदांमेंहुई प्यारे तेरे मुमुक्याने से । बर्कतड़
फनेलगा अखतररहे मुँहदिखलानेसे ॥ अजब तिलस्महुआ जा
लिम तेरे उसपानववानेसे । मरजं गौहर जसुरंद निकलपड़े
दर्शानेसे ॥ शफक्कादमफकहुवा बहुत फूलीथी वह सुखीपाने
से । अनारके भी दाने मौताज होगये दानेसे ॥ देखतेरेददां
कीझलक उठिगये लौलाल जमानेसे । बर्कतड़पनेलगी अ
खतररहेमुँहदिखलानेसे ॥ १ ॥ भूलजायजौहरी वह परख
ना रब औ फिरें दिवाने से । ददां तेरे देखपांय गर किसी
बहाने से । कितनेही गये डूब वह सागरमें भी गोता खाने
से।परनहींवाकिफहुये वहभी एमेदुर्दानेसे । सुखगया वदलहू
तेरे दांतों की सिफत सुनानेसे । बर्कतड़पनेलगा अखतररहे
मुँह दिखलानेसे ॥ २ ॥ शरामिन्दा होगयेजवाहर दांतोंकेचम
कानेसे) खूनउगलनेलगेहीरे क्याहोपछतानेसे ॥ देख मुरस्से
साज तो रहजाय अपनाकाम बनानेसे । यह वह जड़त है ज
ड़ी बस खुदाके हाथलगानेसे ॥ आजतुझे मिलगया मजा
इस हँसीमें तुम्हें हँसानेसे । बर्कतड़पने लगी अखतर
रहे मुँहदिखलानेसे ॥ ३ ॥ टुकडेहोयाकूत तेरे दांतों केरूबरू
आनेसे । करै चमेली बात यह अपने और बेगाने से ॥
पानननेभी पाई लाली उसमहालकाके खानेसे । इसी
बास्ते वह बस्ती में आये बीरानेसे । यहदन्दानिकले हैं
बेबहाखुदाके सुनो खजानेसे । बर्क तड़पने लगी अखतर

रहे मुंह दिखलाने से ॥ ४ ॥ बनारसाने कधा हाल यह अपने मन
मस्ताने से । इन दंतों में देखले खुदा मेरे दिखलाने से । थक जा
यगा औ नादां तू लामकान के जाने से । यही देखले नूर दंतों में
यार के आने से ॥ ऐसी सिफत दांतों की किसी से बने नहीं मेरे
जाने से । वर्कत डपने लगी अखतर रहे मुंह दिखलाने से ॥ ५ ॥

पान की लाली से बल झलक दंतों में तेरे लालों की
बनी । लाले बदर्शां देखकर जिसे खाय हीरे की कनी ॥
आज तू जो हंस के बोला तो दहन में वह दंत चमके ।
जिगर छिद गया हर एक गौहर का सुनो मारे गम के ॥
सुनते ही यकासिफत सूखकर होश उड़ गये शवनम के ।
क्या ताकत है मुकाबिल दंतों के अखतर दम के ॥ हर एक
जवाहर के ऊपर प्यारे तेरे दंत हैं गनी । लाले बदर्शां
देखकर जिसे खाय हीरे की कनी ॥ १ ॥ अगर चमेली को देखूं
तो उसका सुख लीवास कहा । मर जा टुकड़े हवा उसको
जीने की आश कहा ॥ झूठ नहीं बोळंगा सनम मुझ को
कोई का पास कहा । सब कहता हूं मुकाबिल दंतों के इ-
लमास कहा ॥ क्या ताकत गर इसके खूब चमक सकें
कोई और मनी । लाले बदर्शां देखकर जिसे खाय हीरे
की कनी ॥ २ ॥ इन्हें देखकर वर्कत डफती है वह आसमां के
ऊपर । सड़के करटूं शफक को भी इन दंतों के ऊपर ।
किसी से निशान कभी न दं नहीं लाऊं इसे जवां के ऊपर ।
दंतों तेरे झलकते हैं वह लामका के ऊपर । शायक तू पी-
से जो दांत तो दम में कर दें फना कनी । लाले बदर्शां
देखकर जिसे खाय हीरे की कनी ॥ ३ ॥ गर जो कोई याकूत कहै

तो जबांको उसकी कटवाऊं । अनार कै भी कहैं दाने तो
 काटके में खाऊं । और जो गौहरकी लड़ी तो उसको भी
 में छिदवाऊं । किसी से निस्वत नदं नहिं सुनूं न खातिर में
 लाऊं ॥ बनारसी गरकहै तो क्या दिलमें उसके अब यही ठ
 नी । लालेबदरुशां देखकर जिसे खायैं हीरेकी कनी ॥ ४ ॥
 कहर नाजो अन्दाज गजब है अजब हुस्न दमके दम-
 दम् । चालमें छल बल इशारे नहीं तेरे आफ़त से
 कम् ॥ गरचे हुस्न तेरे की सिफ़त कोई लाख तरह से करै
 रकम् । क्या ताकत है जो उसके हाथ से ठहरे लहेकौ
 लम् ॥ जाये ताज्जुबहै जलवा तेरा जलवेगर बना सनम् ।
 तेरे नूरसे हुआ कोह तूर में वह मूसा बेदम् ॥ हाथ मला
 यक मलें हरहरत खाखाके छुयें कदम् । जिनो वसर सब
 तेरी ताबेदारी करते हरदम् ॥ सरतापा तस्वीर खिंची
 कुदरत की तेरी बिना कलम् । चालमें छलबल इशारे
 नहीं तेरे आफ़त से कम् ॥ ५ ॥ शिर तेरा है हरशिर का सर
 दार तुहैं शाहे आलम् । उसके ऊपर ताज कलंगी औ छत्र
 छलके झमझम् ॥ जुल्फ़ मुसल सिंघ में वह पेंच है और
 तेरे हरबाल में खूम् । गोया नागिनी माहपर आई चा
 टन को शबनम् ॥ यामें जलवा को अब कहूं या लाभ अ
 लिफ़ या नसर नजम् । यामें उनको कहूं जुलमात याके
 जादुये सितम् । आगे लाखों तिलिस्महैं जुल्फ़ों में तेरे
 तेरी कसम् । चालमें छल बल इशारे नहीं तेरे आफ़त
 से कम् ॥ ६ ॥ देखतेरे माथेको फ़लकपर आफ़ताब खाता
 है शरम् । चीनजर्बी से किरन खुरशौद की कांपैं होके ब

हम् ॥ भिफतकरूं अबरूओंकी तो शम्शीरपर हो शम्शीरे
 अलम् । याके कमाहै बनी मुलतान्की याहै तेगे दुदम् ।
 मिजैतीर पै काहै या नशतरहै या वरखी बल्लम् । एक पलमें
 वह करें कतलाम करें एकपलसे रहम् ॥ तेरी नजर गर फिरै
 तो फिर होजाय कतल लाखों रुसतम् । चालमें छलबल इ
 शारेनहीं तेरे आफतसेकम् ॥३॥ चेहरा गोल अनमोल के जि
 स्से रश्ककमर को होवेगम् । चश्म वह नरगिस कवँल से
 खिलेहैगोया बागे इरम् ॥ देखके बैनीकी तेजीकी इरयक का
 हो नाकमें दम् । गज्जब फड़क है तेरे नथुनों की कहै किसतोर
 से हम् ॥ रुखसारों पर छुटा पसीना जैसे दोदरियाये अगम् ।
 बात बात में दिल्ली शीरी सखुन ओजबांनरम् । हरएक आ
 नमें जान निकालै अदाअजायब हुस्नयम् । चालमें छलबल
 इशारे नहीं तेरे आफतसेकम् ॥४॥ और जोकरूं तारीफतेरेदंदो
 की ए दिल जाने दिलम् । या वह गौहर है बेश कीमत
 याने हीराओंकी किसम् ॥ देखलबोंपर पान कि लाली ला
 लोंका रुतबा होरुम् । खाले जकन पर कर उगद सुरैया
 हुआ खतम् ॥ चाहे जनखदां देखके तेरी चाहमें डूना कुल
 आलम् । कदवह कयामत की जिस्से सरोंसही को हो
 मातम् ॥ गला सुराही दार औ सीना साफ आईनासा
 उत्तम् । चालमें छल बल इसारे नहीं तेरे आफतसेकम् ॥ ५ ॥
 दस्तबद्ध नाजुक गोल कलाई दिना हथेली में रहीरम् । देख
 वहसुखीखून दिल कितनों काहो दममेंदम् । नाखूवो गोया
 हिलाल औ मखमली मुलायम बना शिकम् । नाफ वह
 सागर कमर चीतेसी वह जानू नूरके थम् । देख झलक

कदमों की तेरे पैरोंमें आमकर पड़ा पदम् । बनारसी कहें
में आशिक तेरे नाम काहूँ हम दम् । नारंगीसी एडीतलुवे
मल्ले तेरे बाबा आदम् । चालमें छल बल इसारे नहीं
तेरे आफतसे कम् ॥ ६ ॥

कूचेजानाकी दिलपर गरजरा किसीके हवा लगी । रहानी-
मजां न उसको तावे उम्र तक दवालीगी । अदाहुवा जी जान
से जिसको प्यारीतेरी अदालगी । गदा हुआ वह इश्क की
जिसके दिलपर गदालगी ॥ मदा अनलहक कहूँ जबांसे मु
झे वह प्यारी सदा लगी । खुदी मिटगई खुदाकी याद दिलपर
खुदालगी ॥ चोट इश्क की जिसके दिल पर जरा लगी या सि-
वालगी । रहानीमजां न उसको तावे उम्रतक दवालीगी ॥ १ ॥
तिला कर दिया मिसकोखाकपा तेरीउसे यक तिला लगी ॥ दि
लादे अपनादीद तबीअत तुझसे ऐ दिलालीगी । सिलाय क्यों
कर जखम जिगर पर जिसके इश्क की सिला लगी । मिली
खाकमें खाकसारी जिसको कमिलालीगी ॥ इश्क के बीमारों
को और कोई दवा न तेरे सिवा लगी । रहा नीमजां न उस
को तावे उम्र तक दवालीगी ॥ २ ॥ बला करै दिन रात इश्ककी
जिसकेपीछे बला लगी । भलाहो क्योंकर वह जिसको तेग
इश्ककी बला लगी ॥ मलाकरुं तलुये तेरे मुझको यह चाह व
मला लगी । चलालामकांवाल कदमोंमें मेरे चंचला लगी ।
तूहै समांमें परवाना मुझको तो लौ तेरा वह आयलीगी ।
रहा नीमजां न उसको तावे उम्रतक दवा लगी ॥ ३ ॥ अथाह
दरिया इश्कका कहो इसको किसको थाह लगी । नथा इश्क
में वहइबा हरगिज इसकी नथालगी ॥ कहाब्द देवीसिंह

ने उन्हें इश्क की प्यारी कथा लगी। जत्थावाले हैं जो शायर उन्हें
बात यह यथा लगी। बनारसी को सिवाइ इश्क के और बात नहीं
रवाली। रहानी मजान उसको ताबे उम्र तक दवाली ॥ ४ ॥

रहे उभ्र भर दरियामें निकले तो खुश्क गौहर निकले ।
सद आफरी है जो मेरी चश्म में मोती तर निकले ॥ मिजै
की नौकों पर जिस दम वह अश्क हमारे तुल निकले ।
अजब ताज्जुब हुआ ज्यों खार के ऊपर गुल निकले ॥ च-
श्म हमारे उन्हें देखने को जो यह खुल खुल निकले । अश्क
जो गुलरू बनै तो दीदे भी बुबुल निकले ॥ गर निकले
इल्हास तो क्यों वह भी सुखे कंकर निकले । सद आफ-
री है जो मेरा चश्म से मोती तर निकले ॥ १ ॥ कहाँ मैं क्या
क्या तशबीह जो बन बन कर आँसू निकले । मैं बहदत में
किगोया करते बिहिश्त से चूनि निकले ॥ मैंने कहा ऐ अश्क मेरी
चश्मों से जिस तरह तू निकले । क्या ताकत है जो ऐसी
लड़ी बन के लूँ निकले ॥ कहा जवाहर निकले तो वह भी
श्यामल पत्थर निकले । सद आफरी है जो मेरी चश्म से
मोती तर निकले ॥ २ ॥ रोया फिराके यार मैं तो क्या क्या
अलक बन बन निकले । यकी यह हुआ कि दरिया इसी में
गंगोय मुन निकले ॥ और भी कुछ कहता हूँ सुनो इस जबाँ
से जो कि सखुन निकले । अब पुतालियाँ बनी तो चश्म
भी दासी बन निकले ॥ अश्क मेरे पुरआब हैं गौहर खा-
ली खुश्क जिगर निकले । सद आफरी है जो मेरी चश्म
से मोती तर निकले ॥ ३ ॥ फुरकते जाना में जो कभी हम रोते
जोरजार निकले । तार न टूटा हार से तोफा गुथा हार

निकलो॥क्या ताकत इस दरिया के गर बारसे कोई पार निक-
ले । बनारसी कहै जो निकले मगर तो हमी यार निकले ॥
और जो निकले रतन वह भी अशकों से मेरे बतर निकले ।
सद आफरीं हैं जो मेरी चश्म से मोती तर निकले । ४ ॥

तेग लगै तरबारलगै औ तीर लगै तो चैन पड़े । नैन
के मारे मारे तड़पते हैं कितने बैचैन पड़े ॥ एक झलक मृसा
को नजर गर पड़ी तो वह लगगई नजर । गिरा कोह पर
न उसको तनोबदन की रही खबर । जिसे इशारे रोज करे
वह क्योंकर उसका होवै गुजर । जिये किस तरे और फिर
मरे भला वह कहो किस पर ॥ दिलका हाल दिलही जानै
जो जरूम जिगर पर ऐन पड़े । नैनके मारे तड़पते हैं कितने
बैचैन पड़े । ५ ॥ तोप लगै बन्दूक लगै तो इसकी भी हो
दवा कहीं । अगर दुगाड़े नैन के लगै तो फिर वह बैचै
नहीं । बरछी से बचगये कटारीकी चोटें कितनों ने सही ।
नोक पलक की जराभी चुभी तो वह रोदिये वहीं ॥ नीद
कहां आती है जागते होंगे तो दिन रैन पड़े । नैन के मारे
तड़पते हैं कितने बैचैन पड़े । ६ ॥ बांकमें है क्या बांक प-
ना और खंजर में वह आव कहां । चश्मके आगे दिखाई देहै
किसी का रुआब कहां । अगर नशेकी कहो तो देखी ऐसी
भला शराब कहां । मस्तानों से भी गर पूछौ तो आये
जवाब वहां । लाखों दल कट जाय मेरे कातिल की जि-
धरकोसैनपड़े । नैनकेमारे तड़पते हैं कितने बैचैन पड़े ॥ ७ ॥
वहहैचश्मखंरेज अब इनसे खून का दावा कौन करे । दार
में चढके बोला मन्सूर अबहम नहीं मरे । उसे मिले

दीदार जो आसक मस्ताने हैं सरसेपरे । बनारसी कहें हम सर
मदके पीरसुनहरे भरे ॥ शबरोज हरवक्तजबां से कहतेहैं यही
बैन पड़े । नैनके मारे तड़पते हैं कितने बैचेन पड़े ॥ ४ ॥

मनकोमारके बनाया मुर्दा जब यह तनु आबाद किया ।
पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया । ब-
स्तीकां समझें उजाड सहारा औ बन आबाद किया ।
मालखजाना तर्ककर फकरकाधन आबाद ॥ किया ॥ लामें
शोलेनूर के अपना जलाके मन आबाद किया । आह से
अपना मेहर औ चरख को हन आबाद किया ॥ जिसे कहें
वीराना सब मैंने वह वतन आबाद किया । पहन के कफ-
नी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ १ ॥ गुल खाबा
गुलबदनपै मैंने वह गुलशन आबाद किया । जिस गुल-
शन से गुलोंका हुस्न चमन आबाद किया ॥ कहके ज-
बांसे वह कुम्बेइजनी अपना सखुन आबाद किया ।
जिलाया मुर्दा हुकुमसे उसका कफन आबाद किया ।
जीतेजी जो मरा उसीने तो मुर्दन आबाद किया । पहन
के कफनी फकीरों ने तो कफन आबाद ॥ २ ॥ गम
खाखा इस दिलपर हमने रंजों महन आबाद किया ।
दीवानों को पढ़के दीवानापन आबाद किया ॥ तख्त स-
त्तनत छोड़ खाकपर वह आसान आबाद किया । जिस
आसान से इन्द्र का इन्द्रासन आबाद किया ॥ तर्क
किया दुनियां का रस्ता और चलन आबाद किया ।
पहनके कफनी फकीरों ने तो कफन आबाद किया ॥ ३ ॥
अशकसे अपने दुर्वेशोंने दुरे रतन आबाद किया । इश्क

म पैदा किया गम गमसे जश्न आबाद किया॥ जिसज! आश
क बैठरहे उसजा मसकन् आबाद किया । कहै देवीसिंह नाम
अपना रोशन आबाद किया ॥ बनारसी ने करके इश्क आश
कीका कफन आबाद किया । पहनके कफना फकिरीने तो
कफन आबाद किया ॥ ४ ॥

मेरी आहका तीरतोड गरदुंगोगयालामकांतलक । बेअदबी
अबबहुतसीहुई कहूँमें कहांतलक । हुआइश्क काजोर जबइस
दिल में तो मैंने आहकरी । सातोंफलक को चीरकर लामकां
की राहकरी ॥ वहांजो देखो नूरखुदा वो उसने पाके निगाह
करी । और जहांमेंनहीं फिरकिसी की मैंने चाहकरी ॥ आश
क सादिक नाम मेरायह रोशनहै कुल जहांतलक । बेअदबी
अबबहुतसी हुई कहूँमें कहांतलका॥१॥अजब मजापायाहै हम
ने अपनी आहसोजाकेबीचाहुस्न खुदाईदिखाईदहैमेरीजाकेबी
च ॥ नहींवह जलवा मुलकमेंदेखा और न हूर गिलमाकेबीच
नहीं मेहरमें नहीं वह झलक माहाबां के बीच ॥ मेरी
आह रोशनहै सातोंज्मी औ कुल आसमां तलक । बे
अदबी अब बहुतसी हुई कहूँमें कहांतलक ॥ ३ ॥इसी आह
से इश्क यह पैदाहुआ और आशक नाम हुआ । इसी
आहसे जहांमें सारे में बदनाम हुआ ॥ इसी आहसे हुआ
सखुन मस्तानी मस्त कलाम हुआ । इसी आहसे वह
पैदा भये वहदताका जामहुआ । मेरी आहहै लिखी देख
लो जाके कलमेकी राहतलक । बेअदबी अब बहुतसी
हुई कहूँमें कहांतलक ॥ ३ ॥ इसी आहसे कुफुलतोडकेका-
फरका माराहमने । इसी आहसे किया दुश्मन पारा पारा

हमने ॥ इसी आहसे पाया वह दिल में दिलवर प्यारा
हमने । इसी आहमें करा दिया फनारंज सारा हमने ॥ बना
रसी कहै जहां वह कहै मेरी आह है वहां तलक । बेअ-
दबी अब बहुत सी हुई कहूं मैं कहां तलक ॥ ४ ॥

हम आशक हैं हमें छेड़ो छेड़के पछतावोगे तुम । आहसे गरदं
गिर पड़ैगा तो दब जावोगे तुम । गरम को छेड़ोगे तो न कले
गी इस दिलसे आगति से आह । आगल गेगी वह जिससे कुल
हान होवेगा तवाह । कहां भाग के बचोगे तुम फिर कहीं नहीं
पावोगे राह । हक कुलाये बातें हैं इसका है अल्लाही गवाह ॥ जि-
सने आशक को छेड़ा वह नहीं बचा हर गिज बल्लाह ।
कसम खुदा की बात यह कुल जहान में है अगाह ॥

शेर—तुम्हें बाजिबनहीं हैं आशकों की जार दिखलाना ।
जो होवे नातवा उसको न जोर औ शोर दिखलाना ॥
अगर तुम जोर दिखलावो तो फिर मत कोर दिखलाना ।
जो मांगै इश्क से मैदा तो उसको गोर दिखलाना ॥

आशके दिल को कभी सताने से न बैन पावोगे तुम । आह
से गरदं गिर पड़ैगा तो दब जावोगे तुम ॥ १ ॥ शबो रोज
हम आप मरे रहते हैं हिज्र गम के मारे । हमें सताना तुम्हें
नहीं वाजिब है मेरे प्यारे ! अभी आह गर करूंगा तो वर-
संगे फलकस अंगारे । कोई बचैगा नहीं मर जायेंगे कुल
बिन मारे ॥ मारे आह से डरें अवलि या पीर पैगम्बर भी
सारे । इसी वास्ते नहीं भरता हूँ मैं आहों के नारे ॥

शेर—अभी अगर उफर दूं कुल जहां पलमें उलट जाये ।
जमी ऊपर हो और ये आसना पलमें उलट जाये ॥

ये मोसम बस उलट जाये समापलमें उलट जाये ।

हरेकं दरिया उलट जाये तवां पल में पलट जाये॥

हम तो आपी जले हैं हमको और जलाओगे तुम । आह से
गर्दगिरपड़ेगा तो दबजाओगे तुम ॥ २० ॥ छेड़ो शम्स तब रेजका
वह मुल्तान अब तक जलती है । वहाँगे आतश देखलो अब
तक नहीं निकलती है । और छेड़ो सरमर को दिल्ली इधरसे
उधर उबलती है । आओ सगद के आगे रुस्तमकी नहीं
चलती है ॥ मेरी जान मेरा शरीर शान आतश अबतक बल-
ती है । काफर को ये लम्बा देती है और मुझको फलती है ॥

शेर-निकाहूँ छिड़ में मेरा पारव अपनी आह सोनां को॥

जुआ डाले हजारों कोमतक जंगल बियाबां को ॥

करूँ गै खाक मा इम आह मे बस्ती व वीरां को ।

क्यामत आह मे करूँ दिलाऊँ मैं वह तूफां को ॥

छेड़छाड़ गर करौंगे आशिक से तो बग-आँगे तुम । आह
मे गर्दगिरपड़ेगा तो दबजाओगे तुम ॥ २१ ॥ जिसने आशक
का छेड़ा फिर उमका घर आबाद हुआ । गया शहरको नहीं
वह दुनियाँ में आ-बाद हुआ ॥ दोजख उसको मिला और
वह इहिश्त में बेदाद हुआ । नाम उमी का जहाँ में काफर
और जल्लाद हुआ । यह मयुन आशिकों का इस परजिस
जिसका एतकाद हुआ । दोनों जहाँ में उसीका भला हुआ
दिल शाद हुआ ॥

शेर-सदा ये आशिकों की है भरा होवे भरा होवे ।

अदा पर उमका एदिल देविये किसादिन अदाहोवे ॥

उमी का नाम रोशन हो जो उलफतमें जलाहोवे ।

कहै ये खन्देरीमिह मेरा दिउबर खुदा होवे ॥

बनारसो यह कहै अगर नापाक इस्क गावोगे तुम ।

आह से गरहूँ गिर पड़ेगा तो दबजावोगे तुम ॥ ४॥

खुदा तू है बरहक तो मैं भी हक जबांसे कहता हूँ । आवजोत है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूँ ॥ अगर तू है आतश तो मैं भी उसीका अँगारा हूँ गा ॥ तिला जो तू है तो मैं जेवर तेरा प्यारा हूँ गा ॥ गरतू है सीमावतो मैं भी सनम पारा पारा हूँ गा । आह नतू है तो मैं भी वनातेरा आपा हूँ गा ॥ जो तू है दरियावतो मैं हवा मोजरवाहो बहता हूँ । आव जो तू है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूँ ॥ १ ॥ तुही तो दम में दम तो मैं भी आदम कहलाता हूँ । हुस्न जो तू है तो मैं जलवा तेरा दिखलाता हूँ । गरचेनू खामोश रहे तो मैं नहीं जबां हिलाता हूँ । तुही है मेरा तो मैं प्यारे अब तेरा कहाता हूँ । तुही नहीं गम खायतो फिर मैं जहामें किस की सहता हूँ । आवजो तू है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूँ ॥ २ ॥ तेरा नहीं कोई दीन तो मेरी जातका कौन ठिकाना है । तुझे न जानातो फिर मुझको किसने पहिचाना है ॥ तू है फखतो मेरा भी दिलफकीर तेरा दीवाना है । तू है लामका तो मेरे मकां को किसने जाना है ॥ तू है शामलिया शाहतो प्यारे में नरसी महता हूँ । आवतो तू है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूँ ॥ ३ ॥ तू है शम्श तो मैं भी शम्भ तबरेज जहाँ में आया हूँ । मुझ में तू है और मैं तेरे बीच समाया हूँ ॥ गरतू नापैदा तो मैं भी नहीं किसी का जाया हूँ । बनारसी कहै जो तू कुदरत तो मैं भी माया हूँ ॥ तुने पकड़ा हाथ मेरा मैं बाजू तेरा गहता हूँ । आव जो तू है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूँ ॥ ४ ॥

खुदा तू गर है इस्कतो मैं आशक हूँ हर नूरानी का । शान

जोतूहै तो मैं पुतला हूँ तुझ लासानी का ॥ गरतू राजानिहा
है तो मैं पोशीदा इसतनमें हूँ । तूहै गुलिस्तांतो तैंभी गुंवा
उसगुलशनमें हूँ ॥ तूहै चाह तो मैंभी डूबा प्यारे चाह जक
नमें हूँ । भला तू लौंछे तो मैंभी हरदम उसी लगन में हूँ ॥
तेरी नहीं तस्वीर मुझे खींचे यह नरुतबा मानीका । शानजो
तू है तो मैं पुतला हूँ तुझलासानी का ॥ १ ॥ तू है पाकतो
मेराभी दिल साफ मिसल आईना है । औ जान जो सृहै तो
मेरा दानाबीना है । बुलंदहै तू तो मेरा तेरे बाम पर जीना
है ॥ तू है मौज दरियातों में भी हूँ वह बुलबुला पानी का ।
शान जो तू है तो मैं पुतला हूँ तुझ लासानी का ॥ २ ॥
तू है खुदा तो मैंभी तेरेसे जुदा नहीं जीजान से हूँ । यकीन
तू है तो मैं साबित अपने ईमान से हूँ ॥ तू है दोस्त मेरा तो
मैं तेरा यार भी हरएक आन से हूँ । तू है तसव्वर तो मैं
भी पूरा अपन ध्यान से हूँ ॥ तू है लिवासे नंग शौकहैमुझे
तेर उरयानी का ॥ शानजो तूहै तो मैं पुतलाहूँ तुझलासानी
का ॥ ३ ॥ तूहै एक तो मुझसा दूसरा और जहां में कौनसाहै ।
कल्मा तू है तो मेरे सिवा कुरा में कौनसा है ॥ देवीसिंह कहे
वगैर तेरे मेरी जा में कौनसा है । नातवानी में और ताकतत
मामें कौनसा है । यही रुखुनहै बिदेआशके बनारसी हक्का
नी का । शान जो तू है तो मैं पुतलाहूँ तुझ लासानीका ॥ ४ ॥

तुलसिलाल याकूत की टहनी बर्गजमुरद मोती गुल्ल ।
फल लटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल ॥
शबनम् है इलमास कि उसके बर्गबर्ग पर पड़ी हुई । ह-

रैक शाख कुन्दन औ नीलम से हैं उसही बड़ी हुई ।
 जिसके हाथमें उस दरख्तकी एकटा पारन बड़ी हुई ॥
 सात बादशाह से भी वह बेमिसल उसकी बनी हुई । उस
 दरख्त के मेवे भी हरदम टाँके पौड़ी हैं कि मुल् ॥ फल
 टाँके मणियों के जिसमें जो देखे लें बुलबुल ॥ १ ॥ बनी
 मुरस्मेकी जमीन और फौवारें बिलौर के हैं । उस दरख्त
 के ऊपर बैठे हरेक जानवर नृ के हैं । फुनगी है पारस
 की उसमें रखवाले सब दूरके हैं । वह दरख्त नजदीक
 है उसके खरीदार सब दूरके हैं ॥ गोदा उनके बने वहां
 पर करो न जो कोई सोरोमुख । फल लटके मणियों के
 जिसमें जो देखे लेले बुलबुल ॥ २ ॥ उम दरख्त का हमने
 तो आवेहयात से सींचा है । बड़ी समकत करीरे अपनी
 करामात से सींचा है । कि तो से कुछ नहीं काम लिया अपनी
 ही जातसे सींचा है । क्या कोई तन हाथों की कौन धातु से
 सींचा है ॥ हुआ वह जब तैयार तो शेर बना मेरा ये दिल
 बुलबुल । फल लटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिलकुल
 ॥ ३ ॥ उस दरख्तकी साया में हम गान पसारे सोते हैं ।
 अगधे जायें कहीं तो फिर हम उनी पुरुषों को बाते हैं ॥ जहां
 पर अपना दिलचा है वैसा ही सजर सब होते हैं । बनारसी
 यह कहै कि उसपर कुरान पढ़ी सोते हैं ॥ उस दरख्त के
 हवा लगे तो जिगर की आँखें जाँचें खुल । फल लटके
 मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिलकुल ॥ ४ ॥

तुख खुदा और शाख पयगम्बर बर्ग आँलिया बली है
 गुल् । फलहैं फकीर उसमें पूरे फक न वह समझे बिलकुल ।

ऊपर उसका बीज है और नीचे जिसके लटक डाली । अख
 तरकी शवनमूहै उसके वर्गवर्गपर उजियाली ॥ माहो मेहर
 चौकीदेते दिनरातकरें हैं खयाली । नकशा उमका नबीन
 है जिनकी दोजदांमें है लाली । अपने अपने दीनके पक्षी
 करे हैं उसपर शोरोगुल । फलहैं उसमें फकीर पूरे फर्क न वह
 समझें बिल्कुल ॥ १ ॥ जमीन उसकी आसमान है जहां से
 ये कुल जहांहुआ ॥ वहांसे टपकानूर तो मैंभीआकर पैदायहांहु
 आ । फलहैं उसकी खुरावू जिसने पाई वह फिर निहां हुआ
 शरैहैं उसकी तरदतरहदारी से शजरवहश्चयां हुआ ॥ वहदत
 की लज्जत उसमें लेता है मेरा यहदिल बुलबुल । फलहैं उसमें
 फकीर पूरे फर्क न वह समझें बिल्कुल ॥ २ ॥ जड़ उसकी वा-
 बा आदम जिससे इस आदममें दमहै । साया उसकी कुदरत
 और आलम जिसका एक आलम है ॥ हवा है मामा हवा
 जिसे हूगई उसे फिर क्या गम है । याद इलाही जो कि
 करै वह इन बातों से ग्रहम है ॥ नजर उसी को आये
 जिसकी गफलत का परदा गया खुल ॥ फल है उसमें फ-
 कीर पूरे फर्क न वह समझें बिल्कुल । ३ ॥ सदा है उसकी
 कुरान् जिसने सुनी उसे फिर होश हुआ । दिलमें अ-
 पने गौरकिया कुछ समझके वह खामोश हुआ ॥ राज
 उसी को खुला कि जिसका जरा उधर को होश हुआ ।
 जहां से कुछ नहिं कहसक्ता जो दिलमें जुनू और जोश
 हुआ ॥ बनारसीवहैं उसके मेवेमें तो भारी है रहमका मुल
 फलहैं उसमें फकीरपूरे फर्क न वह समझें बिल्कुल ॥ ४ ॥
 बुरा किया तो भला हुआ चोरी करने से साह बने

गदा से होगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ जात से हो
 बेजात जो कोई तो उसका वह दीनबने । शकल शबाहत
 बिगाड़े तब चेहरा रंगीनबने ॥ इमानसे छोड़े इमान को पू-
 रा जभी यकीन बने । लौमें सोलै नूरके जलें तो वो लौ
 लीनबने ॥ जवांकटी तब बोलने लागे फूटे नयन निगा-
 ह बने । गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ १ ॥
 करके गौर देखा हमने तो आजाय से बड़ा सबाब बने । ला
 जबाब गरसनूमसे होतो खूब जबाब बने । मय वहदत कहतेहैं
 उसे जो अश्कसे मेरे शराबबने ॥ लज्जत शीरीमिले जब
 जलके जिगर कवाबबने ॥ बुतखानेसे बिहिश्त और मयखाने
 से दरगाहबने । गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने
 ॥ २ ॥ शिरको काटके अपने दस्तपर रक्खे तो सरदारबने ॥
 मालमुल्क सबतर्ककर बैठे तो जरदारबने । तायर दिल्को क-
 भी न उड़नेदेतो वह परदारबने ॥ जिन्दा उसको समझते हैं
 हम जो मुर्दार बने । चलन से जब वदचलन हुए तो लाम
 कानकी राहबने । गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्ला-
 हबने ॥ ३ ॥ जिसे कहैं सब हराम हमने देखा वही हलाल
 बने ॥ घोलके जिसने लगा लिस्याही वह फिर लाल बने ।
 जो कि हुये पैमाल जहां में वह साहने कमालबने । बना
 रसी के सखुन पर क्या ताकत कोई ख्याल बने । जमीं
 से होगये आसमान और अखतरसे हम माह बने ॥
 गदा से होगये बादशाह बन्दे से अल्लाहबने ॥ ४ ॥

मैं आशक हूँ रंजो अलम का गरये मेरे पास न हो ।
 मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो ॥

बेवैना से उल्फत है बेकली से याराना अपना । हिज्र है अपना दोस्त औ वतन् है बीराना अपना । आहकी नकदी पासमें है खाना है गमखाना अपना । जीना यही है किसीके ऊपर जीजाना अपना ॥

शेर-फुरकते यार बह क्या क्या मत्ते दिखाती है ।

बेकरारीही मेरे दिलको बहुत भाती है ॥

बस्ल होताहै जो धो बात चली जाती है ।

इन्तजारीसे यह तबिअत नहीं बहराती है ॥

रंगर्जद नहींहो अपना औ चेहरामेरा उदास न हो । मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आस नहो ॥१॥ जो आशक सादिकहै उनकी जीस्तजानका खोना है । यही खुशी है जो उसदिलबरकी यादमें रोनाहै । खाककेसोने से बत्तर पन्ना औचांदी सोनाहै । बजूसे बेइतर हमें अशकोंसे मुँहका धोना है ॥

शेर-पटक कै आंसू जो रुखसार पर ढलकते हैं ।

तौ मेरी आंखमें जौहर एक चमकते हैं ॥

ये मस्त दोनों हैं और दोजहांको तकते हैं ।

दीवानादीदके हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जोरजुल्म और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास न हो । मुझमरीजको तोफिरयकदम जीनेकी आस नहो ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इस खुने जिगरके पीनेसे । वाफिक हुआहूं मैं अपनी चाहके जरा करीनेसे । काम नहीं काशीसे मुझे नहीं मक्के और मदीनेसे । और न आरजू हमें मरने की न मतलब जीनेसे ।

शेर-आतिशे इश्कसे जलके जिगर तरहोता है ।

ज़रसाये से शवनम के ये ज़वर होता है ॥

औ बेखवरीसे दिलहर्गिज न सवर होता है ।

नफा है इश्क में यही जो जरर होता है ॥

गर्चे कल्ल नहीं होवै हमतो काम इश्कका रास न हो । मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आस नहो ॥ ३ ॥ दर्द है मारा दिलवरहै हरबक्त इसीसे यारी है । बेददोंसे भी अपनी कु छ नहीं गल्ल गुजारी है । सूलीपर मंसूर न वो अनलहक सदा पुकारी है ॥ जानगई तो बलासे नामतो उमका जारी है ॥

शैर-इश्कबाजी में अगर जानकी बाजी हो जाय ।

तो तबीअत यह मेरी खूबसा राजी हो जाय ॥

चाहैहमपर हो जफा या दगाबाजी हो जाय ।

रजामेंराजी है उमके जो वह राजीहो जाय ॥

बनारमी कहैं अगर्चे मेरा मुरशद देवीदास नहो । मुझमरी जको तो फिर यकदम जीनेकी आस न हो ॥ ४ ॥ कहा ये मुझमें रंजने गर्चे आशक मेरे पास न हो । तो दुनियां में आशकी आशकका फिर रास नहो । इश्क है मेरा मकां औ में रहताहू उसीके खाने में । वह नहीं आशक कि जिसके द-द न होवै सीनेमें । तीरमें क्या है छुत्क मजा मिलजाय जो निशानेमें । बस्तीमें नहीं गुजर आशकहैं मस्तबीराने में सूखगया मजनू औ वह ताकत बनीरही मस्ताने में । अब तक जिसकानाम राशनहै सुनो जमाने में ॥

शैर-है कहां तकलीफ व तलुबोंमें जो चुभतेहैं खार ।

हंस पड़ा मंसूर तो शरमा गई उस जायेदार ॥

रंजये कहताहै आशक वह करे जो जां निसार ।

हरकदमपर तीरहो परदिल मेंहों वह जिक्रयार ॥

चोट न आशकसहै औ अपना खूपीनेकी प्यास नहीं । तो
दुनियामें आशकी आशककी फिर रास नहीं ॥ १॥ दम्भर
काहै रंज औ फिर राहत है कयामन तक बाब । उठाले
शिर पर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या ॥ रंज यही
कहता है जो आशक पका हो तो इधर को आ । जुल्म से
मुतलक न डर और खौफ न अपने दिलमेंखा ॥ शिरकोका-
टकर सरमदने जिसवक्त हथेली पर रखवा । उसी वक्त से
नाम मुतलक न बादशाह का रक्खा ॥

शैर-करदिया तख्तातबाह देहलीकी अबउड़ती है धूल ।
क्या खतासरमदकी थी था शाहकी मुतलक ये भूला ।
देखिये अब इसगुलिस्तां से वह कब आयेंगे फूल ।
गर करेथै अर्ज आशक तो खुदा को हो कबूल ॥

रंजने ये फरमाया आशक को मेरा कुछ पास न हो । तो
दुनियां में आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ २ ॥ आरे
से चिरजांय नहीं धवरांय जो आशक हैं पक्के । सीना सामने
करें दिलबर चोट मारे तकके । कभी न निकले मकांसे गर
वह लाख गजैके दे धक्के । दरे यारको छोड़नहीं जायवह कावे
औ मक्के ॥ जैसे जुआरी जोरु खोरक होजावे हैं भवचक्के ।
तौ भी अपनी जबांसे कहाकरें वह पौछक्के ॥

शैर-इश्क में वाजी है शिर की काम दौलत का नहीं ।
इस्से बहतर खेल हगने और कोई देखा नहीं ॥
जिसने अपनाशिर न बेचा कुछ मजा चरुखा नहीं ।
आशको ने जीतेही जी तनु बदन ररुखा नहीं ॥

लाखवजैके सद्मोंमें गर दुरुस्त होश हवाश न हो ।
तौ दुनियां में आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ ३ ॥ खाक
में गर मिलजाय गौरसे गुल होकरके निकलते हैं । अजब

हे आशक मर्गके बादभी फूलेफलते हैं । रोशनहो कुल आलम में जो खड़े इश्कमें बलते हैं । उन्हें देखकर जो पत्थरहों तो वह भी पिघलते हैं ॥ देवीसिंह के सखुनपर शायर हरेक हाथको मलते हैं । चारों तरफ से वाह वाह करें औ बहुत उछलते हैं ॥

शैर-ये कलामे मारफत है रंज से राहत मिलै ।

जोकि डूबा चाह में तो फिर उसे चाहत मिलै ॥

गमअगरखाये तो उसको रोजाफिरन्यामत मिलै ।

दीदउसादिल्वरकाजीतेजी औ ता कयामत मिलै ॥

रंज ये बोला बनारसी से गर तू मेरा दास न हो । तो दुनियां आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ ४ ॥ बाग बाग हुआ आगे आलम आये बाग हरम के बीच । फूल फूलके गिरपड़े हरएक फूल हरकदमके बीच ॥ जुल्फ मुसलिसल देख पैंच में आया सम्बुल चमनके के बीच । नैननेतेरे शरमदी नरगिस कालेहिरणके बीच ॥ फूलरहीहै फुलवारीवो प्यारे तेरी फवन के बीच । कद पर सदेक करूं मैं सर्वसही गुलशन के बीच ॥

शैर-करूं तलबपर तसदुकलाल गुललाल के दो टुकड़े ।

औ ददां मोतियां देखें तो उनकी आब सब उतरे ॥

अगर्चे मुसुकराके और करे गर कुछ बात तू हंसके ।

तो हेवे बेकली हरएक कली फूटै खिलै गुंजे ॥

कौनवोहैखुशबू जो बखी है नहीं तेरे दम कदमके बीच । फूलफूलके गिरपड़े हरएक फूल हरकदम के बीच ॥ १ ॥ रु

खसारों को देख गले गुठ गुठाव तेरी - लगन के बीच ।

सदा सुने तो धुनेशिर तूती आगिलगे अगन के बीच ॥

भरा हुआह चाह हुस्नका आपकी चाहे जकनके बीच ।

डूब गये हम न दहशत करी ज़रा इन मन के बीच ॥

शैर-फिदा दिल है गुलेराना तेरे ऊपर हरेक गुलका ।

दिखादे बहारी और पिलादे जाम उस मुलका ॥

मचै वो कहकहे और चहचहे गुल होत जम्मुलका ।

खुले परबाल कुमरी के कश लेमान बुलबुलका ॥

शाख शाख हो हरी शजरकी लगें कमल हर कमलके बीच ।

फूल फूल के गिर पड़े हर एक फूल हर कदम के बीच ॥ २ ॥

नज़र पड़ी जिसवक्त गुलिस्तां की तेरे परहनके बीच । चाक

गरेतां किया गश खाके गिरे कुल धरन के बीच । वह है नज़ाकत

आपमें ये है कहाजुही या समनके बीच । बनबन के सब फूल

फूले हैं तेरे योवन के बीच ॥ शैर ॥ हुआ मुर्गाने चमन का

दिमागतर बूसे । महक आने लगी उलफतकी वो तुझ गुलरूसे ।

सिफतमें किस तरह तेरी करूं कौन मुँहसे । खार की बात न

तूने करी कभी मुँहसे ॥ लगी चाटने तलवे तेरे आह तेरी श-

बनम के बीच । फूल फूल के गिर पड़े हर एक फूल हर कदमके

बीच ॥ ३ ॥ मुरझाया दिल हरा हुआ हुई गुलज़ारी गुलबदन

के बीच । खिजां का मुतलक नाम नहीं रहा गुलों के वतन के

बीच ॥ झुक झुक के सब करें डालियां सिजदा तेरे चरन

के बीच । कहै देवीसिंह ख्याल तौहीद भारफत सखुन के

बीच ॥ शैर ॥ खिचा नकशा मेरे दिल पर है वह तेरी

सफाई का । बसी तस्वीर आंखों में और है जलवा

इलाही का ॥ किसी को ताज बरूशा और किसी को

तख्त शाही का । गदाई हम को दी जिस में दिया दावा

खुदाई का ॥ बनारसी कहै गजब झलक है तेरे कदम

के पदम के बीच । फूल फूल के गिर पड़े हर एक फूल हर कदम के बीच ॥ ४ ॥

कुचे जाना में गर कोई धर के ज़रा कदम निकला । फिर वो न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला । ये है रास्ता सख्त गर कोई इसमें नागहा आन पड़ा । जानबूझ के फिर वो देता है इसी में ज़ोन पड़ा ॥ कहीं तपिश में तपे कहीं कांटों का नजर मैदान पड़ा । कदम कदम पर अब हमको लुप्त इश्क का जान पड़ा ॥ शेर ॥ हमें गुलशन से भी बहतर है इश्क के कांटे । ये फर्श खार के तोफा है मुझे मखमल से । कहुँ मैं किस्से सुने कौन इश्क के किस्से ॥ जो देखे हाल हमारा तो कैसा भी हो ससके ॥ रहा वहाँ का वहीं देखने जो अपना हमदम निकला । फिर वो न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला ॥ १ ॥ मजा चाह का जिसने देखा होगा वह डूबा होगा । बहरे इश्क में जो तेरा होगा वह डूबा होगा ॥ अश्क चश्म से जिसके बहता होगा वह डूबा होगा । चाहै जनक पर जो शैदा होगा वह डूबा होगा ॥ शेर ॥ बहरे उलफत का किसी को भी किनारा न मिला । या खुदा ना खुदा का वहाँ पर इशारा न मिला ॥ किस्ती हर गिज न मिली कुछ भी सहारा । मिला न थाह मुलकत न मिली दम भी गुज़ारा न मिला ॥ लगा न थल बेड़ा उस जापर से न कोई आदम निकला । फिर वह न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला ॥ २ ॥ इश्क को जो देखा तो खड़ा है मेरे शिर पर दार लिये । हुस्न को देखा तो वह धमकाता है तलवार लिये । जल्फ यही कहती है कि मैंने कितने ही आशक मार लिये । चश्म

इशारे करें हैं जादू के हथियार लिये॥ कौन इस कत्लके मद्दासे निकल जायेगा । किसतरह काकुलेपेचां से निकल जायेगा ॥ कोई नइश्क के तूफां से निकल जायेगा । न निकल जायेगा गर जांसे निकल लायेगा॥ तानके अबरू तू जिसपर वहलेके तेगे दुदम निकला । फिर वह न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला ॥ ३ ॥ कत्ल हुआ वह जिसने इस मैदां में आके कदममारा । गिरा ज़मी पर न उसने आदकी औ न दममारा॥ उसके हुस्नके आलमने एक आलमका आलम मारा । कहें देवीसिंह गया मैभी इस्में उसदममारा ॥ इश्क ने दारपरमसूर को चढ़ाया है । हुस्न ने यार के कोहनुर को जलाया है ॥ नूर ने जिसके हरयस नूरको बनाया है । शहर उसने बेशहूर को बताया है । बनारसी करतर्कजहां को सीधा राह अदमनिकला । फिर वह न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला॥४॥

जुलूसिआसे मार सिआ है चश्म से लाली मुल में है । ककशा कदका कयामत धूम यह आलम कुल में है ॥ सर से हर सरदार बने पेशानी से जलबे खुरशीद । चीने ज. बीकी यह है तहरीर न जिसकी दीदो सुनीद ॥ अबरू से भुकी कर्मा औ पैदा हुआ फलकपर मोहेदर्द । खंजरे बुराने पाई बाद किया लाखों को शहीद ॥ शौर ॥ है कुरां में वह जो बिस्मिल्लाः अबरू से बनी । औ अली की तेग भी बल्लाह अबरू से बनी ॥ और सिफत क्या क्या करूं मैं कहा जाता नहीं । जो चला भुक्के तो उस की राह अबरू से बनी ॥ तुझ गुलका चर्चा गुलेराना यही तो हर बुलबुल में है । नकशा कदका कयामत धूम यह आ.

लम्ब कुलमें है ॥ १ ॥ मिजैसे पैकावने औ नस्तर चुभेरंग
 जांपर आकर । खार भी उसदम् खटकने लगे मेरे वहां पर
 आकर ॥ निगाह से वह तलवार चली सो लगी नीमजांपर
 आकर । आहवी मुतलक न ठहरी मेरी जबां पर आकर
 ॥ शेर ॥ है शरारत वह तेरी चितवनमें ऐरशके कमर । हो
 रहा जीसे जहांके बीचमें जादूसे हर ॥ लड़गई जिस शरस
 की वह आंख तेरी आंखसे । फिर उसे तेरे तवा कुछ भी
 नहीं आया नजर ॥ वही जिक्र मय खानेमें औ यही सदाकुल
 कुलमें है । नकशाकदका कयामत धूम यह आलम्ब कुलमें है
 ॥ २ ॥ बीनी से बना अलिफ तेरे रुख से वह पैदा नूर हुआ ॥
 जिसकी झलकसे गिरामूसा औ खाक काहे तूरहुआ । लब
 से लाल यह मन बने याकूत वह वहीं ज़रूर हुआ ॥ औ द-
 न्दांसेबने गौहर तो क्याही ज़रूर हुआ ॥ शेर ॥ है झलक
 हीरोंमें ऐप्यारे तेरे दन्दान से । बर्क भी चमकी वही दांतों में
 तेरी शान से ॥ औ जबां से बर्गगुल पैदा हुआ रंगीन वोह ।
 हरसखुनशीरितेरा निकले है क्याही आनसे ॥ बादे सबा कह
 ती है यही औ वही जिक्र हर गुल में है । नकसा कदका क-
 यामत धूम यह आलम्ब कुलमें है ॥ ३ ॥ चाहे जकनसे आ-
 शक सादक के दिलमें वह चाहहुई । लगा झांकने कुँ जिस
 जिस को उधर निगाह हुई ॥ गले से मीना बना सुराही भी
 उसके हमराह हुई । कहैं देवीसिंह सिफत किस्से तेरी
 अल्लाह हुई ॥ शेर ॥ थक गये लाखों हिं शायर करके सब
 तेराबयां । पर न पाया राज तेरा तूतो है राजे नियां ॥
 किसकी ताकत है जो हो आगाह तेरे हुस्न से । यक

झलकमें गिरपड़ा मूसा भी होकर नातवां ॥ बनारसी न
यही लिखा कवि काशी गोकुल में है । नक्शा कदका
कयामत धूम यह आलम कुलमें है ॥ ४ ॥

आशक मैं हूँ उस गुलका जिसपर फिदा है सारे गुल ।
बहार में भी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल ॥ सदारहें
सरसब्ज वह उसकी महक से मस्तानापन हो । दीद उस गुल
की करता दिलमें दीवानापन हो ॥ अदासे उस शमशादकी
आशकमें तो आशकाना पनहो । क्यों नहीं गुचे खिलें जब
उसमें मुसकराना पन हो ॥ शेर ॥ बनाये क्योंन उसगुलशन
में कुमरीआसियां अपना । गुले गुलजार गुलरू और जहां
हो बागवांअपना । नहींसैयादकाडरकुछ न मुतलकखौफना
अपना ॥ मकाँहै लामकां अपना निशा है बे निशां अपना ।
गुचेभी यही चटक चटककरें चमन में शारो गुल ॥ बहारमें
भी न जिसकेनाम खिजाँका है बिलकुल । १ । पेंच से जुल्फेसियः
फामसेदाम इश्क पेंचा बनजाय । मुश्केखुतन भी महकै जुल्फों
से वह परेशां बनजाय । बालसे आये वह बाल सम्बुल प-
रजा जुल्फ पेंचा बनजाय ॥ नाफे आहू का मुँह काला हो
घासे रेहा बनजाय ॥ शेर ॥ पड़े झुमर वो उसके रुखपर ज-
ल्फोंका जो मुँह खोले । तो अशरत का हिंडोला देखकर
खाये वह झकझाले ॥ और काकुल सम्बुले कालना मुँह से
अपने कुछ बोले । यकीँए है कि पानिके लिये जहर
घोले ॥ जुल्फ अश्वरीहै यां सोसन गुलहै तेरीकाली का कुल
बहार में न भी जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल ॥ २ ॥
वसा से तरगिन शरामिन्दा हो सर को भुकाये खड़ा रहै ॥

आंख उस गुलसे कभी मुतलक न मिलाये खड़ा रहै । कदसे
 सर्वसनोवर गुलशनमें गड़जाये खड़ा रहै ॥ दहनसे गुंवातंग
 होक शमोया खड़ा रहै ॥ शेर ॥ सफाई देखकर उसकी समन
 में लाहो गुलशनमें । वो नाजुकपननही में जो कुछ है यार
 केतनमें ॥ बिनादेखे हथेलीको तो खु उगला करै मनमें । सदा
 उसकीसुने तूतीतो फिर भागै कोई बनमें ॥ शाखशाखपै यही
 चहचहा करताहै शैदा बुलबुल । बहारमें भी न जिसके नाम
 खिजांकाहै बिलकुल ॥ ३ ॥ रश्के चमन् गुलबदनको मुलदेखेतां
 गरेबाँ चाककरै । हरएक गुलिस्तांको वो यकदम् भरमें दम
 नाककरै ॥ गवेंकोईमुर्गाने चमन्जो उससे मुहब्बत पाककरै ।
 बहरे इश्क का खुदा उस आशक को पैराक करै ॥ शेर ॥
 सबा आई जो गुलशनमें तो उसकी क्या बिथा बन आईहै ।
 नही वाकिफ था जिस बू से वो सब उसमें समाईहै ॥ न मुत
 लकखार गुलशन में न कुछ गुलकी बुराई है । नहीं दिल
 में लगा वो बुल वहां जलवे खुदाईहै ॥ वनारसी को उस
 गुलरू ने पिला दिया वो जोमेमुल । बहार में भी न जिस
 के नाम खिजां काहै बिलकुल ॥ ४ ॥

जल्फ को तेरी मार कहै तो मार मार से कटवाऊं । स-
 म्भुले पेंवा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ कदसे सबकी
 निस्वत दे तो खोदके उसको गाड़ूं मैं । अगर सनोवरकहै
 तो चमन से अभी उजाड़ूं मैं ॥ चालसे निस्वत दे जो फील
 कीलातसे उसे लताड़ूं मैं ॥ पँजये मरजाँ कहै तो दस्तकेअभी
 उस्वाड़ूं मैं । काकुल को गर दम कहै तो जाल में उसके
 जलजाऊं ॥ सम्भुले पेंवा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ १ ॥

चश्म तेरे नरागिस जो कहै तो आंखसो उसकी फोड़ूँ मैं । दन्दां
गौहर कहै तो दांत सब उसके तोड़ूँ मैं । दहनको गुंचा कहै तो
उसके मुंहको पकड़मरोड़ूँ मैं । जानके निस्वत येदें तो जानन
उसकी छोड़ूँ मैं । अगर तेरी काकुल उलझै तौ क्योंकर उसको
सुलझाऊं । सम्बुले पेचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥२॥ जकन
को तेरे चाह कहै तो कुएमें उसे डुबाऊं मैं । पेशानी को कहै
खुरशेद तो उसे घुमाऊं मैं । गले को मीना कहै तो गर्दन उसकी अभी
कटाऊं मैं ॥ गेसू को कहै घटा तो उसका घटाके स्तवामें आऊं ।
सम्बुले पेचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥३॥ जवांको तेरी
कहै बर्गगुल उसकी जवां निकालूँ मैं । हिलाले अवरू कहै
उसके टुकड़े करडालूँ मैं ॥ सीने को कहै आईना तौ
उसे न देखूं भालूँ मैं । कमर को तेरी अगर मुंह कहै तो
उसे छिपा लूँ मैं ॥ बनारसी कहै तेरे बालकी कहीं भी
निस्वत सुनपाऊं ॥ सम्बुल पेचा कहै तो पेच में मैं उसको
लाऊं ॥ ४ ॥

रंज को हम राहत समझै और दर्द को हम दिस्वर
समझै । गमको अपनी गिजा समझै और मुफलसीको
जर समझै ॥ अलम को समझै ऐश और मरने को जि-
न्दगानी समझै । जफा को समझै बफा खफाको महरबानी समझै
झूठको सच समझै लेवास हम तनुकी उरियानी समझै ॥ आबको
समझै हम आतश आतश को पानी समझै ॥ जर को समझै जबर
और कमजोरको जेरोवर समझै ॥ गम को अपनी गिजा समझै और

मुफलसीको जरममझें ॥ १ ॥ मुर्देको जिन्दा समझें औरसितमको
 बडारहमममझें । फनाजहांकोसमझें हरदमकोमुल्क अदम सप
 झें ॥ बदीकोसमझें नेकी दुश्मन को अपनाहमदमसमझें । जहांपै
 समझें वहां पर हमतो वोही सनम समझें । नार्दा को दाना
 समझें और फिक्रको बडा फखर समझें ॥ गमको अपनी गि
 जा समझें और मुफलसी जर समझें ॥ २ ॥ गुल को समझें
 दाग दाग को हम अब गुलदस्ता समझें । उजाड सम
 झें शहर को सहारा को बस्ती समझें । जख्म को गुल
 लाला समझें औ रोते को हंसता समझें । दीवाना को
 अल्कबर सिडी को हम मस्ता समझें ॥ आहको समझें
 याद यार की अश्कों को गौहर समझें ॥ गम को अपनी
 गिजा समझें और मुफलसी जर समझें ॥ ३ ॥ मार को
 समझें प्यार यार को गाली वही हुआ समझें । बेजाको
 हम बजा समझें औ मर्ज को सफा समझें ॥ इश्क हम
 आशक समझें माशूक को वडी खुदा समझें ॥ क्या कोई
 समझें जो हम समझें वो और कोई को क्या समझें ॥ बना
 रसी का हरके सखुन आशक का खूने जिगर समझें ।
 गमको अपनी गिजासमझें और मुफलसी जरसमझें ॥ ४ ॥

चाह को समझे चाहे जंकन जँजीर को हम जेवर
 समझे । खाक को समझे पैरहन जमी को फरशे तर सम
 झें ॥ सन्न को समझे शुक्र और नातबानी को ताकत सम-
 झें । खार को समझे चमन औ हिज को हम उल्फत
 समझे ॥ तलख को समझे शीरी दिल में जहर को हम
 इसरत समझे ॥ सङ्ग को समझे मोम और आफत को

अशरत समझे ॥ दार को समझे यार का जीना तीर को
तेरी नज़र समझे । खाक को समझे पैरहन जमी को फर-
शेतर समझे ॥ १ ॥ सुबह को समझ शाम शाम को अब हम
परवाना समझे । माह को समझे मेहर और धूप शमियाना
समझे ॥ बहरत को बहदत समझें रोने को तान
गाना समझें । ग़म को समझे मुसलमाँ मौत को
जी जाना समझे ॥ मर्का को अपने समझे लामकाँ सनम
का क़ुचादर समझे । खाकको समझे पैहरन जमी को
फरशेतर समझे ॥ २ ॥ जुल्म को समझे जशन बुते ख़ुंखार
को अब ख़ुंबा समझे । तेग को समझे अबरू नस्तर
को मिजगाँ समझे ॥ कयामत को दुनिया समझे कातिल
को अपनी जाँ समझे । कैद को समझे रिहाई खिजाँ को
बागेजहाँ समझे ॥ रुसवाई को इज्जतवै तौकीर बड़ा बेक़र
समझे । खाकको समझे पैरहन जमीको फरशे तर समझे । ३ ।
खौफ़को समझे खुशी औ हैरानीको शेरआलम समझें । ग-
दा को समझे शाह ग़रादिशको फज़लोकरम समझे । दोज-
ख़को समझे वाहिश्न औ पाप को बड़ा धरम समझे । और
जहाँ कोई नहीं समझे जो कुछ हम समझे ॥ देवीसिंह कदें
वनारसी के सखुन को कौन बशर समझे । खाक को
समझें पैहरन जमी को. फरशेतर समझे । ४ ।

इश्क़हे खानैरँज पर इसखानये रजमें राहत है । लुफ़
उसी को हो हासिल जिसे इश्क़ की चाहत है । इश्क़ में
जो जाना है हमने समझा है यही जीजाना है । जानाजाना
के दर पर जान बेंच कर जाना है ॥ उल्फ़त में रुतवा होना

बस यही आबखू पाना है । नादाँको दिले दिया जिस
 जिसने बोः आशक दानाहै । शेर । फँसे तो इश्कके फन्दे
 में वो दुनियाँसे कुलछूटे मजेलूटे । उन्होंने ने जिनके सब घर
 दर गयेलूटे । हमेंबोखार देते हैं जो गुलशन में हैं गुल बूटे ।
 खटकतेहैं मेरे दिल पर वो काँटें लगेके जो टूटे । इश्क के
 बीमारोंकी रोशन आलम बीच शबाहत है । लुफ्त उसी को
 हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है । १ । जिगर जलाना
 आशक के हकमें ये बड़ी तरावट है । आतशे गमके अबअप-
 नी आठोंपहर लगावट है । तनुकी उरियानीको हम समझे ये
 खूब सजावटहै । इश्कमें बिगड़े जो आशक उन्हीं की बनीं
 बनावट है ॥ शेर ॥ हुआ जो इश्क में मुफालिस वही जरदार
 होता है । कटाये शिर जो उल्फत में वही सरदार होताहै ॥ जो
 दिलको ब्हीनले दिलबर वही दिलदार होता है । और आंखें
 बन्दकर देखे उसे दीदार होता है ॥ जोरावर हैं वही इश्कमें
 जोके हुआ न काहत है । लुफ्त उसीको हो हासिल जिसे
 इश्ककी चाहत है ॥ २ ॥ कैद जहां से छूटै वही जो दामे
 मुहब्बतमें फँस जाय । निकले दोज्जखसे जो इश्ककी आत-
 शमें धँसजाय ॥ किसी के बशमें कभी न हो गर वो दिलबर
 दिलमें बस जाय । करै उसी से रसाई कभी न जिस गुळका
 रसजाय ॥ शेर ॥ मुहब्बत मे जोदिलदेगा वही बेदाग होता
 है । नफाहोता है उसको जो कि जर उल्फत में खोताहै ॥ वो
 हँसता है सदा जो उस सनम् के गममें रोता है । मिलाये
 तनुको मिट्टी में वो अपने मनको धोता है ॥ मजा इश्क का
 यही कभी राहत है कभीकराहतहै । लुफ्त उसी को हो हासिल

जिसे इश्ककी चाहत है । ६ । ग़मखाना आशक के हकमें
ये न्यामत से बढ़तर है । हरयकमकां है उसीका जिसका कहीं
न घरदर है॥ उसे खौफनहीं किसीकाहै जिसको उस दि-
लबरका डरहै । अपने आपको जो पहिंचानै वही अल्ला
अकबर है । शेर । पढ़े नहीं इल्म का दफ्तर अलिफ़ वे ते
न हम सीखे । न तख्ती हाथसे पकड़ी न कुछ छूना क-
लमसीखे ॥ फकत इस इश्क के मकतब में हमनामे सनम्
सीखे । सिवा उल्फत के और हम कुछ नहीं अपना कसम
सीखे ॥ देवी सिंह कहै बनारसी के सखुन मैं बड़ी फसाहत
है । लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है॥ ४ ॥

जिधर को देखू इधर रोशनी आफताब तमाम है । पिऊँ
न मय में क्योंकर जिन्दारहूं मेरायह कलाम है ॥ चश्म न-
हीं है हमें खुदाने आप गुल्लावी जाम दिये । मये दीदके
प्याले भर भर मुझे बरसरे आम दिये ॥ चली वह बादेसबा
इसकदर हाथ हमारे थामलिये । तौभी परी पैकर ने मेरेमुह
लगावो आठो जाम दिये । कहै जो इसको हराम उसका
खानापीना हरामहै॥पिऊँ न मयमें क्योंकर जिन्दारहूं मेरायह
कलाम है । १ । एक तरफ़ आतशमझके औ एक तरफ़ वा-
रिश आबहै । मेरे दिलके मय खाने में दोनों तरफ़का हिसाब
है । जिगरमें शोला उठै और चस्मोंसे टपके शराबहै । जबां
यही कहती है मेरी लज्जत इसकी लाजवाब है । कुलजहानमें
सुना हो मस्ताना मेरा नाम है । पिऊँ न मय में क्योंकर
जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है । २ । दिलमें गर देखी तो फिर
दारे हमारा आयाहै । आज हमें साकीने दुबारा सागर आप

पिलाया है । देख मेरी बदमस्ती को मोहसिबने यह फ. र्माया है । यहजो शौ वहशत कहां से तेरी नजरों बीच समाया है ॥ कहा यह मैंने आंख हमारी मय वहदत का गुदाम है । पिऊं न मय मैं क्यों कर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ ३ ॥ सुना सखुन मोहसिब ने यह तब उसके दिलमें दोश हुआ । या तो मने करता था मुझे या आपी बहम बनोश हुआ ॥ चढ़ानशा जब इश्कका उसको जहां से वो बेहोश हुआ । कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कह कर खामोश हुआ ॥ बनारसी कहैं हमें तो इसदारूका पीना मुदाम हुआ पिऊं न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ ४ ॥

आतश इश्ककी भड़क रही है इस दिल के मयखाने में । मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ यक ताई का आलम हो औ वहदतका हो रंगभरा । तुझ गुलकी हो खुशबू जिसमें वह शराब तू पिला जरा ॥ गमकी होवे गिजा साथमें वह खासा हो पास धरा । और मारफत का हो मीना करामात का कामकरा ॥ आफतावकी होवे रोशनी मेरेदिल दीवाने में । मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ ५ ॥ मस्ती का हो शर्र हरदम बादे सबाभी चलती हो । और गुलाबी मोसमही हरगुल से महक निकलती हो ॥ बाजे वीन औ रवाब औ काफूरी शमा भी बलती हो । जिस महिफिल को देखके हरमोहत सिबकी छाती जलती हो ॥ भड़क उठे शोलएनूर पहलू में मेरे शाने में । मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ ६ ॥ पास हमारे दिलवर हो फिर और सदाएकुल

कुलहो॥ जोश जनूभी दिलमें हो कहकहा भीहो शोरोगुलहो॥
 शीशा सागरसुराहाहोओरगुलस्तान गुंनेगुलहो । हाथमें हो
 दिलबर का हाथ हरबात में वह जिकरे मुलहो ॥ कबाब की
 लज्जत हुई हासिल अपना जिगर ललाने में । मये मुहब्बत
 पिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें॥१॥दीदार तेरा दारू सफा
 है जिसे मिला वह मस्तहुआ । बदमस्तो में बैठ बैठकर बना
 रसी अलमस्तहुआ । चांदसा चेहरा देखतेही तेरा वह सूरज
 अस्तहुआ । दस्तगीरबहहुआ कि जिसका तेरे दस्तमें दस्त
 हुआ ॥ कहै विश्मरनाथ मजाहैहश्कमारफत गानेमें । मये
 मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने मे ॥ ४ ॥

पानकी लालीसे जो मेरे वहदिलबरके लवलाल हुये ।
 लाल बदखशां से भी बहतर पैदा अब लाल हुये ॥ काकुल
 से काल हुये पैदा जुल्फ से अफई मार हुये । पेशानी से
 नूर टपकता तो फरिस्ते चारहुये ॥ अबरूसे खम खाखा के
 खंजर बिछुये खमदार हुये । औ मिजगां से तीर पैका न.
 शतर पुरकारहुये ॥ शौर ॥ चश्मसे पैदा हुआ नरगिस हरेक
 गुलजारमें । और वो वीनी से अलिफ खींचा गया हरकार
 में ॥ है वह जल्वा कुदरती दोनो तेरे रुखसार में । जिस से
 रोशन चांद औ सूरज है इस संसार में ॥ पानी की रंगत
 पाकर ददां गौहर से जब लाल हुये । लाले बदखशां
 से भी बहतर पैदा अब लाल हुये ॥१॥ जबांसे पैदा कुरां
 हुआ औ अक़ से इल्म हजार हुये । चाहै उजनकसे चाहके
 दिल में खुद ब खुद गार हुये । गुलसे बनीसुराहीं गुलशन
 तेरे गले के हार हुये । हुस्न से तेरे परी पैकर बनकरतयौर

हुये ॥ शेर ॥ तेरे सीने की सफाई से सफाई होगई । ताकते बाजू से अब ताकत सवाई होगई हाथ से तेरे सखावत की सखाई होगई । पंजये मरजाँसे लग लाल हिनाई होगई ॥ देखके रंगी नाखुनोंकी शरामिन्दा तब लाल हुये । लाल बदखशांसे भी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ २ ॥ शिकमसे नरमी बनी कमरसे पोशीदा सब हाल हुये । औ जानूसे तेरे दो नूरके थम्भ कमाल हुये । कदमसे सिजदाबना और पा छूने को सात पताल हुये । चालसे तेरी बन गये फीलन वह बेचाल हुये ॥ ॥ शेर । कद से तेरे अब तळक सर्वेचमन आबाद है । और अदा तेरीसे आशकका सदा दिलशाद है । नाज से तेरे बनी अंदाज की बुयद है । हर मराय से सरापा तेरा ही ईजाद है । जो पत्थर तलुओं से तेरे लग गये वह तो सब लाल हुये ॥ लाले बदखशां से भी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ ३ ॥ ठोकर से तुझ जाना की लाखों मुँदें उठ खड़े हुये । आपके पायेन कश हैं मेरे दिल पर पड़े हुये ॥ तेरी चचलाहट से सद में वर्क के दिल पर बड़े हुये । कदम बोसीमें तेरी हम दिलों जान से लड़े हुये । शेर । शेरहकानीका कहना कुछ नही आसान है । यह सखुन समझे वही जो आशके मस्तान हैं ॥ देवीसिंहकी शायरी पर दिलोजां कुर्बान हैं ॥ जिस के हरनुक्ते के ऊपर हर शरस का ध्यान है ॥ बनारसी के खूने अस्क सब टप के यारबलाल हुये । लाले बदखशां से भी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ ४ ॥

काकुल पुरखम आरिज रोशन दोनों को क्या यार लिखूं । मार जुल्फका औ रुखको हरदम शोलेमार लिखूं ।

निस्वत है ये बेजा गरचे मंजीपूर शरार लिखूं । दाम हुमा
का जुल्फको रुखको हुमा इजहार लिखूं ॥ अच्छा नहीं
हैं ये भी तशभी क्या तायर परदार लिखूं । सम्बुले तर
में जुल्म को बरगे समन रुखमार लिखूं ॥ ये सब्जे हैं
जर्मीके इनको होके लाचार लिखूं । मार जुल्म को
और रुखको हरदम् शोलेमार लिखूं ॥ १ ॥ काकुल को मैं
कालीघटा औ रुखको बर्क आसार लिखूं । घटाके नि-
स्वत न इन्से दून बर्क बेकार लिखूं ॥ उसको तो जुल्-
मात लिखूं और हैंवां उसे हरबार लिखूं । वह तो पुर-
खमनहीं और वां नये जिनहार लिखूं ॥ काकुल को मैं
लैलालिखूं आरिज के तई निहार लिखूं । मार जुल्फ को
और रुखको हरदम् शोले मार लिखूं ॥ २ ॥ गरदिश में
लैलोनिहार हैं कहां तलक दिलदार लिखूं । उसको रेहां
औ उसको सुनिये लाले जार लिखूं । तशभी उस्से हैरां
पुरदाग है वह क्या खारलिखूं । रुखको कुरआं विरह मन
काकुल को जुन्नारलिखूं ॥ इनसे झगड़ा हिन्दू मुसल्मां हेंगा
क्याइसरार लिखूं । मार जुल्फको और रुखको हरदम् शोले
मार लिखूं ॥ ३ ॥ रुखको हरदम् शमये रौशन काकुल को
घुआंधार लिखूं । येभी गलत है और तशभी इसकी यक-
बार लिखूं ॥ उसको मौजे बहरलिखूं उसे आईना बेदार
लिखूं । मौजनयकजां आईना हैरां ये क्या शार लिखूं ॥ जु-
ल्फ सुबेदा बनारसी रुख नूरे हक्क गुल्जार लिखूं । मार
जुल्फ को और रुखको हरदम् शोले मार लिखूं ॥ ४ ॥

नाजो अदासे चली नाजनी दो जुल्फें लटका लटका ।

लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ देख
तमाशा उन जुल्फोंको फेंका दाम में कुठ आलम । पेंचमें
उसके पड़ा है यारो ये बिनकुल आलम । ऐमा बांधा खैव
जुल्फ में मचारा है कुल आलम । उसके फन्द से कहो अब
क्योंकर जाये खुल आलम ॥ नशेमें है सर सार पीकर गेसु
ये जहरका मुल आलम । हुआ दिवाना देखकर उसकी वह
काकुल आलम ॥ फेर में जुल्फों के फिरता है कुल जहान भ-
टका भटका । लटका आलम दिखाया जब उसने लटका
लटका ॥ १ ॥ गदा अम्बिया शाह औलिया और जुल्फ
देखे गरद । महक से उसकी होवे सब मस्त औ आये दिल
में जनु ॥ जुल्फों अम्बरी देखके आलम आशक होगया गना
गू । लाम कइं में या इनको लामकान अजिफ लिखूं ॥ जिस
दम उसने बाल भरोड़े लाखों अफईकाहुआखूं । सबके जह
र को निचोड़ा क्या ताकत करे कोई चू ॥ कालने शिरको
पटका जिसदम उसनेलटको झटका । लटका आलम दिखाया
जब उसने लटका लटका ॥ २ ॥ हिला हिलाके जुल्फ दुता
कितनों के तई हलाल किया । मारमारके मार सदहा को हा
ल बेहाल किया ॥ मशरिक से मगरिव तक उसने अजबजु-
ल्फका जालकिया । उसके बीबमें डालकर कितना पैमाल
किया ॥ जिमदम उसने जुल्फबनाके टेढ़ा बांकाबालकिया
कालमी उसको देखकर डरा औ अपना काल किया ॥
फटकारा जब जुल्फको उसने कोई सामने नहीं फटका ।
लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ ३ ॥
दोनों रुखसारोंके ऊपर लटलटकी घूंवरवाली । गोयामाहके

गिद घिर आई घटा काली काली ॥ लटकाके जब जुल्फ
सनमने इधर उधर रुखपर डाली । बयां क्या करूं बनाई
अजब यह कुदरत की जाली ॥ देवीसिंह के छन्द रंगीले
और सदा भोला भाली । सुने से जिस के हुई हरयक
शायर को खुशयाली ॥ मतलब है तौहीद जुल्फ में और
मारफतका खटका ॥ लटका आलम् दिखाया जब उसने
लटका लटका ॥ ४ ॥

फकीरीखुदाकोप्यारी है । अमीरीकौनबिचारी है ॥ बदन
पर खाकहै सो अकसीर । फकीरोंकी है यहीजागीर ॥ हाथ
बांधेखडेरहैअमीर । बादशाहहोगा द्रोवैजरीर । सदायहमच्च
हमारीहै ॥ गदाकीखुदासेयारीहै । फकीरी खुदाको प्यारीहै॥ १ ॥
है इनकानाम सुनोदुर्वेश । कोई नहीं पाये इनसे पेश । खुदा
सेमिलेयहरहैहमेश ॥ कोईनहिंजानेइनकावेश । कभीगिरियां
औजारीहै ॥ कभीचश्मोंमें खुमारीहै । फकीरीखुदा को प्यारी
है । २ ॥ है इनका रुतबाबहुतबलन्द । खुदाके तई यहहुआ
पसन्द ॥ पादशाहसे भी यह बनेदुचन्द । इन्हें मत बुरा कहो
हरचन्द ॥ इनकी दिलपरअसबारीहै । ऐसीनहिं कहीतैयारी
है । फकीरी खुदाकोप्यारी है॥ ३ ॥ चीथडेशाळसे हैं आला ।
चश्म हरतालसे हैं आला ॥ चनेभी दालसे हैं आला । च-
लन हर चालसेहैं आला ॥ जखम जो जिगरपरकारी है
वहीदिलपर गुजारी है ॥ फकीरी खुदाकोप्यारीहै ॥ ४ ॥ पां
वमें पडा जोहै बाला । वहभी मोतियों सेहै आला ॥ हाथमें
फूटासा प्याला । जाम जमशैदसे भी आला ॥ अगरकोई
हफ्तहजारी है ॥ वह भी इनकाही भिखारीहै । फकीरीखुदा

को प्यारी है । ५ । मकांलामकांफकीरोंका । निशांवेनिशांफ-
कीरों का । फखहै निहांफकीरोंका । खुदाहैइमांफकीरोंका ।
ताकत सब वह भारी है । मौततक जिनसे हारी है । फकीरी
खुदाको प्यारी है । ६ । बढगये बालतो क्या परवाह । उतर
गई खालतो क्यापरवाह । आगया मालतो क्यापरवाह ॥
हुये कंगालतो क्यापरवाह ॥ खुदा तू जनावे बारीहै । का-
शीगिरिको यादगारीहै । फकीरी खुदाको प्यारी है ॥ ७ ॥

कहो किसेमैं देखुदेखाआलम में कुलहमीतोहैं । कहीं पैगुलहैं
कहींपरआशके बुलबुल हमीतोहैं । कहीं अनलहक बने कहीं
मनसूर कहीं परदारहैं हम । कहीं पर सरमदकहीं सरलेनेको
तलवारहै हम । कहींशमतबरेजकहीं खुरशैदउसीके यारहैंहम ।
राहीएक है कहींपर देखो बिनाशुमारहैं हम ॥ कहीं बनेस्वामोश
किसी जां पर शोरोगुल हमतिो हैं । कहीं पै गुलहैं कहींपर
आशके बुलबुल हमीतोहैं ॥ १ ॥ किसी जगह पर शरे कहीदेशरेमें
बोले हमी तो हैं । कहीं पै स्याने कहीं पर बोले भोलेहमी
हे तौ । कहीं पर आतिश आब कहींपर पड़े फफोले हमी
तोहैं । कहींपैरत्ती कहीपरमाशे तोले हमीतो हैं । कहीं ब
नेमयखोर किसी जापर साकीं मुल हमीतो हैं । कहीपर गुल
हैं कहीं पर आशके बुलबुल हमीतो हैं ॥ २ ॥ कहीं पै बन्देबने
कहीं पर खुदा खुदा का नूर हैं हम । कहीं पर मृसा कहीं
जल्बा और कहीं कोहनूर हैं हम ॥ कहीं किसी के पास
रहे और कहीं किसी से दूरहैं हम । कहीं मलायक कहीं
पर पारिस्तान और हूर हैं हम । कहीं बने पेशानी कहीं
उस रुखपर काकुल हमीतो हैं ॥ कहीं पै गुल है कहीं पर

आशके बुलबुल हमीतो हैं ॥ ३ ॥ कहीं बादशाहबने कहींपर
 आकरहुये फकीरहैं हम । मुरीदभी हैं किसीजां और कहीं
 पर पीरहैं हम । कहीं निशानाबने कहींपर कमां कमां के
 तीर हैं हम । कहीं शमाहैं कहीं पर परवाना गुलगीर हैं
 हम । बनारसी कहैं मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमी
 तो हैं । कहींऐगुलहैं कहींपर आशकेबुलबुलहमीतो हैं ॥ ४ ॥
 ऐगुलतरी उल्फतमें गुलजारभी है और खारभी है । बड़ा
 छुत्फहैं इश्कमें मारभी है और प्यारभी है । कभी इशारा अब-
 रुकाहैं और कभी तलवारभी है । कभी वस्ल का हमसे इ-
 करारभी है इन्कारभी है । कभी गालियां झिड़की हैं और
 कभी शीरीगुप्तार भीहैं । कभी खिजाहैं कभी गुल्शन हैं
 बागबहारभी है ॥ बोला ये मंसूर दार भीहैं दीदारभी है
 बड़ा छुत्फहैं इश्कमें मारभी है और प्यारभी है ॥ १ ॥ कभी
 तौक गर्दनमें पड़ा और कभी फूलोंका हारभी है । कभी बि-
 रहना बदनहैं कभी तनपर सिंगार भीहैं । कभी सैर महारकाहैं
 और कभी कुंवा ताजारभीहैं । कभीहैं राहत कभी रंजीदा दिल
 बीमारभीहैं ॥ कहा लैलासे अब मजनूं ने अब सुलहभी है
 तकरारभी है । बड़ा लुत्फ है इश्क में मारभीहैं और प्यारभी
 है । २ । कभीहैंसी दिल्लीगी कभी रोना अश्कों का तारभी है ।
 कभी नज़र का झिपाना कभी निगाहें चारभी है ॥ कभी
 गले से लगे कभी वह करता दारोमदारभीहैं । कभी जलाये
 कभी यक अदासे डाले मारभी है ॥ कभी करे ऐयारी औ
 वह बनता यारभी है । बड़ा लुत्फ है इश्क में मारभीहैं और
 प्यारभीहैं ॥ ३ । कभी जरूय पुर होयँ जिगरके कभी बदनपर

गारभी है । कभी करे खुश कभी वो करता दिल बेजारभी है ॥ देवीसिंह ये कहै मेरा वह शोखाशितम गर यारभी है । जो चाहै सो करै अब वही दिलका मुस्तारभी है ॥ बनारसी कहै नेकी बरी दोनों का उसे अखत्यारभी है । बड़ा लुत्फहै इश्क में मारभी और है प्यारभी है ॥ ४ ॥

कुरानकी आयतें हम उसके रुखनापाव से लिखते हैं । लाजवाब उसको हम अपने इस जवाब से लिखते हैं । अलिफको हमनहिं लिखेंगे बीनी उस गुलरूकी लिखते हैं । बिसमिल्लाको छोड़ सिफत उसके अबरूकी लिखते हैं । लाम से कुछ नहीं काम झलक उसके गेसूकी लिखते हैं । ऐनको करके अलग आंख हम उसमहरू की लिखते हैं । ते को तर्ककर चीनेजबीं दिलको किताब से लिखते हैं । लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं । १ । नुक्तों को कर अलग हम उसके रुखे लाल को लिखते हैं । हरेक इस्म से बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं । कोई लिखै से जीम है खे कोई दाल जाल को लिखते हैं । हम इनको गये भूल सिर्फ उसके जमाल को लिखते हैं । अरबी फारसी हिन्दी तुर्की सब सिनावसे लिखते हैं । लाजवाब उसको हम अपने जवाब से लिखते हैं । २ । कुला कला मुल्ताः हम उसके सारे खतको लिखते हैं । और मायने कुरान के उसकी उल्फत में लिखते हैं । जेरजबरसे जबरदस्त उसकी ताकतको लिखते हैं । पेशसेबेहतर पेसानी उसकी किस्मतको लिखते हैं । रुख रौशन आला हम उसका महताब से लिखते हैं । लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं । ३ । कलम

से पढ़कर अपने दिलवर की बात को लिखते हैं । मुसल्मान हिन्दुओं से आला उसकी जात को लिखते हैं ॥ वो हेंगे नादान जो उसकी तायदादको लिखते हैं । देवीसिंह दिलपर उस की हर करामात से लिखते हैं ॥ बनारसी तो हिसाब उस का बे हिसाब से लिखते हैं । ला जवाब उस को हम अपने इस जवाब से लिखते हैं ॥ ४ ॥

ला मकां है आशकों का कहीं नहीं मकां है । जहां खुदा है मस्तों का दिल सदा वहां है ॥ मालूम है मुझ को जो किसी चीज निहां है । बाकिफहूँ ओकहताहूँ वो यारकहां है ॥ हूंजईफ पर दिलमेराबड़ा जवां है । नाताकतहूँ पर मुझ में बड़ीतगाहै । जहां फना है मेरे लेखेवहीजहाँ है । जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है । १ । जहाँ खापोशी है वहींपरशोरोफिगां है । जहांद नारा वहीं अतिशे सोजाँ है । जहां हिज्र है उल्फतका भी वहीं समा है । जहां लहर बहर है वहींखडातूफाँ है । क्याकहूँ मैं कहती मेरी यहीजवाँ है । जहांखुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है । २ । हूं लिवास पहने पर यहतनउरियाँ है । बस्ती को समझताहूँ मैं येवीरां है ॥ जहाँ मुमल्मान है वहींपर हिन्दुस्तां है । मसजिद में मेरे उस बुतका बना निशाँ है ॥ आशक की आह यही तो एक अजां है । जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ ३ ॥ जिन्दा है वही जो जानसे भी बेजँ है । करता है सैर वह इश्क में जो हैराँ है ॥ नादान को भी कहता हूँ मैं वह इन्सा है । ये अक्ल है मेरी और यह फहम कहां है । कहै बनारसी हर मिसरा मेरा कुरां है । जहां खुदा है मस्तों का दिल सदा वहां है ॥ ४ ॥

चलते चलते थक गई यह मेरी गिंडुलिया । ला मकां

समझकर फिरे यारकी गलियाँ॥ आसमा समझकर जमीन पे खाक
 उड़ाई॥ और ऐस समझकर करता फिरागदाई॥ लै लावन करमजनूं
 की सूरत पाई । इज्जत को समझ कर उठाली अबखं सवाई ॥
 मन्सूर जानकर अपनी जान गँवाई । दीदारके खातिरदारपै
 करी चढ़ाई ॥ सुखमाना मैंने दुखी जो मेरी नलियाँ । लामकां
 समझकर फिरे यारकी गलियाँ ॥ १ ॥ गुलजार समझकर खार
 ज़िगरपरखाया । राहत को समझ हर रँजो अलम उठाया ॥ हँसने
 को समझ रोनेका तार लगाया । औ सब किया तो अपना
 दिल घवराया ॥ नजदीक समझकर बड़ी दूर फिर आया ।
 पाया तो जहाँ में अपना ही आया पाया ॥ ठोकर से पाँव की
 टूटी सबी अंगुलियाँ । ला मकां समझकर फिरे यारकी
 गलियाँ ॥ २ ॥ कावे को समझकर बैठे बुतखाने में । बस्ती
 को समझ जा पहुँचे बीराने में ॥ जुल्फों को देखकर उलझा
 दिल शाने में । बातें जो सुनी तो पड़गये गम खाने में ॥
 ज़िन्दगी समझली अपना ज़िजाने में । वहदत को समझ
 मुलपीरी पमौन में ॥ गिर पड़े दौड़ कर दिल को हुई
 तलमलियाँ । ला मकां समझकर फिरे यारकी गलियाँ ॥ ३ ॥
 मय समझ के पीने लगे अस्करो रोके । और होश समझ
 बे होश रहे हम सोके ॥ समझे थे नफा अब बैठे गाँठ को
 खोके । बे बोझ हुए सर पर पत्थर ढोढों के ॥ इकताई
 हासिल हुई भरोसे दोके । कहै बनारसी यह ख्याल खुशी
 हो होके ॥ उम गुलके वास्ते उठाली सब बेकलियाँ । लामकां
 समझकर फिरे यारकी गलियाँ ॥ ४ ॥

जो दिलवर का बेटे की तरह मुँह चूपे । उस आशक के

संगसारी खुदाईघूमें ॥ जिसजा देखे जलबये खुदाई देखें ।
 माशककी अपना करके भाई देखे । तन बदन से उसकी खूब
 सफाईदेखे । सिरशे ओ पैरतक सब रानाईदेखे । कभी देखे
 वस्त्र और कभी जुदाई देखे । हरसूरत से उसकी इक ताई
 देखें । जो उसका जलवा कोई देखे हरसूमें । उस आशक के
 संग सारी खुदाई घूमें ॥ १ ॥ जानी को अपनी जानसे ज्यादा
 चाहै । प्यारे को अपने प्राण से ज्यादा चाहै ॥ दोनों दुनिया
 ईमानसे ज्यादा चाहै । उससनम को इस जहान से ज्यादा चाहै
 वेदऔर पुराण कुरान से ज्यादा चाहै । हर तीरथके स्नानसे
 ज्यादा चाहै ॥ करइश्कमहकता रहे गुलाफी बूमें । उस आशक
 के संग सारी खुदाई घूमे । १ । जिसजापर देखे उसके नरको
 देखे । चाहेपरीको देखे चाहै हूरको देखे ॥ जामये मुहब्बत के
 सुकूरकोदेखे । वोआशकतो फिर बड़ी दूरको देखे ॥ जो अपने
 दिलमें उस जुहूरको देखे । वह खुदाको देखे ओ गफूरको देखे ।
 वोहीमुमल्मीनपें वोही देखेहिन्दूमें । उस आशकके संगसारी खु-
 दाई घूमें । ३ । गर आशकहोतो हकका मस्तानाहो । दीवानों
 को जो पढ़ेतो दीवानाहो ॥ लौलगा वहांपर जहां में वहजाना
 हो । जानाहो जहाँफिर वहांसे नहिं आना हो । एदेवीसिंह
 तेरासखुन आशकानाहो । वह समझे हमेजो कोई शख्स
 दाना हो ॥ गर दिलको फँसाये उसके कपा अबल में ।
 उस आशिक के संग सारी खुदाई घूमें । ४ ।

तूजिस्माजिगर और जान नहीं जानाना । फिर क्यों
 नहीं कहता खुदा जो तू है दाना ॥ किरने तुझको बांधा है
 बनाजो बंदा । और कौन पेचका पड़ा है तुझ पर फंदा ।

तू अपने आपको देखनहो मतिमंदा । है कौनसी वहवदबू जो हुआ तू गंदा ॥ गरतूने अपनेतई जिस्मनहिं जाना । फिरक्यों नहिंकहता खुदाजो तू है दाना ॥ १ ॥ यहहाथ पांव औ सर भी नहिं कुछतू है । सीना और बाजूपरभी नहीं कुछतू है ॥ जनखा औरत औरनरभीनहीं कुछतू है । जिनदेव परी पैकर भी नहीं कुछ तू है ॥ तू अपने बीचमें आपी आप समाना । फिरक्यों नहिंकहता खुदाजो तू है दाना ॥ २ ॥ रोना और तड़पना आह नहिंकुछतू है । मुंह जबांवाप बल्लाह नहीं कुछ तू है ॥ काबा किवलादरगाह नहीं कुछतू है । और हरामकीभी राह नहीं कुछ तू है । मसजिद भी नहिं बनाहै नहिं बुतखाना । फिर क्यों नहिं कहता खुदा जो तू है दाना ॥ ३ ॥ तकदीर और पेसानी भी तू नहिं है । आतिश और हवा गिलमानी भी तू नहिं है । अर्वाह और गिलमानी भी तू नहिं है । इस जिस्मकी जरा निशानी भी तू नहिं है ॥ यह बनारसी का समझ सखुन मस्ताना । फिर क्यों नहिं कहता खुदा जो तू है दाना ॥ ४ ॥

चश्मों में भरोहरंग गुलाबी गुलका । अशकोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ यह आंख मेरी बहदत का पैमाना है । अब इसीको हमने समझा मयखाना है ॥ चश्मों से ज्यादा कोई न मस्ताना है । देखेतो इसमें क्या रंग स्याना है ॥ है भ्रानशा आंखों में आलम कुलका । अशकों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ १ ॥ जब चुवेंगे आंश मेरे चश्म गिरयांसे । समझ के हम पीवेंगे इन्हें दिलजांसे ॥ मैखोरीका नहीं लेंगे नाम जबांसे । रोरोके पियेंगे अशक लबेविरियांसे ॥ हिचकियांसे मेरे होगा शोर कुल कुल का ॥

अशकोंको पियेंगे काम नहिं कुछ मुलका ॥ २ ॥ बादाम
भी ये हैं नरगिस के प्याले हैं । देखा मैंने यह पूरे मतवाले
हैं ॥ यह नयन हमारे गुलशन गुल्लाले हैं । मैंके इनमें भररहे
नदी नाले हैं ॥ जब चाहे खुमके खुन्दम में दे डुलका । आ
शकोंको पियेंगे कामनहीं कुछमुलका ॥ ३ ॥ उस परी का आ-
लम आंखोंमें छायाहै । इस बादेकशी से अब दिल घव-
रायाहै ॥ मैंसे ज्यादा अशकों में मज्जापाया है । मज्मून यह
देवीसिंहने नया गाया है ॥ हैं यही सखुन आशक सादिक
बुलबुलका । आशकों को पियेंगे कामनहीं कुछ मुलका । ४ ।

साकिया पिला सागरे दीद उसमुलका । वहदत हो जिसमें
भरा बस्ल तुझगुलका । अबमये मुहव्वत आकर मुझे पिला
दे । औरजामत अपनी दीदका मुझे पिलादे । दिल से दिल
अपने जिगरसे जिगर मिलादे ! दीदार की दारुसे तू मुझे
जिलादे ॥ गुलहो गुलशनमें मचे शोर कुलकुलका । वहदत
हो जिसमें भरावस्ल तुझगुलका । १ । शाके शराब का भर
कर पैमाना ला । इश्कका सुराही हाथ में जाना नाला ॥
मैंपिला मुझे उसनूरका मैंखानाला । गुलशनमें गुलाबी रंग
तू शाहाना ला ॥ मालूम हालहो नशे में आलम कुलका ।
वहदतहो जिसमें भरा बस्ल तुझ गुलका । २ । मैं तुझे
पिलाऊं तूमे मुझे पिलादे । जब लुत्फ इश्कका खूब खूब
दूआये । मैंकहूं औरदे तूभी यही फरमाये । वह बात हो
जिसकी बात न कोई पाये । कुदरत का कराबा मेरे जाम
में डुलका । वहदत हो जिसमें भरावस्ल तुझ गुलका । ३ ।
शीशे दिलमें भरदे तू मेरे अंगूरी । इस लिय दिलकी होवे
दूरकदूरी ॥ वह जल्वा अपना दिखाये मुझको नूरी । कहैं

बनारसी दिल्ली मुराद हो पूरी ॥ मैपीकेचहकतारहै यहदि-
लबुलबुलका । वहदतहो जिसमें भरा वस्तुतुझगुलका ॥ ४ ॥

बिन पिये जहांके बीच जिऊं मैं कैसे । भरदे प्याला लव
रेज साकियामैसे ॥ मैं वहदतका मुस्ताकहूं यकमुद्दत से । वा
किफहूं मैं कुछमलानोंकी आदतसे ॥ जिस वक्त नशासरसार
हुआ शिद्दतसे । बेहोशहुआ इसदुनियांकी विदतसे ॥ हरव-
क्तजवांसे कहा कछुमें ऐसे । भरदे प्याला लवरेज साकिया
मैसे । १ । शोलये नूर दिलमें मेरे भवकेहै । अशरत की मैं
हरदम उसमें टपके हैं ॥ लौलगीहै और दिल उस लौमें लपके
हैं । इसनशसे अबकब आँख मेरी झपकेहै ॥ आती है यही
आवाजहर जगह नैसे । भरदे प्याला लवरेज साकिया मैसे
। २ । मालूम हुआ मैं मौतकी यहदारुहै । हर गुलोंकी रूहें
खिंचीहैं वहगुलरूहें । रिन्दानोंकी महफिल में यहीमहूरु है ।
और इससे बहतर नहीं कोई खुशबू है ॥ तू पिलादे मुझको
यार बन पड़े जैसे । भरदे प्याला लवरेज साकिया मैसे ॥ ३ ॥
एकरोज सामने मेरे मोहित सिब आये । बोले मैं पीना
कौन तुझे सिखलाये ॥ औ देख कदावे मैंके वह घबराये ।
बोले मैंके यह क्या खुदाने नहीं बनाये ॥ फिर कहने लगे
मोहित सिबभी मुझसे ऐसे । भरदे प्याळा लवरेज साकिया
मैसे ॥ ४ ॥ बीनो रबाव मिरदँगकी तय्यारी हो । मीनेमें मी
नेकी भीनाकारी हो ॥ गुलपास में बैठे हों औ गुलजारी हो
कहै बनारसी उस वक्त वह मैं जारी हो । हर वक्त राग फिरब
जाकरे इस लैसे । भरदे प्याला लवरेज साकिया मैसे ॥ ५ ॥

आतही इश्कने यही मचादी होळी । वह आतिश और

तनफूसजलादीहोली ॥ चश्मोंसेवरसने लगाखुनरंग पानी ।
 औरइश्कभी करने लगावह ऐंचातानी ॥में हँसूंतो गाली देय
 मुझेदिलजानी । औरलोगबजावेंतालिसुनोंकहानी ॥ नहीदेखी
 थीसोमुझे दिखादीहोली । वह आतिशऔर तनफूसजलादी
 होली । १ । गमकेगुलालने ऐसीधूनउड़ाई । अबसिवाखुदाके
 कुछनहिंदेयादिखाई ॥ तनबदन में जीतेहीजी आगलगआई । जो
 होनीथीसो होली मेरे भाई ॥ शावासइश्कने खूबलगादीहोली
 आतिशऔर तनफूस जलादीहोली । २ । जिसवक्तवहआया
 दिलमेंइश्क रंगीला । थाचेहरेका रंगलालसो पडगया पीला ॥
 और जामा जोथा खिंचा वह होगया ढीला ॥ इसपर भी
 दोस्तोंने करदिया यह गीला । हजरत इश्कनेमुझे खिला
 दी होली । वहआतिश और तनफूस जलादी होली । ३ ।
 दिल तड़प तड़प कर अपना नाच दिखाये । यह इश्कन
 अपनी कुछ खातिरमें लाये ॥ दिन आदआहकर शोर और
 धूम मचाये । परइश्कनइसकी मुतलकसुनेसुनाये ॥ लो सुनो
 दोस्तो तुम्हें सुनादी होली । वह आतिश और तनफूस ज-
 लादीहोली । ४ । ठगगयेइश्ककोकवीरगातेगाते । जिसकोदे
 खावह आये ढोलबजाते । कोई शिरपरडाले खाककोई चि
 लाते । कहै बना सीहम इश्कमें है रंगराते ॥ जोहकुल्लार्थी मेरे
 गादी होली । वह आतिशऔर तन फूस जलादीहोली ॥ ५ ॥

हम तेरे इश्कमें यार बहुत दिन भटके । अब मिला सनम
 तू हमें खुले पट घटके ॥ कई बारगया सर तेरे इश्कमें कटके
 फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके । किये रंज अलम
 मंजूर जरा नहीं टटके ॥ दिलकी दहशत सब निकल गई

छटछटके । कई लाख वजहके दियेहैं तुनेभटके ॥ अबमिला
 सनमतूहमें खुलेपटघटके ॥ १ ॥ जिसवक्त तेरी वह जुल्फनागि
 नीलटके । कोई घरसे होजाय उधर उधरसे चटके । गर देखो
 कालानाग तोशिरकोपटके । चढ जाय जहर जुल्फोंकावहधर
 थोसटके ॥ हमआशकहैं मजबूतकहांजांय हटके । अबमिला
 सनम तूहमें खुले पटघटके । २ । लैला से लगाया दिलमजनू
 नेडटके । तनबदन भला सब कांटउसीसे अटके ॥ सूली पर
 चढ़ापन्सूर उसीपरमटके । नहीं जरा नोंक सूलाकी जिगर में
 खटके ॥ देखाजो तुझे दिलगया जहां से फटके । अबमिला
 सनमतू हमें खुले पटघटके ॥ ३ ॥ जबखुलेकिगाडे यारकपटके
 पटके । दिल में पायेदीदार वह बंशीबटके । शिर मोरमुकुट
 कटिकसे जरीकेपटके ॥ कहैं देवीसिंह हैं अजब खेल नटखटके
 कहैं बनारसी हम आशक नागरनटके । अब मिला सनम
 तूहमें खुले पट घटके । ४ ।

सखियों से कहै यह बात कृष्णहोलीमें । चोरीसे कुम-
 कुमेधरे हैं क्यों चोली में ॥ कुझरंग इनमें है भरा या ये खा
 ली है । योहंसके बातयह पूछत बनमाली है ॥ तब सखियां
 भी हँसकरदें ताली हैं । वह गालीदे जो कुछ भोली भा-
 ली हैं ॥ कहैं कृष्णभरेदैं गुलालया रौली में । चोरी से कुम
 कुमेधरे हैं क्यों चोली में । १ । यह कहकर अपनी कृष्णने
 भुजा बढ़ाई । तब सखियों ने कुच अपने लिये चुराई । मनमें
 कुछ ऊपरसे कुछ बात बनाई ॥ चित चाहै लज्जासे दियो
 हाथ हटाई । यही कृष्ण कहै हँस हँस ब्रजकी बोली में ॥
 चोरी से कुमकुमे धरे हैं क्यों चोली में ॥ २ ॥ कहैंसखीकृष्ण

अब हमको मतील जाओ । चितचोर हो तुम क्यों हमको चारे
बनाओ । नितचोरी करकरके दधि माखन खाओ । अब बर
बस क्यों अँगिया में हाथ लगाओ ॥ स्याने हो पै बेलो हो
बतियां भोली में । चोरी से कुमकुमे धरे हैं क्यों चोली में ॥ ३ ॥
यह सुनी बात तब हँसे नन्द के लाला । बंशी ये बजाके तान
में जादू डाला ॥ लग गई गले से आप सकल ब्रजवाला । कहें
देवीसिंह मैं जपूनाम गोपाला ॥ कहें बनारसी कुछ गोल है इ-
स गोली में । चोरी से कुमकुमे धरे हैं क्यों चोली में ॥ ४ ॥

हर जगपै देखा कहीं नहीं तू देखा । जहां याद है तेरी
वहीं वही तू देखा ॥ गये बहिस्तमें हम वहां न तुझको
पाया । बुतखाने में भी नहीं नजर तू आया ॥ काबा कि बला
मक्कामसीत हुँदवाया । काशी मथुरा में बहुत दिनों भर-
माया । जा जाकर गंगासागर सिन्धु नहाया । मैं तेरे
इश्क में चारों तरफ उठवाया । नहीं हमने प्यारे और कहीं
तू देखा । जहां याद है तेरी वहीं वही तू देखा ॥ १ ॥ ज-
गल बस्ती सब सब उजाड़ हमने खाना । नहीं देखा तुझको
देखा सबीजमाना । कोई भतवाला कहता है कोई मस्ताना
जो जो कुछ जिसने कहा वह हमने माना । कूबकू फिरे दर
दरका हुआ दिवाना । नहीं पाया प्यारे तेरा कहां ठिकाना ।
अब याद करी तो दिल में यही तू देखा । जहां याद है तेरी
वहीं वहीं तू देखा ॥ २ ॥ शिर पटकपटक कर पहाड़ पर देमा
रा । और आह आह कर करके बहुत पुकारा । देखा देवलदेहरा
और ठाकुरद्वारा । सर तापा सबको देख देख कर हारा ।
घरबार तजा आलम से किया किनारा । जैसी कुछ गुजरी

बस है किया गुजारा ॥ यह बातें हम को याद रही तू देखा । जहाँ
याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ ३ ॥ सब देखा हमने गुलश-
न और गुल्लाला । बन फकीर बनबन फिरा पाहिन बनमा-
ला ॥ देखा पत्तापत्ता और डाली डाला । हैं सब में तू और सब
से रहें निराला ॥ यह बनारसी का कलाम रस का ढाल हो
अरज मेरी यह सुनो नन्दके लाला ॥ तुझ दिलवर पर आशक
हूँ यहीं तू देखा । जहाँ याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ ४ ॥

इश्क हजरत ने की हमपै मेहरबानी । करुं मैं क्या क्या
महेमानी ॥ नजर देने को दिल अपना मैं लाया । इश्क के
बहुत पसंद आया ॥ इश्क ने मेरा जब लखते जिगर खाया ।
तो मैंने और भी बतलाया । खून आशक का यह है ताजा
पानी । पीजिये इश्क मेरे जानी ॥ १ ॥ अश्क गौहर का जब
गले हार डाला । इश्क ने कहा ये है आला ॥ चशमपै भर भर
कर वह गुलाला ॥ इश्क के तई दिया प्याला ॥ बन पड़ी
मुझसे जा कुछ कि कदरदानी । इश्क की सबी बात मानी ॥ २ ॥
जिगर पर मेरे जो थे उलफत के मार । दिखाया इश्क का वह
गुलजार ॥ और सीने पर गुलखाये कई हजार । दिखाई
इश्क के तई बहार ॥ मालेजर सारा देकर के यही ठानी ।
किया तन अपना उरयानी ॥ ३ ॥ और एक तोफा जो थी सब
में भारी । जान होती सब छो प्यारी ॥ इश्क के ऊपर वह
भी मैंने बारी । नजीर देने से हुआ आरी । कहूँ मैं इसके
आगे अब क्या बानी ॥ इश्क के हाथ जिन्दगानी ॥ ४ ॥ कि
मैं हूँ आशक है इश्क मेरा सरदार । हम हैं उसके फर्माबर-
दार ॥ बजुज आशकी के कुछ और न मेरा कार । इश्क के

सिवा न कोई यार ॥ कहै देवीसिंह है बनारसी ज्ञानी ।
हरैक छन्द जिसकी ककानी ॥ ५ ॥

भेदकोई बुतोंका क्या पावै । पाक मुहब्बत करों तो जल-
वे खुदानज़र आवै ॥ अगरये चाहै कर दिलसंग । तू कर दि
ल्होमोम तो फिर यह हो जायँ तेरेसंग ॥ यह लेके तेगकर
बौरंग।तू दे सिरको झुका तो फिर देखे उल्फतका रंग ॥ यह
है गरसमा तो तूहो पतंग । लगादे लौं में लौं अपनी मतरख
इसदिलकातंग ॥ दोहा ॥ अब्बलतौ यह जलाजलाकर क
हैं तुझे ताजीर । फिरपीछे हो रोशन तेरा नामबने अकसी
र ॥ तूमत इसदिलमें घवरावे । पाकमुहब्बतकरो तो जलवे खुदा
नज़रआवे ॥ १ ॥ यहदिलबरहै मेरे दिलके । खुदामिला पीछे
हमको पहले इनसे मिलके ॥ हालसुन इस दिल बिस्मिलके
कतलहुये तो भी शिकवे नहींकिये उस कातिलके । यह गुल
सबवने आबेगिलके । अब्बलथे गुँचेसे गुलहुवे खिलखि-
लके ॥ दोहा ॥ बाग इश्कमें अयदिल बुलबुल गुलोंकी देख
बहार । खार अगवै चुभेंतो उन कांटों पै आसनमार ॥ वही
फिरगुलशन होजावै । पाकमुहब्बत करो तौ जलवे खुदा न
ज़रआवे ॥ २ ॥ वहहै जुल्फोंसे जहर इनके । इसे जहरमत
समझ यही है लहर बहर इनके ॥ लगेहैं वोवो इतर इनके ।
हरैकतरावट से बहत्तर रहेंगे सूरतइनके । पेंचमेंपड़े अगार इ-
नके । हरैक फन्दसे बाफिक होवे वोही मगर इनके ॥ दोहा ॥
जिसका दिल दिलदारकी जुल्फों में बिखरे । देखेबिखरे बाल
निरख कर तो ये दिलनिखरे । वोही उलझावै सुलझावे ।
पाक मुहब्बत करो तौ जलवे खुदा नज़र आवै ॥ ३ ॥ इनके

अजब कटाले नैन । कर चोटपै चोट बनहैं गजब चुटाले
 नैन ॥ बुतोंके खेल खीलै नैन । काले गोरे लाल रंग में
 रंगरंगाले नैन ॥ बहुत रस भरे रसीले नैन । सबके ऊपर
 इनकी नोकहैं यहहैं नुकीले नैन ॥ दोहा ॥ जो कोई इनको
 पाक निगहसे देखे आशक आन । उन्हें दिखाई इन्हीं
 बुतोंमें देवै उसकीशान ॥ रूप वह अपना दिखलावे । पाक
 मुहव्वत करो तो जलवे खुदा नजर आवै ॥ ४ ॥ जिसने
 इन बुतोंको जाना है । उसीको जाना मिलाहुआ जिसकावहां
 जानाहै ॥ इनका लामका ठिकाना है । वहांसे उतरा नूर
 वह इनके बीच समाना है ॥ सखुन मेरा आशकाना है । जि
 सने सुनाइतकादसे वह आशक मस्तानाहै ॥ दोहा ॥ समझ
 आशकोंकी रमजें और कर दिलको हाशियार । देवीसिंह
 यों कहै हुआ तौहीद खन्द तैयार ॥ पारफत बनारसी गावै ।
 पाक मुहव्वत करो तो जलवे खुदा नजर आवै ॥ ५ ॥

आनके हमने देदी अपनी जान तुम्हारे कूचे में । जान
 भी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ मार मार
 करते हैंगे सुयेमार तुम्हारे कूचे में । वारकरे लेकर अबरू
 तलवार तुम्हारे कूचे में ॥ मिजअकी नोकोंसे हुई दारनादार
 तुम्हारे कूचेमें । हरेक बजे के यार चले हाथियार तुम्हारे
 कूचे में ॥ मान न मुतलक रहा अरमान तुम्हारे कूचे में ।
 जान भी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ १ ॥
 जाल जुल्फका बिछाहै वह जंजाल तुम्हारे कूचे में । बाल
 देखकर दिलको हुआ बबाल तुम्हारे कूचे में ॥ लालल-
 बोपर सदके करदूँ लाल तुम्हारे कूचे में । कितने माल
 वाले होगये पामाल तुम्हारे कूचे में ॥ बान आपकी यही

चले नितवान तुम्हारे कूचे में । जानभी बाकी नहीं रही.
दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ १ ॥ यादमें दिल बुलबुलहै फँसा
सैयाद तुम्हारे कूचे में । दाद न उसको मिली रहा बेदाद
तुम्हारे कूचेमें ॥ शाद करो आशक को यह नाशाद तुम्हारे
कूचे में । बादमर्गके लाश नहो बरताद तुम्हारे कूचे में ॥
तानपै तेरी फिदाहै हिन्दुस्तान तुम्हारे कूचे में । जानभी
बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचेमें ॥ ३ ॥ नाम बहुत
सा हुआ मेरा बदनाम तुम्हारे कूचेमें । रामराम कहताहूँ कब
हो आराम तुम्हारे कूचे में ॥ आमहै आशक बनारसी सरे
आम तुम्हारे कूचेमें । इम्भी होगये श्याम आके घनश्याम
तुम्हारे कूचेमें ॥ ध्यान लगाके करते हैं मध्यान तुम्हारे कूचे
में । जानभी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ ४ ॥

गरचे इश्कमें रंज होवै तो कोई इसका नाम न ले
आशक बोहै रंजके सिवा कहीं अराम न ले ॥ लाखों
सदमे सहे जिगरपर जबां से निकले आह नहीं । चाहने
वाले, रंजके सिवा किसी की चाह नहीं ॥ गममें खुशी
होवे सोई आशक । दिलसे दूर हो दाह नहीं । सिवा इश्कके
दूसरी तरफ को करे निगाह नहीं ॥ जोकि लुत्फ है रंजमें
ऐसा मज़ा कोई बल्लाह, नहीं । वह क्या जाने जो इसकी
लज्जतसे आगाह नहीं ॥ जफाको समझे वफा अलमको
छोड़ और कोई काम न ले । आशक वहहै रंजके सिवा कहीं
आराम न ले ॥ १ ॥ जिसने इश्क को चाहा उसने गमखा-
ना इस्त्यार किया । सरपर आरे चलें इस परभी नहीं इन्कार
किया ॥ आशक उसीका कहि ये जिसने जानोमाल निसार

किया । दाग इश्कसे जिगर सीना अपना गुल्जार किया
 दममेंदमको दम करकर अपने दमको दमदार किया । जिगर
 जलाया तो उससे रोशनादिल दिलदार किया ॥ जफाको स-
 मझे वफा अलमको छोड़ और कोई काम न ले । आशक
 वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ २ ॥ दर्जाइश्कका
 हुआ रंजसेगरइसमें कुछ रंज न हो । फिर कोई इसकोकरै
 क्यों वह जवाब तुम हमको दो ॥ आशक था मंसूर दारपर
 चढ़ाजान अपनी दी खो । लुत्फ उठाया इश्कका रंजको
 राहत समझाजो ॥ आहइश्कने कियेहैं क्याक्या सितम कहूं
 मैं क्या इसको । गमके दरियामें जिसने लाखोंई आशक
 दिये डुबो ॥ मुझसे भी कहताहै कि तू अब चैन सुबहऔर
 शाम न ले । आशक वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले
 ॥ ३ ॥ मज्ना इश्कका रंजमेंहै गरइसमें रंज नहीं होता । फि-
 र कोई आशक अश्क अपने से मुँह क्योंकरधोता ॥ क्योंमर-
 ता शीरी पै कोहकन और मजनंक्योंकररोता । अपनेसरका
 हाथसे वह सरमदभी क्यों खोता ॥ बनारसी गर मज्ना न
 पाता तुरुम मुहब्बत क्यों बोता । बहरे इश्क में लहर देखी
 तोफिर मारा गोता ॥ मैं सलाम करताहूं रंजको चाहेवह मेरा
 सलाम न ले । आशक वहहै रंजकेसिवा कहीं आराम न ले ॥ ४ ॥

गमे इश्कमें मरगये हम तिसपर भी नहीं यह गमनि
 कला । आहसे आतिश लगी खामोशहुए तो दम निकला
 जब्तकरुंगर आह सोजांकोतोदिलवेताबदोवे ॥ आहकरुं
 जो जिगर जलभुन के मेरा कबाब होवे । यूंभी मरे औं यूं
 भी मरे किसतरह से दिलको ताबहोवे ॥ इश्क सनमने किया
 आज्ञाद यह उसे सबाब होवे । क्या ताकत अगर उसके
 रूबरू जवांसे मेरा जवाब होवे ॥ जो चाहे सो करो अब

उसका भला शिताब होवे । लाखों सदमे सहे परमेरे दिलसे न
रंजो अलम् निकला ॥ आहसे आतिशालगी खामोश हुये तो द
म् निकला ॥ १ ॥ कभी तो गमसे घबराकर सहारा की तरफ को
चलते हैं । कहीं बैठकर हम अपने कफे दस्तको मलते हैं ॥ गमसे
निकला चाहें तो बस दमसे अभी निकलते हैं । हम हैं आशक
हमेशा गमी में फूले फलते हैं ॥ शोलेनूर समाया इस दिलमें
तौ हम भी बलते हैं । दिलको रोशन किया इस सबबसे इसमें
जलते हैं ॥ आशिक सादिक जानके मुझपर करने इश्क सित
म् निकला । आहसे आतिशालगी खामोश हुये तो दम् निक-
ला ॥ २ ॥ हम आशक हैं इश्क के गमखाना और खुने दिलपी
ना है । जहाँ पै देखा वहाँ आशकका यही करीना है ॥ आह
करूं तो जिगर जले चुपरूं तौ धड़के सीना है । कहो क्या करें
हुआ मुश्किल अपना जीना है ॥ सूलीपर मन्सूरने अपने खून
से लिखा सफीना है । मौत नहीं है दार यह यार के घरका
जीना है ॥ अनअलहक कहने से देखने मुझको मेरा सनम्
निकला । आहसे आतिशालगी खामोश हुये तो दम् नि-
कला ॥ ३ ॥ इश्क नहीं आसान बहुत मुश्किल इस इश्कका
करना है । दिलको देना मौल गम लैना और दुख भरना
है ॥ और किसीका खौफ नहीं बस सिर्फ उसी से डरना है ।
यहां जो बिगड़ा हुआ फिर उसका वहां सुधरना है ॥ देवी
सिंह यह कहे इश्क में जीते ही जी मरना है । इस दिल ऊपर
वही गुजरेगी जो कि गुजरना है ॥ बनारसी सर कफे द-
स्तपर धरकर साहे अदम निकला । आहसे आतिश
लगी खामोश हुए तो दम् निकला ॥ ४ ॥

वोनूरे रोशन कमरसे बहतर तबक तबकपर खिला उजाला ।
 क्या ताबो ताकत गर उसको देखे मेरा वो दिल्वरहै सबपै बा-
 ला । वो जुल्फ उसकी अगरचे देखे तो पेंव खाये चगनमें स
 मबुल ॥ हरेक बलम है उसकी छलबल वो दामे उल्फत है उ
 सकी काकुल । वो गेसू उसके तो सुशकवी है गोया गुलि
 स्तांमें सोसने गुल ॥ याह वो अवरें सिया फूलक पर याहें आ
 यत कुरान बिलकुल । फँसा है उसमें यह तायरे दिल अजी-
 बफंदाहै मुझपैडाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे मेरा
 वो दिल्वर है सबपै बाला ॥ १ ॥ है नौ जवानी में वो पेसानी
 और उसका माथा मेहरसे रोशन् । वो चीने उसकी किरन ह
 खुरका चमक दमक में कमरसे रोशन् ॥ और बी सफाई ह-
 स्नेखुदाई हरेक जिन और बसरसे रोशन् । और वो पसीना
 गोया नगीनाहोकरआबे गौहरसे रोशन् । सुनीहै उसकी सिफत
 यह जिस्ने भुकाके माथा जमी पै डाला ॥ क्या ताबो ताकत
 गर उसको देखे मेरा वो दिल्वरहै सबपै बाला ॥ २ ॥ वो दोनों
 अबरू भुकेहैं उसके गोया कमां यकताहै खिंचीभी । और
 तीर मिजगां चढे जिसपर नज़र यह किस पर अब है कहर
 की ॥ अगर खफा होकर उस सनमने ज़राभी अपनी वो भौं
 सकोड़ी । तो गिरपडे लाखों सर ज़मीं पर लगी न एक
 पलभी उसमें देरी ॥ या हैं वो देगे दुदम चमकते या खं
 जरे बुरीहै निकाला । क्या ताबे ताकत गर उसको देखे
 मेरा वो दिल्वरहै सब पै बाला ॥ ३ ॥ वो चस्म आहू अगरचे
 देखे तो आंखहरागिज़ न हो मुकाबिल । और सरझुका
 कर खड़ाहो नरगिस उसीकी आंखों पर होके मायल ॥ व

खुनी नैना औं टेढ़ीचितवन पड़ेजिधरको तो क्या हो हासि
 ल । कोईहो मुरदा कोई तड़फता कोई सिसकता औरकोईवि
 स्मिल ॥ वोमस्ते दोनों पिये हुयेमें भरे नशेमें लिये हैं प्याला ।
 क्या तावो ताकत गर उसको देखे मेरावो दिल्वरहै सबपै वा
 ला ॥ ४ ॥ वो बीनी उसको अलिफकी सूरत जो उसको देखके
 है वो अल्लाह । फड़क वो नथुनोंकी इसकदरहै कि दिल तड़
 पताहै मेरावल्लाह । लभावशीरीमें है वो लज्जत कि होठ चाटे
 हरैकशैदा । हैबातैभोली और वो ठठोली ना ऐसीबोली कहीं
 होपैदा ॥ सुने अगरचे जो गोशकरके वो उसके बातोंकी फे-
 रेमाला । क्या तावो ताकत गर उसकोदेखेमेरा वो दिल्वर है स
 बपैवाला ॥ ५ ॥ कभी अगरचें वो हँसके बोले लौं चमके उस
 गुलके ऐसे ददां । जिगरगौहरकाछिदे जो देखे और दांत पी
 से लाले बदखशां ॥ यह सिफतसुनतेही खूनसूखा बिकावेक
 दर जहांमें मिरजां । औं बर्क ऐसागिरी तड़फके बेहोश उ-
 सकाहुआपरेशां ॥ बयां कछुं क्या दहनकों उसके हुआतंग
 दिल न बोला चाला । कथा तावोताकत गर उसको देखे
 मेराबह दिल्वरहै सबपैवाला । ६ । यह फकत चेहरेकी एक
 सिफतहै जो अल्क अपनी में कुबथा आया । बयां वहमैने
 किया जबांसे पै भेद उसका ज़रा न पाया । कोई कितानें
 बनाके थक गये किसीने सीखा किसीने गाया । हजारों
 मुल्ला करोड़ों स्याने कोई इन्तहा न उसकी लाया । फजल
 उसीका हुआतो देखा बनारसीने वोबारीताला । क्यातावो
 ताकत गर उसको देखे मेरावहादिल्वरहै सबपैवाला । ७ ।

अकबराबादके बीच मण्डवी जिवनी कीमे मेराधाम ।

हरिके भरोसे तहांमें अहरनिशा करता विश्राम ॥ राधाकृष्ण है
 नाम जहां लिखनेकाही करतानिष्काम । उदर हेतु ये यत्न
 करि मुखसे करता रामहिं राम । इसमें ही कहताहूं गुजारा
 जो विधनाने दीने दाम ॥ लाख यत्न कोईकरैतोउसे मिलै न
 हिं एकछदाम । और किसी से काम नहीं है विधनाको भजि
 आठोंयाम ॥ हरिकेभरोसे तहांमें अहर निशा करता विश्राम
 । १ । लिखनेका है पारश्रमजैसा करैसोई इसकोजाने । जा
 नते पाण्डित सभासद बड़ी काठिनता बखाने । पाण्डितजन
 के सिवा और नहीं कोई भी इसकोजाने । ऐसेभीनरबहुत हैं
 बिनासमझ अपनीताने । बिनइच्छा भगवतकी क्योंकर जा
 नेगा अक्षर का नाम । हरिकेभरोसे तहांमें अहरनिशा कर
 तो विश्राम । २ । सिन्धु फांदनासहज न समझे बड़ीकाठिन
 होसक्ताहै । हनुमान के सिवानहीं और कोईकहसक्ता है । जिस
 के तनपरै पीर वहीपीर सभी सहसक्ता है । क्याजाने कोई पीर
 औरकी जिसे तीर नहीं लगता है । जो कुछ विधना लिखीभा
 लमें ताविधिसे निबहै ये काम । हरिके भरोसे तहां में अहर
 निशाकरता विश्राम । ३ ॥ करकट ग्रीवा नयनशीशमुखनीचा
 करि दुख सहै सुजान । ये लक्षण हैं लेखक के पाण्डित जन
 करते हैं बखान ॥ जो कोई सज्जन सुने सुनावे सुन समझै
 मनमें रख ध्यान । परम दृष्टि से कामना तिनकी पुजवै श्री
 भगवान ॥ पढ़ो सकलहरि भक्त पियारे राधाकृष्ण करतापर-
 नाम । हरिके भरोसे तहां में अहर निशा करता विश्राम ॥ ४ ॥

❀ इति ❀

—:❀❀❀❀:—

